

विदेह VIDEHA

UPSC मैथिली (वैकल्पिक)

UPSC Maithili Optional

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड ५ / १६ · Volume 5 of 16

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह क्विज — लोरिक-विजय — मणिपद्म	१००० प्रश्न
२. विदेह क्विज — कृति राजकमल : आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि	१००० प्रश्न
३. मैथिली सर्वनाम आ क्रिया क्विज Videha QUIZ	५०० प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह क्विज — लोरिक-विजय — मणिपद्म

१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (D) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय

२. 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति

३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'लेखक-पहिचान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) बहेड़ा
- (C) १९१८-१९८६
- (D) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म

४. परीक्षा-उत्तरमे 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (D) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था

६. लेखक आ कृति-परिचयमे 'मणिपद्म'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) लोरिक-विजयक लेखक

७. 'मणिपद्म' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति

८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'उपनाम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) १९१८-१९८६
- (C) बहेड़ा
- (D) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म

९. परीक्षा-उत्तरमे 'मणिपद्म'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (B) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (C) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (D) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित

१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मणिपद्म'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (B) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (C) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

११. लेखक आ कृति-परिचयमे 'बहेड़ा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिक-विजयक लेखक
- (B) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित

१२. 'बहेड़ा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित

१३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'जीवन-परिचय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) बहेड़ा
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) मणिपद्म
- (D) १९१८-१९८६

१४. परीक्षा-उत्तरमे 'बहेड़ा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (B) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित

१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'बहेड़ा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (B) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (C) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (D) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान

१६. लेखक आ कृति-परिचयमे '१९१८-१९८६'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (B) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (C) लोरिक-विजयक लेखक
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

१७. '१९१८-१९८६' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा

१८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'जीवन-काल' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) १९१८-१९८६
- (C) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (D) बहेड़ा

१९. परीक्षा-उत्तरमे '१९१८-१९८६'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (B) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय

२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे '१९१८-१९८६'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था

२१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'नैका बनिजारा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

२२. 'नैका बनिजारा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (C) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (D) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा

२३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'सम्मानित कृति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) नैका बनिजारा
- (D) बहेड़ा

२४. परीक्षा-उत्तरमे 'नैका बनिजारा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (B) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (C) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'नैका बनिजारा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (C) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (D) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति

२६. लेखक आ कृति-परिचयमे '१९७३'क सही पहिचान की अछि?

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित

२७. '१९७३' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (C) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (D) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति

२८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'सम्मान-वर्ष' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) बहेड़ा
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) १९७३
- (D) मणिपद्म

२९. परीक्षा-उत्तरमे '१९७३'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (B) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे '१९७३'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (D) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान

३१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'उपन्यास'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) लोरिक-विजयक लेखक
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

३२. 'उपन्यास' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (C) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (D) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय

३३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'विधा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) उपन्यास
- (D) बहेड़ा

३४. परीक्षा-उत्तरमे 'उपन्यास'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (B) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (C) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उपन्यास'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (D) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा

३६. लेखक आ कृति-परिचयमे 'ऐतिहासिक उपन्यास'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (D) लोरिक-विजयक लेखक

३७. 'ऐतिहासिक उपन्यास' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति

३८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'विधा-स्वरूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (B) मणिपद्म
- (C) बहेड़ा
- (D) ऐतिहासिक उपन्यास

३९. परीक्षा-उत्तरमे 'ऐतिहासिक उपन्यास'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (B) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (C) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'ऐतिहासिक उपन्यास'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर

४१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'लोकगाथा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिक-विजयक लेखक
- (B) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (C) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित

४२. 'लोकगाथा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (B) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार

४३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'आधार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) बहेड़ा
- (C) मणिपद्म
- (D) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म

४४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकगाथा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार

४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकगाथा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (D) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान

४६. लेखक आ कृति-परिचयमे '१९७०'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (B) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (C) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (D) लोरिक-विजयक लेखक

४७. '१९७०' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (B) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (C) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (D) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष

४८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'प्रकाशन-वर्ष' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) १९७०
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) बहेड़ा
- (D) मणिपद्म

४९. परीक्षा-उत्तरमे '१९७०'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (B) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (C) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (D) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित

५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे '१९७०'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर

५१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिक-विजयक लेखक
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित

५२. 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था

५३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'प्रकाशन-संस्था' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (B) मणिपद्म
- (C) मिथिला सांस्कृतिक परिषद
- (D) बहेड़ा

५४. परीक्षा-उत्तरमे 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (C) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार

५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (B) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (C) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (D) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान

५६. लेखक आ कृति-परिचयमे 'कोलकाता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिक-विजयक लेखक
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर

५७. 'कोलकाता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति

५८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'प्रकाशन-ठाम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) बहेड़ा
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) कोलकाता
- (D) मणिपद्म

५९. परीक्षा-उत्तरमे 'कोलकाता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (C) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार

६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कोलकाता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था

६१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'मैथिली उपन्यास'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

६२. 'मैथिली उपन्यास' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (B) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (C) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (D) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय

६३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'साहित्यिक वर्ग' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मैथिली उपन्यास
- (B) बहेड़ा
- (C) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (D) मणिपद्म

६४. परीक्षा-उत्तरमे 'मैथिली उपन्यास'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (B) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (C) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (D) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा

६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मैथिली उपन्यास'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान
- (B) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (C) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर

६६. लेखक आ कृति-परिचयमे 'लोक-संग्राम'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) लोरिक-विजयक लेखक
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

६७. 'लोक-संग्राम' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष

६८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'थीम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) लोक-संग्राम
- (D) बहेड़ा

६९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-संग्राम'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर
- (B) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (C) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-संग्राम'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (B) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर

७१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'जन-नायकत्व'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (D) लोरिक-विजयक लेखक

७२. 'जन-नायकत्व' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत
- (D) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष

७३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'चरित्र-संकेत' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (B) बहेड़ा
- (C) मणिपद्म
- (D) जन-नायकत्व

७४. परीक्षा-उत्तरमे 'जन-नायकत्व'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (B) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत
- (C) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जन-नायकत्व'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (D) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत

७६. लेखक आ कृति-परिचयमे 'कोब्रागर्ल'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

७७. 'कोब्रागर्ल' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (B) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक
- (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (D) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय

७८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'रचना-सूची' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कोब्रागर्ल
- (B) बहेड़ा
- (C) मणिपद्म
- (D) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म

७९. परीक्षा-उत्तरमे 'कोब्रागर्ल'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (B) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (C) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक
- (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार

८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कोब्रागर्ल'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (B) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक
- (C) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर

८१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'कनकी'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) लोरिक-विजयक लेखक
- (D) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति

८२. 'कनकी' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष

८३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'रचना-सूची' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कनकी
- (B) बहेड़ा
- (C) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (D) मणिपद्म

८४. परीक्षा-उत्तरमे 'कनकी'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (C) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (D) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति

८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कनकी'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति

८६. लेखक आ कृति-परिचयमे 'अर्द्धनारीश्वर'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (B) लोरिक-विजयक लेखक
- (C) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति
- (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित

८७. 'अर्द्धनारीश्वर' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष

८८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'रचना-सूची' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) अर्द्धनारीश्वर
- (D) बहेड़ा

८९. परीक्षा-उत्तरमे 'अर्द्धनारीश्वर'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (B) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति
- (C) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार

९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'अर्द्धनारीश्वर'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति
- (C) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (D) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित

९१. लेखक आ कृति-परिचयमे 'लवहरि-कुशहरि'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिक-विजयक लेखक
- (B) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम
- (C) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम

९२. 'लवहरि-कुशहरि' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (C) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (D) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम

९३. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'रचना-सूची' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लवहरि-कुशहरि
- (B) मणिपद्म
- (C) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (D) बहेड़ा

९४. परीक्षा-उत्तरमे 'लवहरि-कुशहरि'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम
- (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा
- (C) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम

९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लवहरि-कुशहरि'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर
- (B) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था

९६. लेखक आ कृति-परिचयमे 'कंठहार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम
- (B) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित
- (C) लोरिक-विजयक लेखक
- (D) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति

९७. 'कंठहार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष
- (B) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति
- (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय
- (D) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति

९८. लेखक आ कृति-परिचयक अध्ययनमे 'नाटक' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मणिपद्म
- (B) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
- (C) बहेड़ा
- (D) कंठहार

९९. परीक्षा-उत्तरमे 'कंठहार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम
- (B) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति
- (C) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार
- (D) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा

१००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कंठहार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था
- (B) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति
- (C) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित
- (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर

१०१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'मौखिक परम्परा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (D) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया

१०२. 'मौखिक परम्परा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (D) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि

१०३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'परम्परा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) कथा-रूपान्तरण
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) जन-स्मृति

१०४. परीक्षा-उत्तरमे 'मौखिक परम्परा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (B) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (D) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार

१०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मौखिक परम्परा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना, पात्र आ संघर्षकें क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

१०६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'लोकगाथा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (D) लोककथ्यकें उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया

१०७. 'लोकगाथा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (D) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप

१०८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'कथ्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) जन-स्मृति
- (C) कथा-रूपान्तरण
- (D) मौखिक परम्परा

१०९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकगाथा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) लेखक द्वारा लोककथाकें नव साहित्यिक रूप देब
- (D) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध

११०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकगाथा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (B) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (C) घटना, पात्र आ संघर्षकें क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

१११. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'कथा-रूपान्तरण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) लोककथ्यकें उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (D) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा

११२. 'कथा-रूपान्तरण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) लोककथ्यकें उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (D) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार

११३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'रूपान्तरण' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथा-रूपान्तरण
- (B) लोकगाथा
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) जन-स्मृति

११४. परीक्षा-उत्तरमे 'कथा-रूपान्तरण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (B) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (C) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (D) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया

११५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कथा-रूपान्तरण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (C) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

११६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'जन-स्मृति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (D) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया

११७. 'जन-स्मृति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (D) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप

११८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'स्मृति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) कथा-रूपान्तरण
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) जन-स्मृति

११९. परीक्षा-उत्तरमे 'जन-स्मृति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (D) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध

१२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जन-स्मृति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१२१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'वीरगाथा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (D) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप

१२२. 'वीरगाथा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (D) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार

१२३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'गाथा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) कथा-रूपान्तरण
- (C) वीरगाथा
- (D) मौखिक परम्परा

१२४. परीक्षा-उत्तरमे 'वीरगाथा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (B) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब

१२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'वीरगाथा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (B) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (C) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

१२६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'लोकगायन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (D) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि

१२७. 'लोकगायन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (D) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप

१२८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'प्रसार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगायन
- (B) मौखिक परम्परा
- (C) लोकगाथा
- (D) कथा-रूपान्तरण

१२९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकगायन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (B) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब

१३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकगायन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (B) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार

१३१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'गाथात्मकता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (D) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा

१३२. 'गाथात्मकता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (B) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (D) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव

१३३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'शैली' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथा-रूपान्तरण
- (B) गाथात्मकता
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) लोकगाथा

१३४. परीक्षा-उत्तरमे 'गाथात्मकता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (B) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (C) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (D) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार

१३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गाथात्मकता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१३६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'ग्राम्य अनुभव'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (B) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (C) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (D) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा

१३७. 'ग्राम्य अनुभव' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि

१३८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'समाज' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथा-रूपान्तरण
- (B) लोकगाथा
- (C) ग्राम्य अनुभव
- (D) मौखिक परम्परा

१३९. परीक्षा-उत्तरमे 'ग्राम्य अनुभव'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (B) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (C) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (D) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब

१४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'ग्राम्य अनुभव'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

१४१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'लोक-इतिहास'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (D) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया

१४२. 'लोक-इतिहास' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (D) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध

१४३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'इतिहास' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) लोक-इतिहास
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) कथा-रूपान्तरण

१४४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-इतिहास'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (D) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार

१४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-इतिहास'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (C) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

१४६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (B) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (C) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (D) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा

१४७. 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (D) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव

१४८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'रचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) कथा-रूपान्तरण
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) सर्जनात्मक पुनर्निर्माण

१४९. परीक्षा-उत्तरमे 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (B) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (C) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (D) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध

१५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (B) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (C) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१५१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'कथ्य-संरचना'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१५२. 'कथ्य-संरचना' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (B) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (D) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव

१५३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'रचना-कला' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथ्य-संरचना
- (B) मौखिक परम्परा
- (C) कथा-रूपान्तरण
- (D) लोकगाथा

१५४. परीक्षा-उत्तरमे 'कथ्य-संरचना'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (B) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (C) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कथ्य-संरचना'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (C) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१५६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'लोकविश्वास'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार

१५७. 'लोकविश्वास' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार

१५८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'विश्वास' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथा-रूपान्तरण
- (B) लोकगाथा
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) लोकविश्वास

१५९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकविश्वास'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार

१६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकविश्वास'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (B) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (C) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (D) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब

१६१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'जन-नायक'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (C) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (D) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा

१६२. 'जन-नायक' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (D) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव

१६३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'नायकत्व' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) जन-नायक
- (B) लोकगाथा
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) कथा-रूपान्तरण

१६४. परीक्षा-उत्तरमे 'जन-नायक'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (B) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (C) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

१६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जन-नायक'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (C) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र

१६६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'सामूहिक संवेदना'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) लोकक साझा पीड़ा आ आशा
- (D) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा

१६७. 'सामूहिक संवेदना' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोकक साझा पीड़ा आ आशा
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (D) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव

१६८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'भाव' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा
- (B) सामूहिक संवेदना
- (C) मौखिक परम्परा
- (D) कथा-रूपान्तरण

१६९. परीक्षा-उत्तरमे 'सामूहिक संवेदना'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) लोकक साझा पीड़ा आ आशा
- (D) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार

१७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सामूहिक संवेदना'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकक साझा पीड़ा आ आशा
- (B) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (C) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१७१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'मिथिला-परिवेश'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (D) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया

१७२. 'मिथिला-परिवेश' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल
- (D) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव

१७३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'परिवेश' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथा-रूपान्तरण
- (B) लोकगाथा
- (C) मिथिला-परिवेश
- (D) मौखिक परम्परा

१७४. परीक्षा-उत्तरमे 'मिथिला-परिवेश'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (B) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार

१७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मिथिला-परिवेश'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (B) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (C) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (D) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल

१७६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'कथावाचक परम्परा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (B) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (C) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति
- (D) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा

१७७. 'कथावाचक परम्परा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (B) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (D) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति

१७८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'कथन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथावाचक परम्परा
- (B) मौखिक परम्परा
- (C) कथा-रूपान्तरण
- (D) लोकगाथा

१७९. परीक्षा-उत्तरमे 'कथावाचक परम्परा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (C) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति
- (D) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध

१८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कथावाचक परम्परा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति
- (B) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (C) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१८१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'उपन्यास-विस्तार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (D) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ

१८२. 'उपन्यास-विस्तार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (B) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ
- (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (D) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप

१८३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'विस्तार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कथा-रूपान्तरण
- (B) मौखिक परम्परा
- (C) उपन्यास-विस्तार
- (D) लोकगाथा

१८४. परीक्षा-उत्तरमे 'उपन्यास-विस्तार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (B) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ

१८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उपन्यास-विस्तार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (B) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (C) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (D) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ

१८६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'लोक-न्याय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (B) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (C) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध
- (D) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा

१८७. 'लोक-न्याय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (D) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध

१८८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मौखिक परम्परा
- (B) लोकगाथा
- (C) कथा-रूपान्तरण
- (D) लोक-न्याय

१८९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-न्याय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध
- (B) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार
- (D) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार

१९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-न्याय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (B) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (C) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध
- (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार

१९१. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'समाज-विमर्श'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (B) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार
- (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा
- (D) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया

१९२. 'समाज-विमर्श' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार
- (D) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप

१९३. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'आलोचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) समाज-विमर्श
- (B) लोकगाथा
- (C) कथा-रूपान्तरण
- (D) मौखिक परम्परा

१९४. परीक्षा-उत्तरमे 'समाज-विमर्श'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार
- (B) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (C) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (D) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार

१९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'समाज-विमर्श'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार
- (B) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (C) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब
- (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा

१९६. लोकगाथा सँ उपन्यासमे 'संघर्ष-कथा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया
- (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा
- (C) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा
- (D) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा

१९७. 'संघर्ष-कथा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप
- (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव
- (C) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा
- (D) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि

१९८. लोकगाथा सँ उपन्यासक अध्ययनमे 'थीम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) संघर्ष-कथा
- (B) मौखिक परम्परा
- (C) लोकगाथा
- (D) कथा-रूपान्तरण

१९९. परीक्षा-उत्तरमे 'संघर्ष-कथा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार
- (B) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध
- (C) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा
- (D) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार

२००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'संघर्ष-कथा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार
- (B) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा
- (C) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा
- (D) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब

२०१. लोरिकक चरित्रमे 'लोरिक'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र

२०२. 'लोरिक' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (B) मानवीय नायकत्वक आधार
- (C) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (D) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग

२०३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'नायक' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) यादव कुल
- (C) खुलैन
- (D) कुब्जे

२०४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोरिक'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (B) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (C) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोरिक'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२०६. लोरिकक चरित्रमे 'यादव कुल'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (C) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (D) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ

२०७. 'यादव कुल' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (C) मानवीय नायकत्वक आधार
- (D) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग

२०८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'कुल-पहिचान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कुब्जे
- (B) लोरिक
- (C) यादव कुल
- (D) खुलैन

२०९. परीक्षा-उत्तरमे 'यादव कुल'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) बलकै लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (D) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा

२१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'यादव कुल'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (C) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२११. लोरिकक चरित्रमे 'कुब्जे'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (C) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र

२१२. 'कुब्जे' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) मानवीय नायकत्वक आधार
- (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र

२१३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'पिता-संदर्भ' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खुलैन
- (B) कुब्जे
- (C) लोरिक
- (D) यादव कुल

२१४. परीक्षा-उत्तरमे 'कुब्जे'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (B) बलकै लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (C) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (D) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति

२१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कुब्जे'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२१६. लोरिकक चरित्रमे 'खुलैन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२१७. 'खुलैन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

२१८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'माता-संदर्भ' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कुब्जे
- (B) यादव कुल
- (C) लोरिक
- (D) खुलैन

२१९. परीक्षा-उत्तरमे 'खुलैन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (C) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति

२२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'खुलैन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र

२२१. लोरिकक चरित्रमे 'सावर'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२२२. 'सावर' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (C) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

२२३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'भ्राता' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सावर
- (B) यादव कुल
- (C) लोरिक
- (D) कुब्जे

२२४. परीक्षा-उत्तरमे 'सावर'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (D) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा

२२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सावर'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (C) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (D) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति

२२६. लोरिकक चरित्रमे 'माँ दुर्गाक आशीर्वाद'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२२७. 'माँ दुर्गाक आशीर्वाद' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (B) मानवीय नायकत्वक आधार
- (C) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र

२२८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'भक्ति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कुब्जे
- (B) यादव कुल
- (C) लोरिक
- (D) माँ दुर्गाक आशीर्वाद

२२९. परीक्षा-उत्तरमे 'माँ दुर्गाक आशीर्वाद'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (B) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (C) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा

२३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'माँ दुर्गाक आशीर्वाद'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (C) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (D) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग

२३१. लोरिकक चरित्रमे 'साधारण जन्म'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मानवीय नायकत्वक आधार
- (B) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (C) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र

२३२. 'साधारण जन्म' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

२३३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'मानवीयता' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) यादव कुल
- (B) कुब्जे
- (C) लोरिक
- (D) साधारण जन्म

२३४. परीक्षा-उत्तरमे 'साधारण जन्म'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) बलकै लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

२३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'साधारण जन्म'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मानवीय नायकत्वक आधार
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (D) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत

२३६. लोरिकक चरित्रमे 'जन-रक्षा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (C) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२३७. 'जन-रक्षा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (C) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (D) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग

२३८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'कर्तव्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) कुब्जे
- (C) जन-रक्षा
- (D) यादव कुल

२३९. परीक्षा-उत्तरमे 'जन-रक्षा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (B) बलकै लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

२४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जन-रक्षा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (C) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (D) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति

२४१. लोरिकक चरित्रमे 'वीरता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (C) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२४२. 'वीरता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र

२४३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'गुण' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कुब्जे
- (B) वीरता
- (C) लोरिक
- (D) यादव कुल

२४४. परीक्षा-उत्तरमे 'वीरता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (B) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (C) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

२४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'वीरता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (D) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत

२४६. लोरिकक चरित्रमे 'न्याय-बोध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२४७. 'न्याय-बोध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (B) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (C) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र

२४८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) यादव कुल
- (B) न्याय-बोध
- (C) कुब्जे
- (D) लोरिक

२४९. परीक्षा-उत्तरमे 'न्याय-बोध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (B) मानवीय नायकत्वक आधार
- (C) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (D) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ

२५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'न्याय-बोध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (C) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (D) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ

२५१. लोरिकक चरित्रमे 'पराक्रम'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (D) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति

२५२. 'पराक्रम' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (B) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (C) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (D) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर

२५३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'गुण' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) कुब्जे
- (C) पराक्रम
- (D) यादव कुल

२५४. परीक्षा-उत्तरमे 'पराक्रम'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

२५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'पराक्रम'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (C) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (D) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति

२५६. लोरिकक चरित्रमे 'प्रतिज्ञा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (C) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२५७. 'प्रतिज्ञा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (B) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (C) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र

२५८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'संकल्प' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) यादव कुल
- (C) कुब्जे
- (D) प्रतिज्ञा

२५९. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रतिज्ञा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (C) मानवीय नायकत्वक आधार
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'प्रतिज्ञा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (C) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (D) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ

२६१. लोरिकक चरित्रमे 'खण्डा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (C) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२६२. 'खण्डा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (B) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (C) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (D) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत

२६३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'अस्त्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खण्डा
- (B) कुब्जे
- (C) यादव कुल
- (D) लोरिक

२६४. परीक्षा-उत्तरमे 'खण्डा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मानवीय नायकत्वक आधार
- (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (D) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत

२६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'खण्डा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत
- (B) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (C) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२६६. लोरिकक चरित्रमे 'अखाड़ा-कौशल'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) मल्लयुद्धक दाँव-पेंचमे दक्षता
- (C) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र

२६७. 'अखाड़ा-कौशल' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (C) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (D) मल्लयुद्धक दाँव-पेंचमे दक्षता

२६८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'कौशल' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) यादव कुल
- (B) लोरिक
- (C) अखाड़ा-कौशल
- (D) कुब्जे

२६९. परीक्षा-उत्तरमे 'अखाड़ा-कौशल'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (B) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (C) मानवीय नायकत्वक आधार
- (D) मल्लयुद्धक दाँव-पेंचमे दक्षता

२७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'अखाड़ा-कौशल'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (B) मल्लयुद्धक दाँव-पेंचमे दक्षता
- (C) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२७१. लोरिकक चरित्रमे 'लोकविश्वास'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (D) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप

२७२. 'लोकविश्वास' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप
- (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र

२७३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'स्वीकृति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कुब्बे
- (B) यादव कुल
- (C) लोकविश्वास
- (D) लोरिक

२७४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकविश्वास'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप
- (B) मानवीय नायकत्वक आधार
- (C) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (D) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति

२७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकविश्वास'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) बलकैँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२७६. लोरिकक चरित्रमे 'मानवीय आकर्षण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) नायकक भावनात्मक जटिलता
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२७७. 'मानवीय आकर्षण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नायकक भावनात्मक जटिलता
- (B) वीर-संतान प्राप्ति लोकविश्वासक प्रसंग
- (C) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (D) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर

२७८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'चरित्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) यादव कुल
- (B) लोरिक
- (C) कुब्बे
- (D) मानवीय आकर्षण

२७९. परीक्षा-उत्तरमे 'मानवीय आकर्षण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (B) मानवीय नायकत्वक आधार
- (C) नायकक भावनात्मक जटिलता
- (D) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति

२८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मानवीय आकर्षण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) बलकैँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) नायकक भावनात्मक जटिलता

२८१. लोरिकक चरित्रमे 'दमन-विरोध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा
- (C) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र

२८२. 'दमन-विरोध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर
- (C) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा
- (D) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग

२८३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'थीम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) यादव कुल
- (B) लोरिक
- (C) दमन-विरोध
- (D) कुब्जे

२८४. परीक्षा-उत्तरमे 'दमन-विरोध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (B) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा
- (C) मानवीय नायकत्वक आधार
- (D) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा

२८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'दमन-विरोध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (B) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (C) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२८६. लोरिकक चरित्रमे 'असहाय-रक्षा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (B) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता
- (C) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (D) जन-नायक आ वीर योद्धा

२८७. 'असहाय-रक्षा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (C) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता
- (D) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर

२८८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'करुणा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) असहाय-रक्षा
- (C) कुब्जे
- (D) यादव कुल

२८९. परीक्षा-उत्तरमे 'असहाय-रक्षा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मानवीय नायकत्वक आधार
- (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (D) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता

२९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'असहाय-रक्षा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (C) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता
- (D) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ

२९१. लोरिकक चरित्रमे 'जनप्रियता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ
- (B) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा
- (C) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र

२९२. 'जनप्रियता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (B) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (C) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा
- (D) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर

२९३. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'प्रतिष्ठा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) यादव कुल
- (C) जनप्रियता
- (D) कुब्जे

२९४. परीक्षा-उत्तरमे 'जनप्रियता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा
- (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (C) मानवीय नायकत्वक आधार
- (D) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति

२९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जनप्रियता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा
- (B) बलकें लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (C) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति
- (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प

२९६. लोरिकक चरित्रमे 'नैतिक बल'क सही पहिचान की अछि?

- (A) वीरता कें न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति
- (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र
- (C) जन-नायक आ वीर योद्धा
- (D) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ

२९७. 'नैतिक बल' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र
- (B) वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति
- (C) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग
- (D) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर

२९८. लोरिकक चरित्रक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) नैतिक बल
- (B) कुब्जे
- (C) लोरिक
- (D) यादव कुल

२९९. परीक्षा-उत्तरमे 'नैतिक बल'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा
- (B) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति
- (C) वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति
- (D) मानवीय नायकत्वक आधार

३००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'नैतिक बल'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति
- (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प
- (C) बलकेँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ
- (D) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति

३०१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'मञ्जरी'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (D) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष

३०२. 'मञ्जरी' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (C) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३०३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'स्त्री-पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) उधरा पँवारक भय
- (B) सतीत्व-रक्षा
- (C) सेवाचन
- (D) मञ्जरी

३०४. परीक्षा-उत्तरमे 'मञ्जरी'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (B) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र

३०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मञ्जरी'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (B) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (C) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (D) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली

३०६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'सतीत्व-रक्षा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (C) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (D) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ

३०७. 'सतीत्व-रक्षा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना

३०८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सेवाचन
- (B) मञ्जरी
- (C) सतीत्व-रक्षा
- (D) उधरा पँवारक भय

३०९. परीक्षा-उत्तरमे 'सतीत्व-रक्षा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (B) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (C) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सतीत्व-रक्षा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (B) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल

३११. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'सेवाचन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (B) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (D) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट

३१२. 'सेवाचन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३१३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'परिजन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सेवाचन
- (B) मञ्जरी
- (C) सतीत्व-रक्षा
- (D) उधरा पँवारक भय

३१४. परीक्षा-उत्तरमे 'सेवाचन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सेवाचन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (B) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (C) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (D) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ

३१६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'उधरा पँवारक भय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३१७. 'उधरा पँवारक भय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (B) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (C) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३१८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'संकट' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मञ्जरी
- (B) उधरा पँवारक भय
- (C) सतीत्व-रक्षा
- (D) सेवाचन

३१९. परीक्षा-उत्तरमे 'उधरा पँवारक भय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट

३२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उधरा पँवारक भय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (D) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली

३२१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'विवाह-प्रसंग'क सही पहिचान की अछि?

- (A) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३२२. 'विवाह-प्रसंग' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना

३२३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'घटना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सतीत्व-रक्षा
- (B) मञ्जरी
- (C) विवाह-प्रसंग
- (D) सेवाचन

३२४. परीक्षा-उत्तरमे 'विवाह-प्रसंग'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (B) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (C) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना

३२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'विवाह-प्रसंग'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (B) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (C) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल

३२६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'सिन्दूरदान'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (B) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३२७. 'सिन्दूरदान' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना

३२८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'संस्कार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिन्दूरदान
- (B) मञ्जरी
- (C) सेवाचन
- (D) सतीत्व-रक्षा

३२९. परीक्षा-उत्तरमे 'सिन्दूरदान'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र

३३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सिन्दूरदान'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (B) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३३१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'सोनिका-मोनिका'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३३२. 'सोनिका-मोनिका' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना

३३३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'विघ्न' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सोनिका-मोनिका
- (B) सतीत्व-रक्षा
- (C) सेवाचन
- (D) मञ्जरी

३३४. परीक्षा-उत्तरमे 'सोनिका-मोनिका'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र

३३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सोनिका-मोनिका'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा

३३६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'चनैन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (D) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ

३३७. 'चनैन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकेत
- (B) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (C) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र

३३८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'स्त्री-पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मञ्जरी
- (B) सतीत्व-रक्षा
- (C) सेवाचन
- (D) चनैन

३३९. परीक्षा-उत्तरमे 'चनैन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ

३४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'चनैन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (B) संकेतमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (C) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (D) रूपक संग सामाजिक संकेत देखाबयवला शैली

३४१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'स्त्री-स्वाभिमान'क सही पहिचान की अछि?

- (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३४२. 'स्त्री-स्वाभिमान' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकेत
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना

३४३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सतीत्व-रक्षा
- (B) स्त्री-स्वाभिमान
- (C) मञ्जरी
- (D) सेवाचन

३४४. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-स्वाभिमान'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (B) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्त्री-स्वाभिमान'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (B) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (C) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (D) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा

३४६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'स्त्रीक भय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३४७. 'स्त्रीक भय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३४८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'सामाजिक यथार्थ' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सेवाचन
- (B) मञ्जरी
- (C) स्त्रीक भय
- (D) सतीत्व-रक्षा

३४९. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्रीक भय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (B) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (C) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्त्रीक भय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (B) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३५१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'स्त्रीक साहस'क सही पहिचान की अछि?

- (A) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ

३५२. 'स्त्रीक साहस' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल

३५३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'गुण' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सेवाचन
- (B) स्त्रीक साहस
- (C) सतीत्व-रक्षा
- (D) मञ्जरी

३५४. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्रीक साहस'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (D) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा

३५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्त्रीक साहस'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (B) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (C) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल

३५६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'सौन्दर्य-वर्णन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३५७. 'सौन्दर्य-वर्णन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट

३५८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'शैली' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सतीत्व-रक्षा
- (B) सौन्दर्य-वर्णन
- (C) मञ्जरी
- (D) सेवाचन

३५९. परीक्षा-उत्तरमे 'सौन्दर्य-वर्णन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (B) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ

३६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सौन्दर्य-वर्णन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (C) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (D) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा

३६१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'लोक-मर्यादा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ

३६२. 'लोक-मर्यादा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (B) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (C) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३६३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सेवाचन
- (B) लोक-मर्यादा
- (C) मञ्जरी
- (D) सतीत्व-रक्षा

३६४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-मर्यादा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा
- (C) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (D) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा

३६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-मर्यादा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा

३६६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'प्रेम-भाव'क सही पहिचान की अछि?

- (A) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव
- (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (C) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (D) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष

३६७. 'प्रेम-भाव' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३६८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'भाव' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सेवाचन
- (B) प्रेम-भाव
- (C) सतीत्व-रक्षा
- (D) मञ्जरी

३६९. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रेम-भाव'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (B) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव
- (C) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (D) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा

३७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'प्रेम-भाव'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव
- (B) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३७१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'नारी-अस्मिता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (B) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (C) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३७२. 'नारी-अस्मिता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न
- (C) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना

३७३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'आलोचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मञ्जरी
- (B) सतीत्व-रक्षा
- (C) सेवाचन
- (D) नारी-अस्मिता

३७४. परीक्षा-उत्तरमे 'नारी-अस्मिता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (B) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न
- (C) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र

३७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'नारी-अस्मिता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न
- (B) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (C) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (D) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली

३७६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'अपहरण-भय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचारी सत्ताक सबसे कूर सामाजिक रूप
- (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (D) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष

३७७. 'अपहरण-भय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (B) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (C) अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३७८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'संकट' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मञ्जरी
- (B) अपहरण-भय
- (C) सेवाचन
- (D) सतीत्व-रक्षा

३७९. परीक्षा-उत्तरमे 'अपहरण-भय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (C) अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप
- (D) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ

३८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'अपहरण-भय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप

३८१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'स्त्री-सुरक्षा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (B) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (C) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (D) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य

३८२. 'स्त्री-सुरक्षा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य
- (C) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (D) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट

३८३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'लक्ष्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) स्त्री-सुरक्षा
- (B) सतीत्व-रक्षा
- (C) सेवाचन
- (D) मञ्जरी

३८४. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-सुरक्षा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र

३८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्त्री-सुरक्षा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (B) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (C) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य
- (D) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली

३८६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'सामाजिक दृष्टि'क सही पहिचान की अछि?

- (A) स्त्री-पात्रक माध्यमसँ समाजक विकृति पर प्रश्न
- (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (D) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ

३८७. 'सामाजिक दृष्टि' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (C) स्त्री-पात्रक माध्यमसँ समाजक विकृति पर प्रश्न
- (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत

३८८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'आलोचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सामाजिक दृष्टि
- (B) सेवाचन
- (C) मञ्जरी
- (D) सतीत्व-रक्षा

३८९. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक दृष्टि'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) स्त्री-पात्रक माध्यमसँ समाजक विकृति पर प्रश्न
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र

३९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सामाजिक दृष्टि'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (B) स्त्री-पात्रक माध्यमसँ समाजक विकृति पर प्रश्न
- (C) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल
- (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक

३९१. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'रूप आ संकट'क सही पहिचान की अछि?

- (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र
- (C) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (D) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना

३९२. 'रूप आ संकट' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (B) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (C) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट
- (D) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना

३९३. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'थीम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मञ्जरी
- (B) सतीत्व-रक्षा
- (C) रूप आ संकट
- (D) सेवाचन

३९४. परीक्षा-उत्तरमे 'रूप आ संकट'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ

३९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'रूप आ संकट'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल

३९६. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रमे 'मर्यादा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष
- (B) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य
- (C) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ
- (D) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र

३९७. 'मर्यादा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य
- (B) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत
- (C) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना
- (D) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट

३९८. मञ्जरी आ स्त्री-पात्रक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सतीत्व-रक्षा
- (B) मञ्जरी
- (C) सेवाचन
- (D) मर्यादा

३९९. परीक्षा-उत्तरमे 'मर्यादा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र
- (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ
- (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा
- (D) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य

४००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मर्यादा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक
- (B) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य
- (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली
- (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल

४०१. सामन्ती अत्याचारमे 'उधरा पँवार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (B) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (C) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (D) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ

४०२. 'उधरा पँवार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र

४०३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'प्रतिपक्ष' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) उधरा पँवार
- (B) हरबा
- (C) गजभीम
- (D) मोचनी

४०४. परीक्षा-उत्तरमे 'उधरा पँवार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (B) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (C) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (D) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला

४०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उधरा पँवार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक

४०६. सामन्ती अत्याचारमे 'हरबा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (B) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (D) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ

४०७. 'हरबा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (C) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४०८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'प्रतिपक्ष' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गजभीम
- (B) उधरा पँवार
- (C) हरबा
- (D) मोचनी

४०९. परीक्षा-उत्तरमे 'हरबा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (B) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (D) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला

४१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'हरबा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४११. सामन्ती अत्याचारमे 'मोचनी'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (D) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ

४१२. 'मोचनी' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४१३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'राजा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गजभीम
- (B) मोचनी
- (C) उधरा पँवार
- (D) हरबा

४१४. परीक्षा-उत्तरमे 'मोचनी'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण

४१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मोचनी'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

४१६. सामन्ती अत्याचारमे 'गजभीम'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (B) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ

४१७. 'गजभीम' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (D) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र

४१८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'योद्धा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) उधरा पँवार
- (B) मोचनी
- (C) गजभीम
- (D) हरबा

४१९. परीक्षा-उत्तरमे 'गजभीम'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण

४२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गजभीम'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (D) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक

४२१. सामन्ती अत्याचारमे 'घुघरा पँवार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र

४२२. 'घुघरा पँवार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४२३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'आक्रमणकारी' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरबा
- (B) घुघरा पँवार
- (C) उधरा पँवार
- (D) मोचनी

४२४. परीक्षा-उत्तरमे 'घुघरा पँवार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (B) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (D) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान

४२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'घुघरा पँवार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक

४२६. सामन्ती अत्याचारमे 'बरबा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (B) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (C) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४२७. 'बरबा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४२८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'योद्धा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मोचनी
- (B) बरबा
- (C) उधरा पँवार
- (D) हरबा

४२९. परीक्षा-उत्तरमे 'बरबा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (D) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान

४३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'बरबा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (B) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन

४३१. सामन्ती अत्याचारमे 'कुँवर अंगार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (B) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (C) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (D) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ

४३२. 'कुँवर अंगार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (C) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४३३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'योद्धा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कुँवर अंगार
- (B) उधरा पँवार
- (C) मोचनी
- (D) हरबा

४३४. परीक्षा-उत्तरमे 'कुँवर अंगार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कुँवर अंगार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (B) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन

४३६. सामन्ती अत्याचारमे 'हथौरी बन्दीसार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (B) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ

४३७. 'हथौरी बन्दीसार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ

४३८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'कैद-स्थान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मोचनी
- (B) हथौरी बन्दीसार
- (C) उधरा पँवार
- (D) हरबा

४३९. परीक्षा-उत्तरमे 'हथौरी बन्दीसार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण

४४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'हथौरी बन्दीसार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन

४४१. सामन्ती अत्याचारमे 'गोधन-अपहरण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४४२. 'गोधन-अपहरण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (D) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र

४४३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'अत्याचार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मोचनी
- (B) उधरा पँवार
- (C) हरबा
- (D) गोधन-अपहरण

४४४. परीक्षा-उत्तरमे 'गोधन-अपहरण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (D) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान

४४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गोधन-अपहरण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (D) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक

४४६. सामन्ती अत्याचारमे 'स्त्री-अपहरण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (B) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४४७. 'स्त्री-अपहरण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ

४४८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'अत्याचार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) स्त्री-अपहरण
- (B) मोचनी
- (C) उधरा पँवार
- (D) हरबा

४४९. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-अपहरण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (B) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (C) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण

४५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्त्री-अपहरण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (B) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण

४५१. सामन्ती अत्याचारमे 'शोषण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (B) चैनैक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४५२. 'शोषण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन

४५३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'सामाजिक संकट' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरबा
- (B) शोषण
- (C) उधरा पँवार
- (D) मोचनी

४५४. परीक्षा-उत्तरमे 'शोषण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (B) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (C) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (D) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला

४५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'शोषण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (B) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (C) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

४५६. सामन्ती अत्याचारमे 'दमन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) चैनैक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (B) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४५७. 'दमन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

४५८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'सत्ता-प्रवृत्ति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मोचनी
- (B) उधरा पँवार
- (C) हरबा
- (D) दमन

४५९. परीक्षा-उत्तरमे 'दमन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'दमन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण

४६१. सामन्ती अत्याचारमे 'जन-भय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (B) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (C) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (D) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ

४६२. 'जन-भय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (D) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र

४६३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'स्थिति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरबा
- (B) मोचनी
- (C) उधरा पँवार
- (D) जन-भय

४६४. परीक्षा-उत्तरमे 'जन-भय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जन-भय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक
- (B) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन

४६६. सामन्ती अत्याचारमे 'षड्यन्त्र'क सही पहिचान की अछि?

- (A) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति
- (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यन्त्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (D) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप

४६७. 'षड्यन्त्र' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति

४६८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'कथात्मक युक्ति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) उधरा पँवार
- (B) हरबा
- (C) मोचनी
- (D) षड्यन्त्र

४६९. परीक्षा-उत्तरमे 'षड्यन्त्र'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (B) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति
- (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (D) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान

४७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'षड्यन्त्र'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

४७१. सामन्ती अत्याचारमे 'कैद-यातना'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (B) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा
- (C) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यन्त्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा

४७२. 'कैद-यातना' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (B) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा
- (C) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (D) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ

४७३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'अत्याचार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मोचनी
- (B) हरबा
- (C) उधरा पँवार
- (D) कैद-यातना

४७४. परीक्षा-उत्तरमे 'कैद-यातना'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कैद-यातना'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (B) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (C) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा
- (D) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन

४७६. सामन्ती अत्याचारमे 'प्रजा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचार सह्यवला जन-साधारण
- (B) चैनैक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (D) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप

४७७. 'प्रजा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) अत्याचार सह्यवला जन-साधारण

४७८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'समाज' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) प्रजा
- (B) मोचनी
- (C) उधरा पँवार
- (D) हरबा

४७९. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रजा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) अत्याचार सह्यवला जन-साधारण
- (D) हरबाक सहायक रण-पात्र

४८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'प्रजा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (B) अत्याचार सह्यवला जन-साधारण
- (C) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

४८१. सामन्ती अत्याचारमे 'लोकमुक्ति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) नायकक विजयक सामाजिक फल
- (B) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (D) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ

४८२. 'लोकमुक्ति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (D) नायकक विजयक सामाजिक फल

४८३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'फल' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) उधरा पँवार
- (B) लोकमुक्ति
- (C) मोचनी
- (D) हरबा

४८४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकमुक्ति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) नायकक विजयक सामाजिक फल
- (B) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (C) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (D) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला

४८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकमुक्ति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) नायकक विजयक सामाजिक फल
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

४८६. सामन्ती अत्याचारमे 'सामन्ती सत्ता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (B) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप
- (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (D) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप

४८७. 'सामन्ती सत्ता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (B) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप
- (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र
- (D) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ

४८८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'सत्ता' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मोचनी
- (B) सामन्ती सत्ता
- (C) उधरा पँवार
- (D) हरबा

४८९. परीक्षा-उत्तरमे 'सामन्ती सत्ता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (D) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप

४९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सामन्ती सत्ता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (B) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप
- (C) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

४९१. सामन्ती अत्याचारमे 'आतंक'क सही पहिचान की अछि?

- (A) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ
- (B) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (D) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय

४९२. 'आतंक' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (D) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र

४९३. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'भाव' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) आतंक
- (B) उधरा पँवार
- (C) हरबा
- (D) मोचनी

४९४. परीक्षा-उत्तरमे 'आतंक'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (B) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय
- (C) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (D) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान

४९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'आतंक'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ
- (D) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय

४९६. सामन्ती अत्याचारमे 'अन्याय-विरोध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप
- (B) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना
- (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा
- (D) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ

४९७. 'अन्याय-विरोध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना
- (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ
- (C) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र
- (D) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र

४९८. सामन्ती अत्याचारक अध्ययनमे 'मूल स्वर' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरबा
- (B) उधरा पँवार
- (C) अन्याय-विरोध
- (D) मोचनी

४९९. परीक्षा-उत्तरमे 'अन्याय-विरोध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान
- (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला
- (C) हरबाक सहायक रण-पात्र
- (D) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना

५००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'अन्याय-विरोध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण
- (B) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन
- (C) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना
- (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ

५०१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'सिलहट अखाड़ा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (B) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (C) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (D) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल

५०२. 'सिलहट अखाड़ा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (D) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर

५०३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'स्थान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खण्डा
- (B) मल्लयुद्ध
- (C) दाँव-पेंच
- (D) सिलहट अखाड़ा

५०४. परीक्षा-उत्तरमे 'सिलहट अखाड़ा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (B) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (C) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (D) वीरक जीत पर लोकक आनंद

५०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सिलहट अखाड़ा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५०६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'मल्लयुद्ध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (D) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष

५०७. 'मल्लयुद्ध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (B) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ

५०८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'युद्ध-रूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) खण्डा
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) दाँव-पेंच

५०९. परीक्षा-उत्तरमे 'मल्लयुद्ध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मल्लयुद्ध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (B) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५११. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'खण्डा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (D) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल

५१२. 'खण्डा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५१३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'अस्त्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मल्लयुद्ध
- (B) सिलहट अखाड़ा
- (C) दाँव-पेंच
- (D) खण्डा

५१४. परीक्षा-उत्तरमे 'खण्डा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'खण्डा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (B) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र

५१६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'दाँव-पेंच'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (D) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष

५१७. 'दाँव-पेंच' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (B) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५१८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'कौशल' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खण्डा
- (B) दाँव-पेंच
- (C) सिलहट अखाड़ा
- (D) मल्लयुद्ध

५१९. परीक्षा-उत्तरमे 'दाँव-पेंच'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (C) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'दाँव-पेंच'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (C) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (D) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर

५२१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'कटरा घोड़ा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (D) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष

५२२. 'कटरा घोड़ा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (C) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५२३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'वाहन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कटरा घोड़ा
- (B) सिलहट अखाड़ा
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) खण्डा

५२४. परीक्षा-उत्तरमे 'कटरा घोड़ा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) अत्याचारी शक्तिक पराभव

५२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कटरा घोड़ा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (B) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (C) वीरता कें कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ

५२६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'युद्ध-चुनौती'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (B) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (D) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष

५२७. 'युद्ध-चुनौती' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (D) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल

५२८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'घटना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) खण्डा
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) युद्ध-चुनौती

५२९. परीक्षा-उत्तरमे 'युद्ध-चुनौती'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (B) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) अत्याचारी शक्तिक पराभव

५३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'युद्ध-चुनौती'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (C) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५३१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'वीर-देह'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल

५३२. 'वीर-देह' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ

५३३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'वर्णन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) वीर-देह
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) खण्डा

५३४. परीक्षा-उत्तरमे 'वीर-देह'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (B) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर

५३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'वीर-देह'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (B) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर

५३६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'रण-धैर्य'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (B) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र

५३७. 'रण-धैर्य' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (C) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५३८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'गुण' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) रण-धैर्य
- (B) सिलहट अखाड़ा
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) खण्डा

५३९. परीक्षा-उत्तरमे 'रण-धैर्य'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) अत्याचारी शक्तिक पराभव

५४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'रण-धैर्य'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (B) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (C) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (D) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर

५४१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'शत्रु-विजय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (D) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल

५४२. 'शत्रु-विजय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (C) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ

५४३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'फल' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मल्लयुद्ध
- (B) शत्रु-विजय
- (C) खण्डा
- (D) सिलहट अखाड़ा

५४४. परीक्षा-उत्तरमे 'शत्रु-विजय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) वीरक जीत पर लोकक आनंद

५४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'शत्रु-विजय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (B) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर

५४६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'जन-जयघोष'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (D) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष

५४७. 'जन-जयघोष' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (B) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ

५४८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'प्रतिक्रिया' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खण्डा
- (B) मल्लयुद्ध
- (C) सिलहट अखाड़ा
- (D) जन-जयघोष

५४९. परीक्षा-उत्तरमे 'जन-जयघोष'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जन-जयघोष'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५५१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'रण-नैतिकता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (B) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५५२. 'रण-नैतिकता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (C) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५५३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) खण्डा
- (C) रण-नैतिकता
- (D) मल्लयुद्ध

५५४. परीक्षा-उत्तरमे 'रण-नैतिकता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) बलकै न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (B) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) अत्याचारी शक्तिक पराभव

५५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'रण-नैतिकता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (C) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (D) बलकै न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५५६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'अभ्यास'क सही पहिचान की अछि?

- (A) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (C) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (D) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र

५५७. 'अभ्यास' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (B) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५५८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'प्रक्रिया' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) अभ्यास
- (C) खण्डा
- (D) मल्लयुद्ध

५५९. परीक्षा-उत्तरमे 'अभ्यास'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (C) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'अभ्यास'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (B) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (C) बलकै न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (D) वीरक जीत पर लोकक आनंद

५६१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'प्रतिशोध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र

५६२. 'प्रतिशोध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (C) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (D) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर

५६३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'भाव' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) प्रतिशोध
- (B) खण्डा
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) सिलहट अखाड़ा

५६४. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रतिशोध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (C) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'प्रतिशोध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर
- (B) बलकें न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (C) वीरता कें कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) वीरक जीत पर लोकक आनंद

५६६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'असाधारण बल'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (B) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (C) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव
- (D) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल

५६७. 'असाधारण बल' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव
- (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (D) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल

५६८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'गुण' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) असाधारण बल
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) खण्डा

५६९. परीक्षा-उत्तरमे 'असाधारण बल'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'असाधारण बल'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव
- (B) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) वीरक जीत पर लोकक आनंद

५७१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'वीर-रस'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (C) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव
- (D) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष

५७२. 'वीर-रस' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव
- (C) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५७३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'रस' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खण्डा
- (B) मल्लयुद्ध
- (C) सिलहट अखाड़ा
- (D) वीर-रस

५७४. परीक्षा-उत्तरमे 'वीर-रस'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव

५७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'वीर-रस'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (B) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (C) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (D) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव

५७६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'संघर्ष-दृश्य'क सही पहिचान की अछि?

- (A) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (B) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (C) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन
- (D) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल

५७७. 'संघर्ष-दृश्य' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन
- (B) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (C) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५७८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'शैली' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) खण्डा
- (C) संघर्ष-दृश्य
- (D) मल्लयुद्ध

५७९. परीक्षा-उत्तरमे 'संघर्ष-दृश्य'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन
- (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'संघर्ष-दृश्य'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन
- (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (C) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (D) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५८१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'विजय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (B) देहबल, दौंव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (C) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (D) दमनक अंत आ लोकक राहत

५८२. 'विजय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) दमनक अंत आ लोकक राहत
- (B) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (C) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ

५८३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'फल' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) विजय
- (B) खण्डा
- (C) सिलहट अखाड़ा
- (D) मल्लयुद्ध

५८४. परीक्षा-उत्तरमे 'विजय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (C) दमनक अंत आ लोकक राहत
- (D) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता

५८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'विजय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (B) दमनक अंत आ लोकक राहत
- (C) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (D) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५८६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'रण-घटना'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (B) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र

५८७. 'रण-घटना' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (C) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (D) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग

५८८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'घटना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) रण-घटना
- (B) मल्लयुद्ध
- (C) सिलहट अखाड़ा
- (D) खण्डा

५८९. परीक्षा-उत्तरमे 'रण-घटना'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (B) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) अत्याचारी शक्तिक पराभव

५९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'रण-घटना'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग
- (B) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (C) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (D) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया

५९१. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'योद्धा-प्रतिष्ठा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल
- (B) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र

५९२. 'योद्धा-प्रतिष्ठा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (B) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण
- (C) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान
- (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ

५९३. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'प्रतिष्ठा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खण्डा
- (B) सिलहट अखाड़ा
- (C) मल्लयुद्ध
- (D) योद्धा-प्रतिष्ठा

५९४. परीक्षा-उत्तरमे 'योद्धा-प्रतिष्ठा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (B) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (C) अत्याचारी शक्तिक पराभव
- (D) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान

५९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'योद्धा-प्रतिष्ठा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (B) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान
- (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया
- (D) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा

५९६. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रममे 'पराक्रम'क सही पहिचान की अछि?

- (A) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति
- (B) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र
- (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष
- (D) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल

५९७. 'पराक्रम' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ
- (B) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति
- (C) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल
- (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण

५९८. अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रमक अध्ययनमे 'गुण' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) खण्डा
- (B) सिलहट अखाड़ा
- (C) पराक्रम
- (D) मल्लयुद्ध

५९९. परीक्षा-उत्तरमे 'पराक्रम'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति
- (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर
- (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता
- (D) अत्याचारी शक्तिक पराभव

६००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'पराक्रम'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा
- (B) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति
- (C) वीरक जीत पर लोकक आनंद
- (D) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया

६०१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'लोकभाषा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६०२. 'लोकभाषा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (B) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (C) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन

६०३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'भाषा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) लोकभाषा
- (D) उपमा

६०४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकभाषा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (D) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता

६०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकभाषा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (B) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (D) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा

६०६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'वर्णन-कला'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (B) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (C) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली

६०७. 'वर्णन-कला' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (B) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (C) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन

६०८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'शैली' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) उपमा
- (C) अतिशयोक्ति
- (D) लोकभाषा

६०९. परीक्षा-उत्तरमे 'वर्णन-कला'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (C) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (D) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता

६१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'वर्णन-कला'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (B) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (D) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक

६११. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'अतिशयोक्ति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (D) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण

६१२. 'अतिशयोक्ति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (B) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (C) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (D) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण

६१३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'अलंकारिक युक्ति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) अतिशयोक्ति
- (B) लोकभाषा
- (C) उपमा
- (D) वर्णन-कला

६१४. परीक्षा-उत्तरमे 'अतिशयोक्ति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (B) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता

६१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'अतिशयोक्ति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (B) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक

६१६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'उपमा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (B) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (C) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा

६१७. 'उपमा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (C) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (D) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना

६१८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'अलंकार' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) उपमा
- (C) अतिशयोक्ति
- (D) लोकभाषा

६१९. परीक्षा-उत्तरमे 'उपमा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (B) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (C) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (D) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर

६२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उपमा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत

६२१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'संवाद'क सही पहिचान की अछि?

- (A) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन

६२२. 'संवाद' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (C) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (D) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६२३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'कथन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) संवाद
- (C) लोकभाषा
- (D) अतिशयोक्ति

६२४. परीक्षा-उत्तरमे 'संवाद'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता

६२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'संवाद'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (B) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन

६२६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'वीर-रस'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (B) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवाली शैली
- (C) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा

६२७. 'वीर-रस' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (B) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (C) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (D) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६२८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'रस' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) वीर-रस
- (C) अतिशयोक्ति
- (D) लोकभाषा

६२९. परीक्षा-उत्तरमे 'वीर-रस'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (C) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा

६३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'वीर-रस'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (B) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (D) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह

६३१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'करुण-रस'क सही पहिचान की अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवाली शैली

६३२. 'करुण-रस' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (C) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (D) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना

६३३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'रस' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) करुण-रस
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) वर्णन-कला
- (D) लोकभाषा

६३४. परीक्षा-उत्तरमे 'करुण-रस'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (C) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (D) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर

६३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'करुण-रस'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (D) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह

६३६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'नाटकीयता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (C) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवाली शैली
- (D) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा

६३७. 'नाटकीयता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (B) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६३८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'शैली' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) नाटकीयता
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) लोकभाषा
- (D) वर्णन-कला

६३९. परीक्षा-उत्तरमे 'नाटकीयता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (C) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (D) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर

६४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'नाटकीयता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (B) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (C) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (D) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत

६४१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'चित्रात्मकता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (B) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (C) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवाली शैली

६४२. 'चित्रात्मकता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (C) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा

६४३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'शैली' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चित्रात्मकता
- (B) लोकभाषा
- (C) अतिशयोक्ति
- (D) वर्णन-कला

६४४. परीक्षा-उत्तरमे 'चित्रात्मकता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना

६४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'चित्रात्मकता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (D) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक

६४६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'गाथा-धारा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवाली शैली

६४७. 'गाथा-धारा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (B) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (C) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (D) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६४८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'रूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकभाषा
- (B) गाथा-धारा
- (C) वर्णन-कला
- (D) अतिशयोक्ति

६४९. परीक्षा-उत्तरमे 'गाथा-धारा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (C) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (D) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण

६५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गाथा-धारा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह

६५१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'कथा-गति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (B) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवाली शैली
- (C) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (D) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण

६५२. 'कथा-गति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (C) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (D) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६५३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'रचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) लोकभाषा
- (C) कथा-गति
- (D) अतिशयोक्ति

६५४. परीक्षा-उत्तरमे 'कथा-गति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (B) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (D) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना

६५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कथा-गति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (B) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (C) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (D) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह

६५६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'पात्र-वर्णन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (B) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवाली शैली
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण

६५७. 'पात्र-वर्णन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (C) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन

६५८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'शिल्प' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) अतिशयोक्ति
- (B) लोकभाषा
- (C) वर्णन-कला
- (D) पात्र-वर्णन

६५९. परीक्षा-उत्तरमे 'पात्र-वर्णन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक

६६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'पात्र-वर्णन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत

६६१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'सामाजिक टिप्पणी'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (B) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली

६६२. 'सामाजिक टिप्पणी' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (C) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा

६६३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'विमर्श' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) अतिशयोक्ति
- (B) वर्णन-कला
- (C) सामाजिक टिप्पणी
- (D) लोकभाषा

६६४. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक टिप्पणी'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत

६६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सामाजिक टिप्पणी'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह

६६६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'लोक-उक्ति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवली शैली
- (B) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग
- (C) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (D) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण

६६७. 'लोक-उक्ति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (B) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (C) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (D) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग

६६८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'भाषिक साधन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) लोकभाषा
- (C) लोक-उक्ति
- (D) अतिशयोक्ति

६६९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-उक्ति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (B) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग

६७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-उक्ति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (B) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग

६७१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'दृश्य-संयोजन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (B) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवली शैली
- (C) घटना, स्थान आ पात्र कें एक दृश्यमे जोड़ब
- (D) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा

६७२. 'दृश्य-संयोजन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (C) घटना, स्थान आ पात्र कें एक दृश्यमे जोड़ब
- (D) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६७३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'शिल्प' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकभाषा
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) वर्णन-कला
- (D) दृश्य-संयोजन

६७४. परीक्षा-उत्तरमे 'दृश्य-संयोजन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (C) घटना, स्थान आ पात्र केँ एक दृश्यमे जोड़ब
- (D) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना

६७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'दृश्य-संयोजन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (B) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) घटना, स्थान आ पात्र केँ एक दृश्यमे जोड़ब
- (D) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर

६७६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'कथावाचक स्वर'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवली शैली
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (D) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज

६७७. 'कथावाचक स्वर' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (B) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज
- (C) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (D) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली

६७८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'कथन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) वर्णन-कला
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) कथावाचक स्वर
- (D) लोकभाषा

६७९. परीक्षा-उत्तरमे 'कथावाचक स्वर'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज
- (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (C) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (D) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना

६८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कथावाचक स्वर'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (B) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज

६८१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'रस-वैविध्य'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली
- (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (C) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव
- (D) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण

६८२. 'रस-वैविध्य' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव
- (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (C) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा

६८३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'भाव-संरचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) अतिशयोक्ति
- (B) रस-वैविध्य
- (C) लोकभाषा
- (D) वर्णन-कला

६८४. परीक्षा-उत्तरमे 'रस-वैविध्य'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (C) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (D) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव

६८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'रस-वैविध्य'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (B) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (C) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव
- (D) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर

६८६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'लोक-लय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (B) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि
- (C) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली

६८७. 'लोक-लय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन
- (B) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (C) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि
- (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा

६८८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'लय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) अतिशयोक्ति
- (B) वर्णन-कला
- (C) लोकभाषा
- (D) लोक-लय

६८९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-लय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता

६९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-लय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि

६९१. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'सजीवता'क सही पहिचान की अछि?

- (A) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (B) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव
- (C) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवली शैली

६९२. 'सजीवता' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कठिन दृश्य कें परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव
- (C) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन

६९३. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'प्रभाव' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सजीवता
- (B) लोकभाषा
- (C) अतिशयोक्ति
- (D) वर्णन-कला

६९४. परीक्षा-उत्तरमे 'सजीवता'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव
- (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण
- (D) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता

६९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सजीवता'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (C) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव
- (D) घटनाकें आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह

६९६. भाषा, शैली आ कथनकलामे 'उपन्यासिक संरचना'क सही पहिचान की अछि?

- (A) वीरक प्रभावकें लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण
- (B) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण कें सजीव बनाबयवली शैली
- (C) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा
- (D) लोककथाकें क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब

६९७. 'उपन्यासिक संरचना' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली
- (B) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा
- (C) लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब
- (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन

६९८. भाषा, शैली आ कथनकलाक अध्ययनमे 'संरचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकभाषा
- (B) उपन्यासिक संरचना
- (C) वर्णन-कला
- (D) अतिशयोक्ति

६९९. परीक्षा-उत्तरमे 'उपन्यासिक संरचना'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना
- (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता
- (C) लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब
- (D) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण

७००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उपन्यासिक संरचना'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर
- (B) लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब
- (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक
- (D) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह

७०१. समाज-संस्कृतिमे 'गाम'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७०२. 'गाम' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (B) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (C) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (D) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास

७०३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'परिवेश' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरवाही
- (B) गोधन
- (C) गाम
- (D) चरवाही

७०४. परीक्षा-उत्तरमे 'गाम'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (B) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (C) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (D) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि

७०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गाम'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमन सहैत जन-साधारण
- (B) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध

७०६. समाज-संस्कृतिमे 'हरवाही'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७०७. 'हरवाही' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७०८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'श्रम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गोधन
- (B) हरवाही
- (C) चरवाही
- (D) गाम

७०९. परीक्षा-उत्तरमे 'हरवाही'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (B) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (C) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (D) समाजक नैतिक न्याय-बोध

७१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'हरवाही'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (B) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध

७११. समाज-संस्कृतिमे 'चरवाही'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार

७१२. 'चरवाही' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (B) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (C) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७१३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'श्रम' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गाम
- (B) गोधन
- (C) चरवाही
- (D) हरवाही

७१४. परीक्षा-उत्तरमे 'चरवाही'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (C) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (D) समाजक नैतिक न्याय-बोध

७१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'चरवाही'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था

७१६. समाज-संस्कृतिमे 'गोधन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (B) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (D) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार

७१७. 'गोधन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (C) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७१८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'अर्थजीवन' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरवाही
- (B) गाम
- (C) गोधन
- (D) हरवाही

७१९. परीक्षा-उत्तरमे 'गोधन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (C) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गोधन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (D) दमन सहैत जन-साधारण

७२१. समाज-संस्कृतिमे 'माँ दुर्गा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७२२. 'माँ दुर्गा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (C) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७२३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'देवी-विश्वास' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरवाही
- (B) चरवाही
- (C) माँ दुर्गा
- (D) गाम

७२४. परीक्षा-उत्तरमे 'माँ दुर्गा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (C) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'माँ दुर्गा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (B) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (C) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (D) दमन सहैत जन-साधारण

७२६. समाज-संस्कृतिमे 'स्वप्न'क सही पहिचान की अछि?

- (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (D) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत

७२७. 'स्वप्न' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (C) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७२८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'विश्वास' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरवाही
- (B) हरवाही
- (C) गाम
- (D) स्वप्न

७२९. परीक्षा-उत्तरमे 'स्वप्न'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्वप्न'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (B) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण

७३१. समाज-संस्कृतिमे 'भक्ति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (B) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (C) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (D) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत

७३२. 'भक्ति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (C) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७३३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'धार्मिक पक्ष' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गाम
- (B) हरवाही
- (C) चरवाही
- (D) भक्ति

७३४. परीक्षा-उत्तरमे 'भक्ति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (B) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (C) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'भक्ति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (B) दमन सहैत जन-साधारण
- (C) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध

७३६. समाज-संस्कृतिमे 'लोक-न्याय'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) समाजक नैतिक न्याय-बोध

७३७. 'लोक-न्याय' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (C) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (D) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास

७३८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गाम
- (B) हरवाही
- (C) लोक-न्याय
- (D) चरवाही

७३९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-न्याय'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (C) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-न्याय'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमन सहैत जन-साधारण
- (B) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (D) समाजक नैतिक न्याय-बोध

७४१. समाज-संस्कृतिमे 'जाति-सम्बन्ध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७४२. 'जाति-सम्बन्ध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (D) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार

७४३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'समाज-विमर्श' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरवाही
- (B) गाम
- (C) जाति-सम्बन्ध
- (D) हरवाही

७४४. परीक्षा-उत्तरमे 'जाति-सम्बन्ध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (C) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (D) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग

७४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'जाति-सम्बन्ध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था

७४६. समाज-संस्कृतिमे 'स्त्री-गरिमा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७४७. 'स्त्री-गरिमा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७४८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरवाही
- (B) गाम
- (C) हरवाही
- (D) स्त्री-गरिमा

७४९. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-गरिमा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (C) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्त्री-गरिमा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमन सहैत जन-साधारण
- (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध

७५१. समाज-संस्कृतिमे 'सामन्तवाद'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (B) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७५२. 'सामन्तवाद' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (C) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (D) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था

७५३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'सामाजिक ढाँचा' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सामन्तवाद
- (B) गाम
- (C) हरवाही
- (D) चरवाही

७५४. परीक्षा-उत्तरमे 'सामन्तवाद'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (B) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सामन्तवाद'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (B) दमन सहैत जन-साधारण
- (C) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७५६. समाज-संस्कृतिमे 'प्रजा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत

७५७. 'प्रजा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) दमन सहैत जन-साधारण
- (C) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (D) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार

७५८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'समाज' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गाम
- (B) हरवाही
- (C) प्रजा
- (D) चरवाही

७५९. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रजा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमन सहैत जन-साधारण
- (B) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (C) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (D) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग

७६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'प्रजा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमन सहैत जन-साधारण
- (B) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (C) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (D) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था

७६१. समाज-संस्कृतिमे 'समूह-चेतना'क सही पहिचान की अछि?

- (A) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (D) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि

७६२. 'समूह-चेतना' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (B) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (C) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध

७६३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'चेतना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरवाही
- (B) समूह-चेतना
- (C) हरवाही
- (D) गाम

७६४. परीक्षा-उत्तरमे 'समूह-चेतना'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (B) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध
- (C) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (D) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग

७६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'समूह-चेतना'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (B) दमन सहैत जन-साधारण
- (C) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध

७६६. समाज-संस्कृतिमे 'लोक-उत्साह'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) विजयक बाद जनक हर्ष

७६७. 'लोक-उत्साह' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (C) विजयक बाद जनक हर्ष
- (D) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास

७६८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'भाव' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोक-उत्साह
- (B) चरवाही
- (C) हरवाही
- (D) गाम

७६९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-उत्साह'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (B) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (C) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (D) विजयक बाद जनक हर्ष

७७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-उत्साह'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमन सहैत जन-साधारण
- (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (D) विजयक बाद जनक हर्ष

७७१. समाज-संस्कृतिमे 'कैद-मुक्ति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि

७७२. 'कैद-मुक्ति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण
- (D) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार

७७३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'मुक्ति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कैद-मुक्ति
- (B) हरवाही
- (C) गाम
- (D) चरवाही

७७४. परीक्षा-उत्तरमे 'कैद-मुक्ति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (B) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण
- (C) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कैद-मुक्ति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण
- (B) दमन सहैत जन-साधारण
- (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७७६. समाज-संस्कृतिमे 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (C) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७७७. 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (D) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार

७७८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'अर्थशास्त्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) ग्राम्य अर्थव्यवस्था
- (B) हरवाही
- (C) गाम
- (D) चरवाही

७७९. परीक्षा-उत्तरमे 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल
- (B) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (C) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (D) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग

७८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) दमन सहैत जन-साधारण
- (B) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल
- (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७८१. समाज-संस्कृतिमे 'न्याय-संस्कृति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य
- (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७८२. 'न्याय-संस्कृति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य
- (C) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (D) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास

७८३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'मूल्य' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरवाही
- (B) चरवाही
- (C) गाम
- (D) न्याय-संस्कृति

७८४. परीक्षा-उत्तरमे 'न्याय-संस्कृति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (B) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (C) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य
- (D) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग

७८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'न्याय-संस्कृति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (B) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न

७८६. समाज-संस्कृतिमे 'पारिवारिक सम्बन्ध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (C) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका
- (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय

७८७. 'पारिवारिक सम्बन्ध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (D) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका

७८८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'सम्बन्ध' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) पारिवारिक सम्बन्ध
- (B) गाम
- (C) हरवाही
- (D) चरवाही

७८९. परीक्षा-उत्तरमे 'पारिवारिक सम्बन्ध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (C) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (D) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका

७९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'पारिवारिक सम्बन्ध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (B) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था

७९१. समाज-संस्कृतिमे 'लोक-आस्था'क सही पहिचान की अछि?

- (A) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (B) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत
- (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (D) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक

७९२. 'लोक-आस्था' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास
- (B) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक
- (C) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (D) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण

७९३. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'आस्था' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) हरवाही
- (B) गाम
- (C) चरवाही
- (D) लोक-आस्था

७९४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-आस्था'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (B) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (C) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक
- (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल

७९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-आस्था'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक

७९६. समाज-संस्कृतिमे 'मिथिलाक लोकजीवन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि
- (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय
- (C) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व
- (D) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत

७९७. 'मिथिलाक लोकजीवन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार
- (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण
- (C) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व
- (D) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास

७९८. समाज-संस्कृतिक अध्ययनमे 'परिवेश' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मिथिलाक लोकजीवन
- (B) गाम
- (C) हरवाही
- (D) चरवाही

७९९. परीक्षा-उत्तरमे 'मिथिलाक लोकजीवन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग
- (B) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल
- (C) समाजक नैतिक न्याय-बोध
- (D) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व

८००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मिथिलाक लोकजीवन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न
- (B) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था
- (C) दमन सहैत जन-साधारण
- (D) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व

८०१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'चरित्र-चित्रण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम

८०२. 'चरित्र-चित्रण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८०३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) स्त्री-पात्र
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) सामाजिक प्रतिरोध
- (D) लोकगाथा-आधार

८०४. परीक्षा-उत्तरमे 'चरित्र-चित्रण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (D) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब

८०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'चरित्र-चित्रण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (B) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (C) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८०६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'लोकगाथा-आधार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार

८०७. 'लोकगाथा-आधार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (B) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (C) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (D) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम

८०८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा-आधार
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) स्त्री-पात्र
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८०९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोकगाथा-आधार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (D) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोकगाथा-आधार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (C) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८११. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'सामाजिक प्रतिरोध'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (D) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब

८१२. 'सामाजिक प्रतिरोध' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (B) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८१३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सामाजिक प्रतिरोध
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) लोकगाथा-आधार
- (D) स्त्री-पात्र

८१४. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक प्रतिरोध'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (D) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सामाजिक प्रतिरोध'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (B) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (C) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (D) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति

८१६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'स्त्री-पात्र'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (D) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब

८१७. 'स्त्री-पात्र' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (B) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (C) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८१८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) स्त्री-पात्र
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) सामाजिक प्रतिरोध
- (D) लोकगाथा-आधार

८१९. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-पात्र'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण

८२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'स्त्री-पात्र'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (B) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (C) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (D) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार

८२१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'भाषा-शैली'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (B) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (C) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८२२. 'भाषा-शैली' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८२३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) भाषा-शैली
- (B) सामाजिक प्रतिरोध
- (C) चरित्र-चित्रण
- (D) लोकगाथा-आधार

८२४. परीक्षा-उत्तरमे 'भाषा-शैली'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'भाषा-शैली'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (C) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८२६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'वीर-रस'क सही पहिचान की अछि?

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (D) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम

८२७. 'वीर-रस' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (C) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (D) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन

८२८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरित्र-चित्रण
- (B) लोकगाथा-आधार
- (C) वीर-रस
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८२९. परीक्षा-उत्तरमे 'वीर-रस'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (D) लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'वीर-रस'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (B) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (C) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (D) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन

८३१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'करुण-रस'क सही पहिचान की अछि?

- (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (B) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८३२. 'करुण-रस' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८३३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा-आधार
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) करुण-रस
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८३४. परीक्षा-उत्तरमे 'करुण-रस'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (D) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'करुण-रस'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (C) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८३६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'उपन्यास-कला'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (D) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना

८३७. 'उपन्यास-कला' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना

८३८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरित्र-चित्रण
- (B) लोकगाथा-आधार
- (C) उपन्यास-कला
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८३९. परीक्षा-उत्तरमे 'उपन्यास-कला'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण

८४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उपन्यास-कला'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (B) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (C) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८४१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'सामन्ती दमन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (B) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (C) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (D) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब

८४२. 'सामन्ती दमन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (B) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (C) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८४३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सामन्ती दमन
- (B) लोकगाथा-आधार
- (C) चरित्र-चित्रण
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८४४. परीक्षा-उत्तरमे 'सामन्ती दमन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (B) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सामन्ती दमन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक कें साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (B) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (C) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (D) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण

८४६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'शीर्षक-व्याख्या'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (D) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८४७. 'शीर्षक-व्याख्या' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८४८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'प्रश्न-विषय' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सामाजिक प्रतिरोध
- (B) लोकगाथा-आधार
- (C) शीर्षक-व्याख्या
- (D) चरित्र-चित्रण

८४९. परीक्षा-उत्तरमे 'शीर्षक-व्याख्या'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (B) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (C) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (D) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना

८५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'शीर्षक-व्याख्या'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८५१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'कथानक-सार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण

८५२. 'कथानक-सार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति

८५३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'उत्तर-रूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरित्र-चित्रण
- (B) कथानक-सार
- (C) लोकगाथा-आधार
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८५४. परीक्षा-उत्तरमे 'कथानक-सार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कथानक-सार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (B) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (C) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (D) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति

८५६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'नायक-निरूपण'क सही पहिचान की अछि?

- (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (B) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब

८५७. 'नायक-निरूपण' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (C) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (D) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब

८५८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'उत्तर-रूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सामाजिक प्रतिरोध
- (B) लोकगाथा-आधार
- (C) नायक-निरूपण
- (D) चरित्र-चित्रण

८५९. परीक्षा-उत्तरमे 'नायक-निरूपण'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (B) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'नायक-निरूपण'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (C) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (D) लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८६१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'समाज-विमर्श'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण

८६२. 'समाज-विमर्श' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (C) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८६३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'उत्तर-रूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) समाज-विमर्श
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) लोकगाथा-आधार
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८६४. परीक्षा-उत्तरमे 'समाज-विमर्श'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'समाज-विमर्श'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) लोरिक कें साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा

८६६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'लोक-संस्कृति'क सही पहिचान की अछि?

- (A) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन
- (B) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम

८६७. 'लोक-संस्कृति' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (C) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८६८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'उत्तर-रूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरित्र-चित्रण
- (B) लोकगाथा-आधार
- (C) लोक-संस्कृति
- (D) सामाजिक प्रतिरोध

८६९. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-संस्कृति'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन
- (B) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन

८७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोक-संस्कृति'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (D) लोरिक कें साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब

८७१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'तुलनात्मक दृष्टि'क सही पहिचान की अछि?

- (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (B) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (C) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध
- (D) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम

८७२. 'तुलनात्मक दृष्टि' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८७३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'उत्तर-रूप' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सामाजिक प्रतिरोध
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) लोकगाथा-आधार
- (D) तुलनात्मक दृष्टि

८७४. परीक्षा-उत्तरमे 'तुलनात्मक दृष्टि'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (B) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (C) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (D) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध

८७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'तुलनात्मक दृष्टि'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध
- (D) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब

८७६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'समापन-दृष्टि'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) विजयकें केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण

८७७. 'समापन-दृष्टि' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) विजयकें केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब
- (B) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (C) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (D) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन

८७८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'निष्कर्ष' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा-आधार
- (B) सामाजिक प्रतिरोध
- (C) समापन-दृष्टि
- (D) चरित्र-चित्रण

८७९. परीक्षा-उत्तरमे 'समापन-दृष्टि'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (B) विजयकें केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब
- (C) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (D) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना

८८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'समापन-दृष्टि'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (C) विजयकें केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब
- (D) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८८१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'आलोचनात्मक संतुलन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (C) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन
- (D) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब

८८२. 'आलोचनात्मक संतुलन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन
- (C) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८८३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'पद्धति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) चरित्र-चित्रण
- (B) सामाजिक प्रतिरोध
- (C) लोकगाथा-आधार
- (D) आलोचनात्मक संतुलन

८८४. परीक्षा-उत्तरमे 'आलोचनात्मक संतुलन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन
- (B) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (C) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण
- (D) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना

८८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'आलोचनात्मक संतुलन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (B) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (D) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन

८८६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'परीक्षा-प्रस्तावना'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (B) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय

८८७. 'परीक्षा-प्रस्तावना' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय
- (C) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८८८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'उत्तर-प्रारम्भ' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा-आधार
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) सामाजिक प्रतिरोध
- (D) परीक्षा-प्रस्तावना

८८९. परीक्षा-उत्तरमे 'परीक्षा-प्रस्तावना'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (B) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण

८९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'परीक्षा-प्रस्तावना'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (B) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय
- (C) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (D) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब

८९१. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'मूल्यांकन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय
- (B) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (D) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण

८९२. 'मूल्यांकन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (B) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (C) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन
- (D) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय

८९३. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'आलोचना' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा-आधार
- (B) चरित्र-चित्रण
- (C) सामाजिक प्रतिरोध
- (D) मूल्यांकन

८९४. परीक्षा-उत्तरमे 'मूल्यांकन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय
- (B) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (C) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (D) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण

८९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मूल्यांकन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय
- (B) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (C) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (D) लोरिकक विजयकें लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब

८९६. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिमे 'सारगर्भित निष्कर्ष'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब
- (B) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम
- (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण
- (D) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम

८९७. 'सारगर्भित निष्कर्ष' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन
- (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार
- (C) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम
- (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन

८९८. आलोचना आ परीक्षा-दृष्टिक अध्ययनमे 'उत्तर-समाप्ति' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोकगाथा-आधार
- (B) सारगर्भित निष्कर्ष
- (C) सामाजिक प्रतिरोध
- (D) चरित्र-चित्रण

८९९. परीक्षा-उत्तरमे 'सारगर्भित निष्कर्ष'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम
- (B) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन
- (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना
- (D) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण

९००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सारगर्भित निष्कर्ष'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब
- (B) लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब
- (C) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति
- (D) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम

९०१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'लोरिक'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (D) लोरिकक भ्राता

९०२. 'लोरिक' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (C) लोरिकक माता-संदर्भ
- (D) मञ्जरीक मामा-संदर्भ

९०३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) कुब्जे
- (B) लोरिक
- (C) मञ्जरी
- (D) सावर

९०४. परीक्षा-उत्तरमे 'लोरिक'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ

९०५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'लोरिक'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (C) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (D) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र

९०६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'मञ्जरी'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (D) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र

९०७. 'मञ्जरी' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (B) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (C) लोरिकक माता-संदर्भ
- (D) मञ्जरीक मामा-संदर्भ

९०८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) मञ्जरी
- (C) कुब्जे
- (D) सावर

९०९. परीक्षा-उत्तरमे 'मञ्जरी'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ

९१०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मञ्जरी'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (D) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र

९११. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'सावर'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) लोरिकक पिता-संदर्भ

९१२. 'सावर' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक भ्राता
- (B) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९१३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) मञ्जरी
- (C) कुब्बे
- (D) सावर

९१४. परीक्षा-उत्तरमे 'सावर'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ

९१५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सावर'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (D) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र

९१६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'कुब्बे'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र

९१७. 'कुब्बे' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक माता-संदर्भ
- (B) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) लोरिकक पिता-संदर्भ

९१८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मञ्जरी
- (B) लोरिक
- (C) सावर
- (D) कुब्बे

९१९. परीक्षा-उत्तरमे 'कुब्बे'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (D) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र

९२०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कुब्बे'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा

९२१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'खुलैन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक भ्राता
- (B) लोरिकक माता-संदर्भ
- (C) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (D) कथाक जन-नायक

९२२. 'खुलैन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक माता-संदर्भ
- (B) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) लोरिकक पिता-संदर्भ

९२३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) खुलैन
- (C) सावर
- (D) मञ्जरी

९२४. परीक्षा-उत्तरमे 'खुलैन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (B) लोरिकक माता-संदर्भ
- (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (D) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र

९२५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'खुलैन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९२६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'सहदेव'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र

९२७. 'सहदेव' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९२८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सहदेव
- (B) मञ्जरी
- (C) लोरिक
- (D) सावर

९२९. परीक्षा-उत्तरमे 'सहदेव'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (B) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र

९३०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सहदेव'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (B) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (C) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (D) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ

९३१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'सेवाचन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) मज्जरीक मामा-संदर्भ

९३२. 'सेवाचन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मज्जरीक मामा-संदर्भ
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९३३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मज्जरी
- (B) सावर
- (C) लोरिक
- (D) सेवाचन

९३४. परीक्षा-उत्तरमे 'सेवाचन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (B) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (D) मज्जरीक मामा-संदर्भ

९३५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सेवाचन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (B) मज्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (D) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र

९३६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'उधरा पँवार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) लोरिकक भ्राता

९३७. 'उधरा पँवार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक माता-संदर्भ
- (B) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (C) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (D) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति

९३८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) उधरा पँवार
- (B) मञ्जरी
- (C) लोरिक
- (D) सावर

९३९. परीक्षा-उत्तरमे 'उधरा पँवार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (B) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति

९४०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'उधरा पँवार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (B) न्यूनिगढ़क अत्याचारी राजा
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र

९४१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'चनैन'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र

९४२. 'चनैन' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) लोरिकक माता-संदर्भ
- (D) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र

९४३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सावर
- (B) लोरिक
- (C) चनैन
- (D) मञ्जरी

९४४. परीक्षा-उत्तरमे 'चनैन'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (B) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति

९४५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'चनैन'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (B) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र

९४६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'मोचनी'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक भ्राता
- (B) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (C) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (D) कथाक जन-नायक

९४७. 'मोचनी' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (B) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९४८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मोचनी
- (B) मञ्जरी
- (C) लोरिक
- (D) सावर

९४९. परीक्षा-उत्तरमे 'मोचनी'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (B) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र

९५०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'मोचनी'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (B) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (D) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र

९५१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'गजभीम'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र

९५२. 'गजभीम' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (B) लोरिकक माता-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र

९५३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) गजभीम
- (B) सावर
- (C) मञ्जरी
- (D) लोरिक

९५४. परीक्षा-उत्तरमे 'गजभीम'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (B) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) मञ्जरीक मामा-संदर्भ

९५५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गजभीम'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (D) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ

९५६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'हरबा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (D) कथाक जन-नायक

९५७. 'हरबा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (B) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (C) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९५८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) हरबा
- (C) सावर
- (D) मञ्जरी

९५९. परीक्षा-उत्तरमे 'हरबा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (B) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (C) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा

९६०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'हरबा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (B) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा

९६१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'घुघरा पँवार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (D) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र

९६२. 'घुघरा पँवार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (B) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९६३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) मज्जरी
- (B) सावर
- (C) लोरिक
- (D) घुघरा पँवार

९६४. परीक्षा-उत्तरमे 'घुघरा पँवार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (B) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) मज्जरीक मामा-संदर्भ

९६५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'घुघरा पँवार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (D) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ

९६६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'बरबा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) हरबाक भाई-संदर्भ

९६७. 'बरबा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक भाई-संदर्भ
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (D) लोरिकक माता-संदर्भ

९६८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) बरबा
- (B) सावर
- (C) लोरिक
- (D) मज्जरी

९६९. परीक्षा-उत्तरमे 'बरबा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (B) हरबाक भाई-संदर्भ
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) मञ्जरीक मामा-संदर्भ

९७०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'बरबा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) हरबाक भाई-संदर्भ
- (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा

९७१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'कुँवर अंगार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) हरबाक सहायक-संदर्भ
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (D) कथाक जन-नायक

९७२. 'कुँवर अंगार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) हरबाक सहायक-संदर्भ
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) लोरिकक माता-संदर्भ
- (D) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ

९७३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'पात्र' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सावर
- (B) कुँवर अंगार
- (C) लोरिक
- (D) मञ्जरी

९७४. परीक्षा-उत्तरमे 'कुँवर अंगार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (B) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) हरबाक सहायक-संदर्भ

९७५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'कुँवर अंगार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) हरबाक सहायक-संदर्भ
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा

९७६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'सिलहट अखाड़ा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक भ्राता
- (B) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल
- (C) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (D) कथाक जन-नायक

९७७. 'सिलहट अखाड़ा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) लोरिकक माता-संदर्भ
- (D) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल

९७८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'स्थान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सिलहट अखाड़ा
- (B) मञ्जरी
- (C) सावर
- (D) लोरिक

९७९. परीक्षा-उत्तरमे 'सिलहट अखाड़ा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (B) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (C) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल
- (D) मञ्जरीक मामा-संदर्भ

९८०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'सिलहट अखाड़ा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (D) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल

९८१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'अगौरा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार
- (D) कथाक जन-नायक

९८२. 'अगौरा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (B) लोरिकक माता-संदर्भ
- (C) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (D) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार

९८३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'स्थान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) सावर
- (C) मञ्जरी
- (D) अगौरा

९८४. परीक्षा-उत्तरमे 'अगौरा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मञ्जरीक मामा-संदर्भ
- (B) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति

९८५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'अगौरा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा

९८६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'गौरा'क सही पहिचान की अछि?

- (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (B) लोरिकक भ्राता
- (C) कथाक जन-नायक
- (D) मज्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ

९८७. 'गौरा' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) मज्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ
- (B) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (C) लोरिकक माता-संदर्भ
- (D) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ

९८८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'स्थान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) सावर
- (B) गौरा
- (C) लोरिक
- (D) मज्जरी

९८९. परीक्षा-उत्तरमे 'गौरा'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (B) मज्जरीक मामा-संदर्भ
- (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (D) मज्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ

९९०. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'गौरा'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (B) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (C) मज्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ
- (D) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र

९९१. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'न्यूरिगढ़'क सही पहिचान की अछि?

- (A) लोरिकक भ्राता
- (B) कथाक जन-नायक
- (C) हरबाक राज्य-संदर्भ
- (D) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र

९९२. 'न्यूरिगढ़' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ
- (B) लोरिकक माता-संदर्भ
- (C) हरबाक राज्य-संदर्भ
- (D) लोरिकक पिता-संदर्भ

९९३. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'स्थान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) न्यूरिगढ़
- (C) सावर
- (D) मज्जरी

९९४. परीक्षा-उत्तरमे 'न्यूरिगढ़'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) हरबाक राज्य-संदर्भ
- (B) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) मज्जरीक मामा-संदर्भ

९९५. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'न्यूरिगढ़'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) हरबाक राज्य-संदर्भ
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा
- (D) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ

९९६. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिमे 'हथौरी बन्दीसार'क सही पहिचान की अछि?

- (A) कथाक जन-नायक
- (B) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र
- (C) लोरिकक भ्राता
- (D) कैद आ दमनक स्थान

९९७. 'हथौरी बन्दीसार' सँ सम्बन्धित सही संकेत चुनू।

- (A) लोरिकक पिता-संदर्भ
- (B) लोरिकक माता-संदर्भ
- (C) कैद आ दमनक स्थान
- (D) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ

९९८. पात्र-प्रसंग पुनरावृत्तिक अध्ययनमे 'स्थान' पद ककरा सँ जुड़ल अछि?

- (A) लोरिक
- (B) मज्जरी
- (C) सावर
- (D) हथौरी बन्दीसार

९९९. परीक्षा-उत्तरमे 'हथौरी बन्दीसार'क उल्लेख कोना करब उचित अछि?

- (A) मज्जरीक मामा-संदर्भ
- (B) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति
- (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र
- (D) कैद आ दमनक स्थान

१०००. लोरिक-विजयक प्रसंगमे 'हथौरी बन्दीसार'क सार-वाक्य कोन अछि?

- (A) कैद आ दमनक स्थान
- (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र
- (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ
- (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा

१. (B) लोरिक-विजयक लेखक — 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म' एहि खण्डमे लोरिक-विजयक लेखक रूपमे बुझल जाएत अछि।
२. (B) लोरिक-विजयक लेखक — ई संकेत 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३. (D) ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म — एहि प्रसंगमे 'लेखक-पहिचान' सीधे 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म' सँ जुड़ैत अछि।
४. (B) लोरिक-विजयक लेखक — उत्तरमे 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५. (B) लोरिक-विजयक लेखक — 'ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६. (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम — 'मणिपद्म' एहि खण्डमे ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम रूपमे बुझल जाएत अछि।
७. (A) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम — ई संकेत 'मणिपद्म'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८. (A) मणिपद्म — एहि प्रसंगमे 'उपनाम' सीधे 'मणिपद्म' सँ जुड़ैत अछि।
९. (B) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम — उत्तरमे 'मणिपद्म' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१०. (D) ब्रजकिशोर वर्माक साहित्यिक नाम — 'मणिपद्म'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
११. (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित — 'बहेड़ा' एहि खण्डमे मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित रूपमे बुझल जाएत अछि।
१२. (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित — ई संकेत 'बहेड़ा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१३. (A) बहेड़ा — एहि प्रसंगमे 'जीवन-परिचय' सीधे 'बहेड़ा' सँ जुड़ैत अछि।
१४. (D) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित — उत्तरमे 'बहेड़ा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१५. (C) मणिपद्मक जन्म-स्थानक रूपमे चर्चित — 'बहेड़ा'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१६. (B) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय — '१९१८-१९८६' एहि खण्डमे मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय रूपमे बुझल जाएत अछि।
१७. (A) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय — ई संकेत '१९१८-१९८६'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१८. (B) १९१८-१९८६ — एहि प्रसंगमे 'जीवन-काल' सीधे '१९१८-१९८६' सँ जुड़ैत अछि।
१९. (D) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय — उत्तरमे '१९१८-१९८६' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२०. (C) मणिपद्मक जीवन-कालक रूपमे मानल गेल समय — '१९१८-१९८६'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२१. (A) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति — 'नैका बनिजारा' एहि खण्डमे साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति रूपमे बुझल जाएत अछि।
२२. (C) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति — ई संकेत 'नैका बनिजारा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२३. (C) नैका बनिजारा — एहि प्रसंगमे 'सम्मानित कृति' सीधे 'नैका बनिजारा' सँ जुड़ैत अछि।
२४. (A) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति — उत्तरमे 'नैका बनिजारा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२५. (D) साहित्य अकादेमी सम्मानसँ जुड़ल मणिपद्मक कृति — 'नैका बनिजारा'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२६. (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष — '१९७३' एहि खण्डमे नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष रूपमे बुझल जाएत अछि।
२७. (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष — ई संकेत '१९७३'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२८. (C) १९७३ — एहि प्रसंगमे 'सम्मान-वर्ष' सीधे '१९७३' सँ जुड़ैत अछि।
२९. (C) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष — उत्तरमे '१९७३' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३०. (A) नैका बनिजारा लेल साहित्य अकादेमी सम्मानक वर्ष — '१९७३'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३१. (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा — 'उपन्यास' एहि खण्डमे लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा रूपमे बुझल जाएत अछि।

३२. (B) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा — ई संकेत 'उपन्यास'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३३. (C) उपन्यास — एहि प्रसंगमे 'विधा' सीधे 'उपन्यास' सँ जुड़ैत अछि।
३४. (A) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा — उत्तरमे 'उपन्यास' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३५. (D) लोरिक-विजयक प्रमुख साहित्यिक विधा — 'उपन्यास'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३६. (C) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम — 'ऐतिहासिक उपन्यास' एहि खण्डमे इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम रूपमे बुझल जाएत अछि।
३७. (B) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम — ई संकेत 'ऐतिहासिक उपन्यास'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३८. (D) ऐतिहासिक उपन्यास — एहि प्रसंगमे 'विधा-स्वरूप' सीधे 'ऐतिहासिक उपन्यास' सँ जुड़ैत अछि।
३९. (D) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम — उत्तरमे 'ऐतिहासिक उपन्यास' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४०. (A) इतिहास-संवेदना आ कथारूपक संगम — 'ऐतिहासिक उपन्यास'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४१. (B) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार — 'लोकगाथा' एहि खण्डमे लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार रूपमे बुझल जाएत अछि।
४२. (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार — ई संकेत 'लोकगाथा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४३. (A) लोकगाथा — एहि प्रसंगमे 'आधार' सीधे 'लोकगाथा' सँ जुड़ैत अछि।
४४. (D) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार — उत्तरमे 'लोकगाथा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४५. (A) लोरिक-विजयक प्रधान कथ्य-आधार — 'लोकगाथा'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४६. (B) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित — '१९७०' एहि खण्डमे लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित रूपमे बुझल जाएत अछि।
४७. (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित — ई संकेत '१९७०'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४८. (A) १९७० — एहि प्रसंगमे 'प्रकाशन-वर्ष' सीधे '१९७०' सँ जुड़ैत अछि।
४९. (D) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित — उत्तरमे '१९७०' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५०. (A) लोरिक-विजयक पहिल संस्करणक वर्ष रूपमे उल्लिखित — '१९७०'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५१. (B) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था — 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद' एहि खण्डमे लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था रूपमे बुझल जाएत अछि।
५२. (D) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था — ई संकेत 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५३. (C) मिथिला सांस्कृतिक परिषद — एहि प्रसंगमे 'प्रकाशन-संस्था' सीधे 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद' सँ जुड़ैत अछि।
५४. (A) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था — उत्तरमे 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५५. (C) लोरिक-विजयक आरम्भिक प्रकाशनसँ जुड़ल संस्था — 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५६. (D) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर — 'कोलकाता' एहि खण्डमे आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर रूपमे बुझल जाएत अछि।
५७. (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर — ई संकेत 'कोलकाता'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५८. (C) कोलकाता — एहि प्रसंगमे 'प्रकाशन-ठाम' सीधे 'कोलकाता' सँ जुड़ैत अछि।
५९. (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर — उत्तरमे 'कोलकाता' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६०. (A) आरम्भिक प्रकाशन-संदर्भसँ जुड़ल नगर — 'कोलकाता'क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६१. (A) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान — 'मैथिली उपन्यास' एहि खण्डमे कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान रूपमे बुझल जाएत अछि।
६२. (C) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान — ई संकेत 'मैथिली उपन्यास'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६३. (A) मैथिली उपन्यास — एहि प्रसंगमे 'साहित्यिक वर्ग' सीधे 'मैथिली उपन्यास' सँ जुड़ैत अछि।
६४. (B) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान — उत्तरमे 'मैथिली उपन्यास' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।

६५. (A) कृतिक भाषा आ विधा-पहिचान — ‘मैथिली उपन्यास’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६६. (A) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर — ‘लोक-संग्राम’ एहि खण्डमे कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर रूपमे बुझल जाएत अछि।
६७. (A) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर — ई संकेत ‘लोक-संग्राम’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६८. (C) लोक-संग्राम — एहि प्रसंगमे ‘धीम’ सीधे ‘लोक-संग्राम’ सँ जुड़ैत अछि।
६९. (A) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर — उत्तरमे ‘लोक-संग्राम’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७०. (B) कृतिक सामाजिक चेतनाक मूल स्वर — ‘लोक-संग्राम’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७१. (A) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत — ‘जन-नायकत्व’ एहि खण्डमे लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत रूपमे बुझल जाएत अछि।
७२. (C) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत — ई संकेत ‘जन-नायकत्व’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७३. (D) जन-नायकत्व — एहि प्रसंगमे ‘चरित्र-संकेत’ सीधे ‘जन-नायकत्व’ सँ जुड़ैत अछि।
७४. (B) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत — उत्तरमे ‘जन-नायकत्व’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७५. (D) लोरिकक चरित्रक केन्द्रीय संकेत — ‘जन-नायकत्व’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७६. (C) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक — ‘कोब्रागर्ल’ एहि खण्डमे मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक रूपमे बुझल जाएत अछि।
७७. (B) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक — ई संकेत ‘कोब्रागर्ल’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७८. (A) कोब्रागर्ल — एहि प्रसंगमे ‘रचना-सूची’ सीधे ‘कोब्रागर्ल’ सँ जुड़ैत अछि।
७९. (C) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक — उत्तरमे ‘कोब्रागर्ल’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८०. (B) मणिपद्मक अन्य चर्चित उपन्यासमे एक — ‘कोब्रागर्ल’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८१. (D) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति — ‘कनकी’ एहि खण्डमे मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति रूपमे बुझल जाएत अछि।
८२. (A) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति — ई संकेत ‘कनकी’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८३. (A) कनकी — एहि प्रसंगमे ‘रचना-सूची’ सीधे ‘कनकी’ सँ जुड़ैत अछि।
८४. (D) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति — उत्तरमे ‘कनकी’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८५. (D) मणिपद्मक रचना-सूचीमे भेटयवाली कृति — ‘कनकी’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८६. (C) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति — ‘अर्द्धनारीश्वर’ एहि खण्डमे मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति रूपमे बुझल जाएत अछि।
८७. (A) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति — ई संकेत ‘अर्द्धनारीश्वर’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८८. (C) अर्द्धनारीश्वर — एहि प्रसंगमे ‘रचना-सूची’ सीधे ‘अर्द्धनारीश्वर’ सँ जुड़ैत अछि।
८९. (B) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति — उत्तरमे ‘अर्द्धनारीश्वर’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९०. (B) मणिपद्मक उपन्यास-संसारसँ जुड़ल कृति — ‘अर्द्धनारीश्वर’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९१. (B) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम — ‘लवहरि-कुशहरि’ एहि खण्डमे मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम रूपमे बुझल जाएत अछि।
९२. (D) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम — ई संकेत ‘लवहरि-कुशहरि’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९३. (A) लवहरि-कुशहरि — एहि प्रसंगमे ‘रचना-सूची’ सीधे ‘लवहरि-कुशहरि’ सँ जुड़ैत अछि।
९४. (A) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम — उत्तरमे ‘लवहरि-कुशहरि’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९५. (B) मणिपद्मक अन्य उपन्यासक नाम — ‘लवहरि-कुशहरि’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९६. (D) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति — ‘कंठहार’ एहि खण्डमे मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति रूपमे बुझल जाएत अछि।
९७. (D) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति — ई संकेत ‘कंठहार’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९८. (D) कंठहार — एहि प्रसंगमे ‘नाटक’ सीधे ‘कंठहार’ सँ जुड़ैत अछि।
९९. (B) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति — उत्तरमे ‘कंठहार’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१००. (B) मणिपद्मक नाटकक रूपमे उल्लिखित कृति — ‘कंठहार’क सार कृतिक लेखक आ कृति-परिचय बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

१०१. (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा — ‘मौखिक परम्परा’ एहि खण्डमे लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा रूपमे बुझल जाएत अछि।
१०२. (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा — ई संकेत ‘मौखिक परम्परा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१०३. (C) मौखिक परम्परा — एहि प्रसंगमे ‘परम्परा’ सीधे ‘मौखिक परम्परा’ सँ जुड़ैत अछि।
१०४. (C) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा — उत्तरमे ‘मौखिक परम्परा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१०५. (B) लोकक मुँहसँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत कथा-धारा — ‘मौखिक परम्परा’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१०६. (C) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा — ‘लोकगाथा’ एहि खण्डमे जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा रूपमे बुझल जाएत अछि।
१०७. (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा — ई संकेत ‘लोकगाथा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१०८. (A) लोकगाथा — एहि प्रसंगमे ‘कथ्य’ सीधे ‘लोकगाथा’ सँ जुड़ैत अछि।
१०९. (B) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा — उत्तरमे ‘लोकगाथा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
११०. (A) जन-स्मृति, वीरता आ सामूहिक अनुभवक दीर्घ कथा — ‘लोकगाथा’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१११. (C) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया — ‘कथा-रूपान्तरण’ एहि खण्डमे लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया रूपमे बुझल जाएत अछि।
११२. (C) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया — ई संकेत ‘कथा-रूपान्तरण’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
११३. (A) कथा-रूपान्तरण — एहि प्रसंगमे ‘रूपान्तरण’ सीधे ‘कथा-रूपान्तरण’ सँ जुड़ैत अछि।
११४. (D) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया — उत्तरमे ‘कथा-रूपान्तरण’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
११५. (C) लोककथ्यकेँ उपन्यासक संरचना देबाक प्रक्रिया — ‘कथा-रूपान्तरण’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
११६. (C) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव — ‘जन-स्मृति’ एहि खण्डमे लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव रूपमे बुझल जाएत अछि।
११७. (C) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव — ई संकेत ‘जन-स्मृति’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
११८. (D) जन-स्मृति — एहि प्रसंगमे ‘स्मृति’ सीधे ‘जन-स्मृति’ सँ जुड़ैत अछि।
११९. (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव — उत्तरमे ‘जन-स्मृति’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१२०. (B) लोक-समुदायक सामूहिक याद आ अनुभव — ‘जन-स्मृति’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१२१. (D) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप — ‘वीरगाथा’ एहि खण्डमे पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप रूपमे बुझल जाएत अछि।
१२२. (C) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप — ई संकेत ‘वीरगाथा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१२३. (C) वीरगाथा — एहि प्रसंगमे ‘गाथा’ सीधे ‘वीरगाथा’ सँ जुड़ैत अछि।
१२४. (B) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप — उत्तरमे ‘वीरगाथा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१२५. (B) पराक्रम आ संघर्ष केन्द्रित लोककथा-रूप — ‘वीरगाथा’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१२६. (D) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि — ‘लोकगायन’ एहि खण्डमे गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि रूपमे बुझल जाएत अछि।
१२७. (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि — ई संकेत ‘लोकगायन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१२८. (A) लोकगायन — एहि प्रसंगमे ‘प्रसार’ सीधे ‘लोकगायन’ सँ जुड़ैत अछि।
१२९. (A) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि — उत्तरमे ‘लोकगायन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१३०. (C) गीत आ कथन द्वारा गाथा प्रसारित करबाक विधि — ‘लोकगायन’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१३१. (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार — ‘गाथात्मकता’ एहि खण्डमे घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार रूपमे बुझल जाएत अछि।
१३२. (A) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार — ई संकेत ‘गाथात्मकता’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।

१३३. (B) गाथात्मकता — एहि प्रसंगमे 'शैली' सीधे 'गाथात्मकता' सँ जुड़ैत अछि।
१३४. (C) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार — उत्तरमे 'गाथात्मकता' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१३५. (B) घटना, वीरता आ पुनरावृत्तिसँ बनल कथात्मक विस्तार — 'गाथात्मकता'क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१३६. (A) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार — 'ग्राम्य अनुभव' एहि खण्डमे गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार रूपमे बुझल जाएत अछि।
१३७. (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार — ई संकेत 'ग्राम्य अनुभव'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१३८. (C) ग्राम्य अनुभव — एहि प्रसंगमे 'समाज' सीधे 'ग्राम्य अनुभव' सँ जुड़ैत अछि।
१३९. (B) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार — उत्तरमे 'ग्राम्य अनुभव' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१४०. (C) गामक श्रम, भय, प्रेम आ संघर्षक जीवन-संसार — 'ग्राम्य अनुभव'क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१४१. (C) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध — 'लोक-इतिहास' एहि खण्डमे दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध रूपमे बुझल जाएत अछि।
१४२. (D) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध — ई संकेत 'लोक-इतिहास'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१४३. (B) लोक-इतिहास — एहि प्रसंगमे 'इतिहास' सीधे 'लोक-इतिहास' सँ जुड़ैत अछि।
१४४. (A) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध — उत्तरमे 'लोक-इतिहास' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१४५. (C) दस्तावेजसँ बाहर बचल जन-अनुभवक इतिहास-बोध — 'लोक-इतिहास'क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१४६. (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब — 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण' एहि खण्डमे लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब रूपमे बुझल जाएत अछि।
१४७. (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब — ई संकेत 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१४८. (D) सर्जनात्मक पुनर्निर्माण — एहि प्रसंगमे 'रचना' सीधे 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण' सँ जुड़ैत अछि।
१४९. (B) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब — उत्तरमे 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१५०. (A) लेखक द्वारा लोककथाकेँ नव साहित्यिक रूप देब — 'सर्जनात्मक पुनर्निर्माण'क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१५१. (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा — 'कथ्य-संरचना' एहि खण्डमे घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा रूपमे बुझल जाएत अछि।
१५२. (B) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा — ई संकेत 'कथ्य-संरचना'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१५३. (A) कथ्य-संरचना — एहि प्रसंगमे 'रचना-कला' सीधे 'कथ्य-संरचना' सँ जुड़ैत अछि।
१५४. (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा — उत्तरमे 'कथ्य-संरचना' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१५५. (D) घटना, पात्र आ संघर्षकेँ क्रमबद्ध करबाक ढाँचा — 'कथ्य-संरचना'क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१५६. (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार — 'लोकविश्वास' एहि खण्डमे देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार रूपमे बुझल जाएत अछि।
१५७. (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार — ई संकेत 'लोकविश्वास'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (D) लोकविश्वास — एहि प्रसंगमे 'विश्वास' सीधे 'लोकविश्वास' सँ जुड़ैत अछि।
१५९. (D) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार — उत्तरमे 'लोकविश्वास' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१६०. (B) देवी, स्वप्न, प्रतिज्ञा आ चमत्कारी आशाक सांस्कृतिक आधार — 'लोकविश्वास'क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१६१. (C) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र — 'जन-नायक' एहि खण्डमे लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
१६२. (A) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र — ई संकेत 'जन-नायक'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।

१६३. (A) जन-नायक — एहि प्रसंगमे ‘नायकत्व’ सीधे ‘जन-नायक’ सँ जुड़ैत अछि।
१६४. (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र — उत्तरमे ‘जन-नायक’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१६५. (D) लोकक पक्षमे अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेल पात्र — ‘जन-नायक’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१६६. (C) लोकक साझा पीड़ा आ आशा — ‘सामूहिक संवेदना’ एहि खण्डमे लोकक साझा पीड़ा आ आशा रूपमे बुझल जाएत अछि।
१६७. (A) लोकक साझा पीड़ा आ आशा — ई संकेत ‘सामूहिक संवेदना’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१६८. (B) सामूहिक संवेदना — एहि प्रसंगमे ‘भाव’ सीधे ‘सामूहिक संवेदना’ सँ जुड़ैत अछि।
१६९. (C) लोकक साझा पीड़ा आ आशा — उत्तरमे ‘सामूहिक संवेदना’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१७०. (A) लोकक साझा पीड़ा आ आशा — ‘सामूहिक संवेदना’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१७१. (A) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल — ‘मिथिला-परिवेश’ एहि खण्डमे कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल रूपमे बुझल जाएत अछि।
१७२. (C) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल — ई संकेत ‘मिथिला-परिवेश’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१७३. (C) मिथिला-परिवेश — एहि प्रसंगमे ‘परिवेश’ सीधे ‘मिथिला-परिवेश’ सँ जुड़ैत अछि।
१७४. (B) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल — उत्तरमे ‘मिथिला-परिवेश’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१७५. (D) कथाकेँ स्थानीय समाज आ भाषा सँ जोड़यवला धरातल — ‘मिथिला-परिवेश’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१७६. (C) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति — ‘कथावाचक परम्परा’ एहि खण्डमे कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति रूपमे बुझल जाएत अछि।
१७७. (D) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति — ई संकेत ‘कथावाचक परम्परा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१७८. (A) कथावाचक परम्परा — एहि प्रसंगमे ‘कथन’ सीधे ‘कथावाचक परम्परा’ सँ जुड़ैत अछि।
१७९. (C) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति — उत्तरमे ‘कथावाचक परम्परा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१८०. (A) कथा सुनाबय आ आगाँ बढ़ाबयवाली लोक-रीति — ‘कथावाचक परम्परा’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१८१. (D) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ — ‘उपन्यास-विस्तार’ एहि खण्डमे छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ रूपमे बुझल जाएत अछि।
१८२. (B) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ — ई संकेत ‘उपन्यास-विस्तार’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१८३. (C) उपन्यास-विस्तार — एहि प्रसंगमे ‘विस्तार’ सीधे ‘उपन्यास-विस्तार’ सँ जुड़ैत अछि।
१८४. (D) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ — उत्तरमे ‘उपन्यास-विस्तार’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१८५. (D) छिटपुट लोककथ्यकेँ विस्तृत कथानकमे बदलनाइ — ‘उपन्यास-विस्तार’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१८६. (C) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध — ‘लोक-न्याय’ एहि खण्डमे जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध रूपमे बुझल जाएत अछि।
१८७. (D) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध — ई संकेत ‘लोक-न्याय’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (D) लोक-न्याय — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘लोक-न्याय’ सँ जुड़ैत अछि।
१८९. (A) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध — उत्तरमे ‘लोक-न्याय’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१९०. (C) जनसाधारणक नैतिक न्याय-बोध — ‘लोक-न्याय’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१९१. (B) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार — ‘समाज-विमर्श’ एहि खण्डमे कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार रूपमे बुझल जाएत अछि।
१९२. (C) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार — ई संकेत ‘समाज-विमर्श’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१९३. (A) समाज-विमर्श — एहि प्रसंगमे ‘आलोचना’ सीधे ‘समाज-विमर्श’ सँ जुड़ैत अछि।
१९४. (A) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार — उत्तरमे ‘समाज-विमर्श’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१९५. (A) कथामे शोषण, स्त्री-गरिमा आ सत्ता पर विचार — ‘समाज-विमर्श’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

१९६. (C) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा — ‘संघर्ष-कथा’ एहि खण्डमे नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा रूपमे बुझल जाएत अछि।
१९७. (C) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा — ई संकेत ‘संघर्ष-कथा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१९८. (A) संघर्ष-कथा — एहि प्रसंगमे ‘थीम’ सीधे ‘संघर्ष-कथा’ सँ जुड़ैत अछि।
१९९. (C) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा — उत्तरमे ‘संघर्ष-कथा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२००. (B) नायक आ अत्याचारी शक्तिक टकराव पर आधारित कथा — ‘संघर्ष-कथा’क सार कृतिक लोकगाथा सँ उपन्यास बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२०१. (A) जन-नायक आ वीर योद्धा — ‘लोरिक’ एहि खण्डमे जन-नायक आ वीर योद्धा रूपमे बुझल जाएत अछि।
२०२. (A) जन-नायक आ वीर योद्धा — ई संकेत ‘लोरिक’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२०३. (A) लोरिक — एहि प्रसंगमे ‘नायक’ सीधे ‘लोरिक’ सँ जुड़ैत अछि।
२०४. (D) जन-नायक आ वीर योद्धा — उत्तरमे ‘लोरिक’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२०५. (D) जन-नायक आ वीर योद्धा — ‘लोरिक’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२०६. (D) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ — ‘यादव कुल’ एहि खण्डमे लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
२०७. (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ — ई संकेत ‘यादव कुल’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२०८. (C) यादव कुल — एहि प्रसंगमे ‘कुल-पहिचान’ सीधे ‘यादव कुल’ सँ जुड़ैत अछि।
२०९. (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ — उत्तरमे ‘यादव कुल’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२१०. (B) लोरिकक लोक-पहिचानसँ जुड़ल कुल-संदर्भ — ‘यादव कुल’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२११. (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र — ‘कुब्जे’ एहि खण्डमे लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
२१२. (D) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र — ई संकेत ‘कुब्जे’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२१३. (B) कुब्जे — एहि प्रसंगमे ‘पिता-संदर्भ’ सीधे ‘कुब्जे’ सँ जुड़ैत अछि।
२१४. (A) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र — उत्तरमे ‘कुब्जे’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२१५. (B) लोरिकक पितासँ जुड़ल पात्र — ‘कुब्जे’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२१६. (C) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र — ‘खुलैन’ एहि खण्डमे लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
२१७. (C) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र — ई संकेत ‘खुलैन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२१८. (D) खुलैन — एहि प्रसंगमे ‘माता-संदर्भ’ सीधे ‘खुलैन’ सँ जुड़ैत अछि।
२१९. (A) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र — उत्तरमे ‘खुलैन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२२०. (D) लोरिकक मातासँ जुड़ल पात्र — ‘खुलैन’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२२१. (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर — ‘सावर’ एहि खण्डमे लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर रूपमे बुझल जाएत अछि।
२२२. (C) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर — ई संकेत ‘सावर’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२२३. (A) सावर — एहि प्रसंगमे ‘भ्राता’ सीधे ‘सावर’ सँ जुड़ैत अछि।
२२४. (B) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर — उत्तरमे ‘सावर’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२२५. (A) लोरिकक भ्राता आ पराक्रमी सहचर — ‘सावर’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२२६. (C) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग — ‘माँ दुर्गाक आशीर्वाद’ एहि खण्डमे वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग रूपमे बुझल जाएत अछि।
२२७. (C) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग — ई संकेत ‘माँ दुर्गाक आशीर्वाद’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२२८. (D) माँ दुर्गाक आशीर्वाद — एहि प्रसंगमे ‘भक्ति’ सीधे ‘माँ दुर्गाक आशीर्वाद’ सँ जुड़ैत अछि।
२२९. (B) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग — उत्तरमे ‘माँ दुर्गाक आशीर्वाद’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२३०. (D) वीर-संतान प्राप्तिक लोकविश्वासक प्रसंग — ‘माँ दुर्गाक आशीर्वाद’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

२३१. (A) मानवीय नायकत्वक आधार — ‘साधारण जन्म’ एहि खण्डमे मानवीय नायकत्वक आधार रूपमे बुझल जाएत अछि।
२३२. (D) मानवीय नायकत्वक आधार — ई संकेत ‘साधारण जन्म’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२३३. (D) साधारण जन्म — एहि प्रसंगमे ‘मानवीयता’ सीधे ‘साधारण जन्म’ सँ जुड़ैत अछि।
२३४. (D) मानवीय नायकत्वक आधार — उत्तरमे ‘साधारण जन्म’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२३५. (A) मानवीय नायकत्वक आधार — ‘साधारण जन्म’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२३६. (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा — ‘जन-रक्षा’ एहि खण्डमे लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा रूपमे बुझल जाएत अछि।
२३७. (B) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा — ई संकेत ‘जन-रक्षा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२३८. (C) जन-रक्षा — एहि प्रसंगमे ‘कर्तव्य’ सीधे ‘जन-रक्षा’ सँ जुड़ैत अछि।
२३९. (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा — उत्तरमे ‘जन-रक्षा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२४०. (A) लोरिकक प्रतिज्ञा आ कर्तव्यक दिशा — ‘जन-रक्षा’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२४१. (B) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति — ‘वीरता’ एहि खण्डमे अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति रूपमे बुझल जाएत अछि।
२४२. (C) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति — ई संकेत ‘वीरता’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२४३. (B) वीरता — एहि प्रसंगमे ‘गुण’ सीधे ‘वीरता’ सँ जुड़ैत अछि।
२४४. (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति — उत्तरमे ‘वीरता’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२४५. (A) अत्याचारक विरुद्ध संघर्षक शक्ति — ‘वीरता’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२४६. (C) बलकेँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ — ‘न्याय-बोध’ एहि खण्डमे बलकेँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ रूपमे बुझल जाएत अछि।
२४७. (B) बलकेँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ — ई संकेत ‘न्याय-बोध’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२४८. (B) न्याय-बोध — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘न्याय-बोध’ सँ जुड़ैत अछि।
२४९. (D) बलकेँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ — उत्तरमे ‘न्याय-बोध’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२५०. (D) बलकेँ लोक-कल्याणमे लगाबयवला नैतिक समझ — ‘न्याय-बोध’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२५१. (D) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति — ‘पराक्रम’ एहि खण्डमे युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति रूपमे बुझल जाएत अछि।
२५२. (C) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति — ई संकेत ‘पराक्रम’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२५३. (C) पराक्रम — एहि प्रसंगमे ‘गुण’ सीधे ‘पराक्रम’ सँ जुड़ैत अछि।
२५४. (B) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति — उत्तरमे ‘पराक्रम’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२५५. (D) युद्ध आ मल्लयुद्धमे प्रकट शक्ति — ‘पराक्रम’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२५६. (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प — ‘प्रतिज्ञा’ एहि खण्डमे जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प रूपमे बुझल जाएत अछि।
२५७. (A) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प — ई संकेत ‘प्रतिज्ञा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२५८. (D) प्रतिज्ञा — एहि प्रसंगमे ‘संकल्प’ सीधे ‘प्रतिज्ञा’ सँ जुड़ैत अछि।
२५९. (D) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प — उत्तरमे ‘प्रतिज्ञा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२६०. (B) जन-साधारणक रक्षा लेल लेल संकल्प — ‘प्रतिज्ञा’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२६१. (B) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत — ‘खण्डा’ एहि खण्डमे लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत रूपमे बुझल जाएत अछि।
२६२. (D) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत — ई संकेत ‘खण्डा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२६३. (A) खण्डा — एहि प्रसंगमे ‘अस्त्र’ सीधे ‘खण्डा’ सँ जुड़ैत अछि।
२६४. (D) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत — उत्तरमे ‘खण्डा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२६५. (A) लोरिकक वीरता आ प्रतिरोधक अस्त्र-संकेत — ‘खण्डा’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

२६६. (B) मल्लयुद्धक दौंव-पेंचमे दक्षता — ‘अखाड़ा-कौशल’ एहि खण्डमे मल्लयुद्धक दौंव-पेंचमे दक्षता रूपमे बुझल जाएत अछि।
२६७. (D) मल्लयुद्धक दौंव-पेंचमे दक्षता — ई संकेत ‘अखाड़ा-कौशल’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२६८. (C) अखाड़ा-कौशल — एहि प्रसंगमे ‘कौशल’ सीधे ‘अखाड़ा-कौशल’ सँ जुड़ैत अछि।
२६९. (D) मल्लयुद्धक दौंव-पेंचमे दक्षता — उत्तरमे ‘अखाड़ा-कौशल’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२७०. (B) मल्लयुद्धक दौंव-पेंचमे दक्षता — ‘अखाड़ा-कौशल’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२७१. (D) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप — ‘लोकविश्वास’ एहि खण्डमे जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप रूपमे बुझल जाएत अछि।
२७२. (C) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप — ई संकेत ‘लोकविश्वास’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२७३. (C) लोकविश्वास — एहि प्रसंगमे ‘स्वीकृति’ सीधे ‘लोकविश्वास’ सँ जुड़ैत अछि।
२७४. (A) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप — उत्तरमे ‘लोकविश्वास’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२७५. (A) जनक नजरिमे नायकक उद्धारक रूप — ‘लोकविश्वास’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२७६. (A) नायकक भावनात्मक जटिलता — ‘मानवीय आकर्षण’ एहि खण्डमे नायकक भावनात्मक जटिलता रूपमे बुझल जाएत अछि।
२७७. (A) नायकक भावनात्मक जटिलता — ई संकेत ‘मानवीय आकर्षण’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२७८. (D) मानवीय आकर्षण — एहि प्रसंगमे ‘चरित्र’ सीधे ‘मानवीय आकर्षण’ सँ जुड़ैत अछि।
२७९. (C) नायकक भावनात्मक जटिलता — उत्तरमे ‘मानवीय आकर्षण’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२८०. (D) नायकक भावनात्मक जटिलता — ‘मानवीय आकर्षण’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२८१. (B) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा — ‘दमन-विरोध’ एहि खण्डमे लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा रूपमे बुझल जाएत अछि।
२८२. (C) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा — ई संकेत ‘दमन-विरोध’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२८३. (C) दमन-विरोध — एहि प्रसंगमे ‘थीम’ सीधे ‘दमन-विरोध’ सँ जुड़ैत अछि।
२८४. (B) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा — उत्तरमे ‘दमन-विरोध’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२८५. (C) लोरिकक चरित्रक सामाजिक दिशा — ‘दमन-विरोध’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२८६. (B) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता — ‘असहाय-रक्षा’ एहि खण्डमे पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता रूपमे बुझल जाएत अछि।
२८७. (C) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता — ई संकेत ‘असहाय-रक्षा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२८८. (B) असहाय-रक्षा — एहि प्रसंगमे ‘करुणा’ सीधे ‘असहाय-रक्षा’ सँ जुड़ैत अछि।
२८९. (D) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता — उत्तरमे ‘असहाय-रक्षा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२९०. (C) पीड़ित लोकक पक्षमे नायकक सक्रियता — ‘असहाय-रक्षा’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२९१. (B) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा — ‘जनप्रियता’ एहि खण्डमे लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा रूपमे बुझल जाएत अछि।
२९२. (C) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा — ई संकेत ‘जनप्रियता’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२९३. (C) जनप्रियता — एहि प्रसंगमे ‘प्रतिष्ठा’ सीधे ‘जनप्रियता’ सँ जुड़ैत अछि।
२९४. (A) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा — उत्तरमे ‘जनप्रियता’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
२९५. (A) लोकक भरोसा आ जयघोषसँ बनल प्रतिष्ठा — ‘जनप्रियता’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
२९६. (A) वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति — ‘नैतिक बल’ एहि खण्डमे वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति रूपमे बुझल जाएत अछि।
२९७. (B) वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति — ई संकेत ‘नैतिक बल’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
२९८. (A) नैतिक बल — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘नैतिक बल’ सँ जुड़ैत अछि।
२९९. (C) वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति — उत्तरमे ‘नैतिक बल’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३००. (A) वीरता केँ न्यायसँ जोड़यवला आन्तरिक शक्ति — ‘नैतिक बल’क सार कृतिक लोरिकक चरित्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

३०१. (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र — ‘मञ्जरी’ एहि खण्डमे सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
३०२. (B) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र — ई संकेत ‘मञ्जरी’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३०३. (D) मञ्जरी — एहि प्रसंगमे ‘स्त्री-पात्र’ सीधे ‘मञ्जरी’ सँ जुड़ैत अछि।
३०४. (C) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र — उत्तरमे ‘मञ्जरी’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३०५. (A) सौन्दर्य, मर्यादा आ आत्मरक्षाक केन्द्रीय स्त्री-पात्र — ‘मञ्जरी’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३०६. (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष — ‘सतीत्व-रक्षा’ एहि खण्डमे स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष रूपमे बुझल जाएत अछि।
३०७. (A) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष — ई संकेत ‘सतीत्व-रक्षा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३०८. (C) सतीत्व-रक्षा — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘सतीत्व-रक्षा’ सँ जुड़ैत अछि।
३०९. (B) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष — उत्तरमे ‘सतीत्व-रक्षा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३१०. (C) स्त्रीक गरिमा आ आत्मसम्मान बचाबयक संघर्ष — ‘सतीत्व-रक्षा’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३११. (A) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ — ‘सेवाचन’ एहि खण्डमे मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
३१२. (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ — ई संकेत ‘सेवाचन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३१३. (A) सेवाचन — एहि प्रसंगमे ‘परिजन’ सीधे ‘सेवाचन’ सँ जुड़ैत अछि।
३१४. (B) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ — उत्तरमे ‘सेवाचन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३१५. (D) मञ्जरी लेल अत्याचारी केँ हराबयवला वर खोजयवला मामा-संदर्भ — ‘सेवाचन’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३१६. (C) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट — ‘उधरा पँवारक भय’ एहि खण्डमे मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट रूपमे बुझल जाएत अछि।
३१७. (C) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट — ई संकेत ‘उधरा पँवारक भय’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३१८. (B) उधरा पँवारक भय — एहि प्रसंगमे ‘संकट’ सीधे ‘उधरा पँवारक भय’ सँ जुड़ैत अछि।
३१९. (D) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट — उत्तरमे ‘उधरा पँवारक भय’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३२०. (B) मञ्जरीक सुरक्षा पर सामन्ती संकट — ‘उधरा पँवारक भय’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३२१. (A) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना — ‘विवाह-प्रसंग’ एहि खण्डमे प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना रूपमे बुझल जाएत अछि।
३२२. (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना — ई संकेत ‘विवाह-प्रसंग’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३२३. (C) विवाह-प्रसंग — एहि प्रसंगमे ‘घटना’ सीधे ‘विवाह-प्रसंग’ सँ जुड़ैत अछि।
३२४. (D) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना — उत्तरमे ‘विवाह-प्रसंग’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३२५. (B) प्रेम, सामाजिक सुरक्षा आ वीरता जोड़यवला घटना — ‘विवाह-प्रसंग’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३२६. (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत — ‘सिन्दूरदान’ एहि खण्डमे मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत रूपमे बुझल जाएत अछि।
३२७. (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत — ई संकेत ‘सिन्दूरदान’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३२८. (A) सिन्दूरदान — एहि प्रसंगमे ‘संस्कार’ सीधे ‘सिन्दूरदान’ सँ जुड़ैत अछि।
३२९. (A) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत — उत्तरमे ‘सिन्दूरदान’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३३०. (D) मञ्जरी आ लोरिकक वैवाहिक सम्बन्धक संकेत — ‘सिन्दूरदान’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

३३१. (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ — ‘सोनिका-मोनिका’ एहि खण्डमे मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
३३२. (C) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ — ई संकेत ‘सोनिका-मोनिका’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३३३. (A) सोनिका-मोनिका — एहि प्रसंगमे ‘विघ्न’ सीधे ‘सोनिका-मोनिका’ सँ जुड़ैत अछि।
३३४. (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ — उत्तरमे ‘सोनिका-मोनिका’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३३५. (B) मञ्जरी अपहरण हेतु भेजल गेल मल्ल-संदर्भ — ‘सोनिका-मोनिका’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३३६. (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र — ‘चनैन’ एहि खण्डमे प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
३३७. (D) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र — ई संकेत ‘चनैन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३३८. (D) चनैन — एहि प्रसंगमे ‘स्त्री-पात्र’ सीधे ‘चनैन’ सँ जुड़ैत अछि।
३३९. (A) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र — उत्तरमे ‘चनैन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३४०. (C) प्रेम, आकर्षण आ नायकक भाव-जटिलतासँ जुड़ल पात्र — ‘चनैन’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३४१. (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा — ‘स्त्री-स्वाभिमान’ एहि खण्डमे दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा रूपमे बुझल जाएत अछि।
३४२. (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा — ई संकेत ‘स्त्री-स्वाभिमान’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३४३. (B) स्त्री-स्वाभिमान — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘स्त्री-स्वाभिमान’ सँ जुड़ैत अछि।
३४४. (C) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा — उत्तरमे ‘स्त्री-स्वाभिमान’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३४५. (A) दमनकारी दृष्टिक विरुद्ध नारीक गरिमा — ‘स्त्री-स्वाभिमान’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३४६. (A) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक — ‘स्त्रीक भय’ एहि खण्डमे सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक रूपमे बुझल जाएत अछि।
३४७. (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक — ई संकेत ‘स्त्रीक भय’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३४८. (C) स्त्रीक भय — एहि प्रसंगमे ‘सामाजिक यथार्थ’ सीधे ‘स्त्रीक भय’ सँ जुड़ैत अछि।
३४९. (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक — उत्तरमे ‘स्त्रीक भय’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३५०. (D) सत्ता-दुरुपयोग आ अपहरणक सामाजिक आतंक — ‘स्त्रीक भय’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३५१. (A) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल — ‘स्त्रीक साहस’ एहि खण्डमे संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल रूपमे बुझल जाएत अछि।
३५२. (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल — ई संकेत ‘स्त्रीक साहस’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३५३. (B) स्त्रीक साहस — एहि प्रसंगमे ‘गुण’ सीधे ‘स्त्रीक साहस’ सँ जुड़ैत अछि।
३५४. (C) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल — उत्तरमे ‘स्त्रीक साहस’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३५५. (D) संकटमे मर्यादा बचाबयक मनोबल — ‘स्त्रीक साहस’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३५६. (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली — ‘सौन्दर्य-वर्णन’ एहि खण्डमे रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली रूपमे बुझल जाएत अछि।
३५७. (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली — ई संकेत ‘सौन्दर्य-वर्णन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३५८. (B) सौन्दर्य-वर्णन — एहि प्रसंगमे ‘शैली’ सीधे ‘सौन्दर्य-वर्णन’ सँ जुड़ैत अछि।
३५९. (C) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली — उत्तरमे ‘सौन्दर्य-वर्णन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३६०. (B) रूपक संग सामाजिक संकट देखाबयवला शैली — ‘सौन्दर्य-वर्णन’क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३६१. (A) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा — ‘लोक-मर्यादा’ एहि खण्डमे गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा रूपमे बुझल जाएत अछि।
३६२. (B) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा — ई संकेत ‘लोक-मर्यादा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३६३. (B) लोक-मर्यादा — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘लोक-मर्यादा’ सँ जुड़ैत अछि।

३६४. (B) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा — उत्तरमे 'लोक-मर्यादा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३६५. (D) गाम-समाजक नैतिक अपेक्षा — 'लोक-मर्यादा'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३६६. (A) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव — 'प्रेम-भाव' एहि खण्डमे संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव रूपमे बुझल जाएत अछि।
३६७. (C) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव — ई संकेत 'प्रेम-भाव'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३६८. (B) प्रेम-भाव — एहि प्रसंगमे 'भाव' सीधे 'प्रेम-भाव' सँ जुड़ैत अछि।
३६९. (B) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव — उत्तरमे 'प्रेम-भाव' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३७०. (A) संघर्ष आ मानवीय आकर्षणक जटिल भाव — 'प्रेम-भाव'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३७१. (C) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न — 'नारी-अस्मिता' एहि खण्डमे स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न रूपमे बुझल जाएत अछि।
३७२. (B) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न — ई संकेत 'नारी-अस्मिता'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३७३. (D) नारी-अस्मिता — एहि प्रसंगमे 'आलोचना' सीधे 'नारी-अस्मिता' सँ जुड़ैत अछि।
३७४. (B) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न — उत्तरमे 'नारी-अस्मिता' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३७५. (A) स्त्रीक स्वतंत्र गरिमा आ अस्तित्वक प्रश्न — 'नारी-अस्मिता'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३७६. (A) अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप — 'अपहरण-भय' एहि खण्डमे अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप रूपमे बुझल जाएत अछि।
३७७. (C) अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप — ई संकेत 'अपहरण-भय'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३७८. (B) अपहरण-भय — एहि प्रसंगमे 'संकट' सीधे 'अपहरण-भय' सँ जुड़ैत अछि।
३७९. (C) अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप — उत्तरमे 'अपहरण-भय' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३८०. (D) अत्याचारी सत्ताक सबसे क्रूर सामाजिक रूप — 'अपहरण-भय'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३८१. (D) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य — 'स्त्री-सुरक्षा' एहि खण्डमे कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य रूपमे बुझल जाएत अछि।
३८२. (B) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य — ई संकेत 'स्त्री-सुरक्षा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३८३. (A) स्त्री-सुरक्षा — एहि प्रसंगमे 'लक्ष्य' सीधे 'स्त्री-सुरक्षा' सँ जुड़ैत अछि।
३८४. (A) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य — उत्तरमे 'स्त्री-सुरक्षा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३८५. (C) कथाक नैतिक संघर्षक लक्ष्य — 'स्त्री-सुरक्षा'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३८६. (A) स्त्री-पात्रक माध्यम सँ समाजक विकृति पर प्रश्न — 'सामाजिक दृष्टि' एहि खण्डमे स्त्री-पात्रक माध्यम सँ समाजक विकृति पर प्रश्न रूपमे बुझल जाएत अछि।
३८७. (C) स्त्री-पात्रक माध्यम सँ समाजक विकृति पर प्रश्न — ई संकेत 'सामाजिक दृष्टि'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३८८. (A) सामाजिक दृष्टि — एहि प्रसंगमे 'आलोचना' सीधे 'सामाजिक दृष्टि' सँ जुड़ैत अछि।
३८९. (A) स्त्री-पात्रक माध्यम सँ समाजक विकृति पर प्रश्न — उत्तरमे 'सामाजिक दृष्टि' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३९०. (B) स्त्री-पात्रक माध्यम सँ समाजक विकृति पर प्रश्न — 'सामाजिक दृष्टि'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३९१. (D) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना — 'रूप आ संकट' एहि खण्डमे सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना रूपमे बुझल जाएत अछि।
३९२. (D) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना — ई संकेत 'रूप आ संकट'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
३९३. (C) रूप आ संकट — एहि प्रसंगमे 'थीम' सीधे 'रूप आ संकट' सँ जुड़ैत अछि।
३९४. (B) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना — उत्तरमे 'रूप आ संकट' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
३९५. (B) सौन्दर्य पर सत्ता-लोलुप दृष्टिक आलोचना — 'रूप आ संकट'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
३९६. (B) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य — 'मर्यादा' एहि खण्डमे मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य रूपमे बुझल जाएत अछि।
३९७. (A) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य — ई संकेत 'मर्यादा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।

३९८. (D) मर्यादा — एहि प्रसंगमे 'मूल्य' सीधे 'मर्यादा' सँ जुड़ैत अछि।
३९९. (D) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य — उत्तरमे 'मर्यादा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४००. (B) मञ्जरीक प्रसंगक प्रधान मूल्य — 'मर्यादा'क सार कृतिक मञ्जरी आ स्त्री-पात्र बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४०१. (B) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप — 'उधरा पँवार' एहि खण्डमे अत्याचारी शासकक प्रतिरूप रूपमे बुझल जाएत अछि।
४०२. (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप — ई संकेत 'उधरा पँवार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४०३. (A) उधरा पँवार — एहि प्रसंगमे 'प्रतिपक्ष' सीधे 'उधरा पँवार' सँ जुड़ैत अछि।
४०४. (A) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप — उत्तरमे 'उधरा पँवार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४०५. (C) अत्याचारी शासकक प्रतिरूप — 'उधरा पँवार'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४०६. (B) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा — 'हरबा' एहि खण्डमे न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा रूपमे बुझल जाएत अछि।
४०७. (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा — ई संकेत 'हरबा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४०८. (C) हरबा — एहि प्रसंगमे 'प्रतिपक्ष' सीधे 'हरबा' सँ जुड़ैत अछि।
४०९. (C) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा — उत्तरमे 'हरबा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४१०. (D) न्यूरिगढ़क दमनकारी राजा — 'हरबा'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४११. (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ — 'मोचनी' एहि खण्डमे चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
४१२. (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ — ई संकेत 'मोचनी'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४१३. (B) मोचनी — एहि प्रसंगमे 'राजा' सीधे 'मोचनी' सँ जुड़ैत अछि।
४१४. (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ — उत्तरमे 'मोचनी' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४१५. (B) चनैनक प्रसंगसँ जुड़ल षड्यंत्रकारी सत्ता-संदर्भ — 'मोचनी'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४१६. (A) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ — 'गजभीम' एहि खण्डमे लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
४१७. (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ — ई संकेत 'गजभीम'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४१८. (C) गजभीम — एहि प्रसंगमे 'योद्धा' सीधे 'गजभीम' सँ जुड़ैत अछि।
४१९. (B) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ — उत्तरमे 'गजभीम' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४२०. (C) लोरिकक विरुद्ध खड़ा कएल गेल सेनापति-संदर्भ — 'गजभीम'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४२१. (D) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र — 'घुघरा पँवार' एहि खण्डमे हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
४२२. (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र — ई संकेत 'घुघरा पँवार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४२३. (B) घुघरा पँवार — एहि प्रसंगमे 'आक्रमणकारी' सीधे 'घुघरा पँवार' सँ जुड़ैत अछि।
४२४. (B) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र — उत्तरमे 'घुघरा पँवार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४२५. (A) हरबाक पक्षसँ लोरिक पर आक्रमण करयवला पात्र — 'घुघरा पँवार'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४२६. (A) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र — 'बरबा' एहि खण्डमे हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
४२७. (B) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र — ई संकेत 'बरबा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४२८. (B) बरबा — एहि प्रसंगमे 'योद्धा' सीधे 'बरबा' सँ जुड़ैत अछि।
४२९. (A) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र — उत्तरमे 'बरबा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४३०. (C) हरबाक भाई आ युद्ध-संदर्भक पात्र — 'बरबा'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४३१. (C) हरबाक सहायक रण-पात्र — 'कुँवर अंगार' एहि खण्डमे हरबाक सहायक रण-पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।

४३२. (D) हरबाक सहायक रण-पात्र — ई संकेत 'कुँवर अंगार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४३३. (A) कुँवर अंगार — एहि प्रसंगमे 'योद्धा' सीधे 'कुँवर अंगार' सँ जुड़ैत अछि।
४३४. (D) हरबाक सहायक रण-पात्र — उत्तरमे 'कुँवर अंगार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४३५. (B) हरबाक सहायक रण-पात्र — 'कुँवर अंगार'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४३६. (B) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान — 'हथौरी बन्दीसार' एहि खण्डमे कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान रूपमे बुझल जाएत अछि।
४३७. (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान — ई संकेत 'हथौरी बन्दीसार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४३८. (B) हथौरी बन्दीसार — एहि प्रसंगमे 'कैद-स्थान' सीधे 'हथौरी बन्दीसार' सँ जुड़ैत अछि।
४३९. (C) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान — उत्तरमे 'हथौरी बन्दीसार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४४०. (A) कैद, यातना आ दमनक भयंकर स्थान — 'हथौरी बन्दीसार'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४४१. (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला — 'गोधन-अपहरण' एहि खण्डमे ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला रूपमे बुझल जाएत अछि।
४४२. (C) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला — ई संकेत 'गोधन-अपहरण'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४४३. (D) गोधन-अपहरण — एहि प्रसंगमे 'अत्याचार' सीधे 'गोधन-अपहरण' सँ जुड़ैत अछि।
४४४. (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला — उत्तरमे 'गोधन-अपहरण' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४४५. (B) ग्रामीण अर्थजीवन पर हमला — 'गोधन-अपहरण'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४४६. (B) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण — 'स्त्री-अपहरण' एहि खण्डमे नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण रूपमे बुझल जाएत अछि।
४४७. (B) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण — ई संकेत 'स्त्री-अपहरण'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४४८. (A) स्त्री-अपहरण — एहि प्रसंगमे 'अत्याचार' सीधे 'स्त्री-अपहरण' सँ जुड़ैत अछि।
४४९. (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण — उत्तरमे 'स्त्री-अपहरण' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४५०. (D) नारी-गरिमा पर सत्ता-दुरुपयोगक आक्रमण — 'स्त्री-अपहरण'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४५१. (A) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन — 'शोषण' एहि खण्डमे जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन रूपमे बुझल जाएत अछि।
४५२. (D) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन — ई संकेत 'शोषण'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४५३. (B) शोषण — एहि प्रसंगमे 'सामाजिक संकट' सीधे 'शोषण' सँ जुड़ैत अछि।
४५४. (C) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन — उत्तरमे 'शोषण' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४५५. (C) जनक श्रम आ अधिकारक अन्यायी दोहन — 'शोषण'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४५६. (B) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ — 'दमन' एहि खण्डमे बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ रूपमे बुझल जाएत अछि।
४५७. (D) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ — ई संकेत 'दमन'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४५८. (D) दमन — एहि प्रसंगमे 'सत्ता-प्रवृत्ति' सीधे 'दमन' सँ जुड़ैत अछि।
४५९. (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ — उत्तरमे 'दमन' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४६०. (C) बलपूर्वक लोकक आवाज रोकनाइ — 'दमन'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४६१. (C) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक — 'जन-भय' एहि खण्डमे अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक रूपमे बुझल जाएत अछि।
४६२. (A) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक — ई संकेत 'जन-भय'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४६३. (D) जन-भय — एहि प्रसंगमे 'स्थिति' सीधे 'जन-भय' सँ जुड़ैत अछि।
४६४. (C) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक — उत्तरमे 'जन-भय' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४६५. (A) अत्याचारसँ उपजल सामूहिक आतंक — 'जन-भय'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४६६. (A) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति — 'षड्यन्त्र' एहि खण्डमे नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति रूपमे बुझल जाएत अछि।
४६७. (D) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति — ई संकेत 'षड्यन्त्र'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।

४६८. (D) षड्यन्त्र — एहि प्रसंगमे 'कथात्मक युक्ति' सीधे 'षड्यन्त्र' सँ जुड़ैत अछि।
४६९. (B) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति — उत्तरमे 'षड्यन्त्र' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४७०. (C) नायक केँ हटाबय लेल छल-युक्ति — 'षड्यन्त्र'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४७१. (B) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा — 'कैद-यातना' एहि खण्डमे दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा रूपमे बुझल जाएत अछि।
४७२. (B) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा — ई संकेत 'कैद-यातना'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४७३. (D) कैद-यातना — एहि प्रसंगमे 'अत्याचार' सीधे 'कैद-यातना' सँ जुड़ैत अछि।
४७४. (A) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा — उत्तरमे 'कैद-यातना' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४७५. (C) दमनकारी राजसत्ताक अमानवीय चेहरा — 'कैद-यातना'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४७६. (A) अत्याचार सहयवला जन-साधारण — 'प्रजा' एहि खण्डमे अत्याचार सहयवला जन-साधारण रूपमे बुझल जाएत अछि।
४७७. (D) अत्याचार सहयवला जन-साधारण — ई संकेत 'प्रजा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४७८. (A) प्रजा — एहि प्रसंगमे 'समाज' सीधे 'प्रजा' सँ जुड़ैत अछि।
४७९. (C) अत्याचार सहयवला जन-साधारण — उत्तरमे 'प्रजा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४८०. (B) अत्याचार सहयवला जन-साधारण — 'प्रजा'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४८१. (A) नायकक विजयक सामाजिक फल — 'लोकमुक्ति' एहि खण्डमे नायकक विजयक सामाजिक फल रूपमे बुझल जाएत अछि।
४८२. (D) नायकक विजयक सामाजिक फल — ई संकेत 'लोकमुक्ति'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४८३. (B) लोकमुक्ति — एहि प्रसंगमे 'फल' सीधे 'लोकमुक्ति' सँ जुड़ैत अछि।
४८४. (A) नायकक विजयक सामाजिक फल — उत्तरमे 'लोकमुक्ति' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४८५. (A) नायकक विजयक सामाजिक फल — 'लोकमुक्ति'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४८६. (B) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप — 'सामन्ती सत्ता' एहि खण्डमे अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप रूपमे बुझल जाएत अछि।
४८७. (B) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप — ई संकेत 'सामन्ती सत्ता'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४८८. (B) सामन्ती सत्ता — एहि प्रसंगमे 'सत्ता' सीधे 'सामन्ती सत्ता' सँ जुड़ैत अछि।
४८९. (D) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप — उत्तरमे 'सामन्ती सत्ता' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४९०. (B) अनियंत्रित बल आ अधिकारक दमनकारी रूप — 'सामन्ती सत्ता'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४९१. (D) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय — 'आतंक' एहि खण्डमे अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय रूपमे बुझल जाएत अछि।
४९२. (A) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय — ई संकेत 'आतंक'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४९३. (A) आतंक — एहि प्रसंगमे 'भाव' सीधे 'आतंक' सँ जुड़ैत अछि।
४९४. (B) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय — उत्तरमे 'आतंक' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
४९५. (D) अन्यायक कारण समाजमे फैलल भय — 'आतंक'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
४९६. (B) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना — 'अन्याय-विरोध' एहि खण्डमे कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना रूपमे बुझल जाएत अछि।
४९७. (A) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना — ई संकेत 'अन्याय-विरोध'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
४९८. (C) अन्याय-विरोध — एहि प्रसंगमे 'मूल स्वर' सीधे 'अन्याय-विरोध' सँ जुड़ैत अछि।
४९९. (D) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना — उत्तरमे 'अन्याय-विरोध' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५००. (C) कृतिक मूल प्रतिरोधी चेतना — 'अन्याय-विरोध'क सार कृतिक सामन्ती अत्याचार बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५०१. (C) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल — 'सिलहट अखाड़ा' एहि खण्डमे मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल रूपमे बुझल जाएत अछि।

५०२. (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल — ई संकेत 'सिलहट अखाड़ा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५०३. (D) सिलहट अखाड़ा — एहि प्रसंगमे 'स्थान' सीधे 'सिलहट अखाड़ा' सँ जुड़ैत अछि।
५०४. (C) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल — उत्तरमे 'सिलहट अखाड़ा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५०५. (B) मल्ल-अभ्यास आ वीर-प्रतिष्ठाक प्रमुख स्थल — 'सिलहट अखाड़ा'क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५०६. (D) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष — 'मल्लयुद्ध' एहि खण्डमे देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष रूपमे बुझल जाएत अछि।
५०७. (A) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष — ई संकेत 'मल्लयुद्ध'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५०८. (C) मल्लयुद्ध — एहि प्रसंगमे 'युद्ध-रूप' सीधे 'मल्लयुद्ध' सँ जुड़ैत अछि।
५०९. (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष — उत्तरमे 'मल्लयुद्ध' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५१०. (C) देहबल, दाँव-पेंच आ धैर्यक संघर्ष — 'मल्लयुद्ध'क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५११. (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र — 'खण्डा' एहि खण्डमे लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
५१२. (C) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र — ई संकेत 'खण्डा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५१३. (D) खण्डा — एहि प्रसंगमे 'अस्त्र' सीधे 'खण्डा' सँ जुड़ैत अछि।
५१४. (A) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र — उत्तरमे 'खण्डा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५१५. (D) लोरिकक पराक्रम आ न्यायकारी प्रतिरोधक अस्त्र — 'खण्डा'क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५१६. (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल — 'दाँव-पेंच' एहि खण्डमे मल्लकला आ अभ्यासक कौशल रूपमे बुझल जाएत अछि।
५१७. (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल — ई संकेत 'दाँव-पेंच'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५१८. (B) दाँव-पेंच — एहि प्रसंगमे 'कौशल' सीधे 'दाँव-पेंच' सँ जुड़ैत अछि।
५१९. (B) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल — उत्तरमे 'दाँव-पेंच' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५२०. (A) मल्लकला आ अभ्यासक कौशल — 'दाँव-पेंच'क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५२१. (A) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ — 'कटरा घोड़ा' एहि खण्डमे लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
५२२. (C) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ — ई संकेत 'कटरा घोड़ा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५२३. (A) कटरा घोड़ा — एहि प्रसंगमे 'वाहन' सीधे 'कटरा घोड़ा' सँ जुड़ैत अछि।
५२४. (B) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ — उत्तरमे 'कटरा घोड़ा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५२५. (D) लोरिकक रण-यात्रासँ जुड़ल घोड़ा-संदर्भ — 'कटरा घोड़ा'क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५२६. (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण — 'युद्ध-चुनौती' एहि खण्डमे नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण रूपमे बुझल जाएत अछि।
५२७. (C) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण — ई संकेत 'युद्ध-चुनौती'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५२८. (D) युद्ध-चुनौती — एहि प्रसंगमे 'घटना' सीधे 'युद्ध-चुनौती' सँ जुड़ैत अछि।
५२९. (A) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण — उत्तरमे 'युद्ध-चुनौती' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५३०. (D) नायकक पराक्रम जाँचयवला क्षण — 'युद्ध-चुनौती'क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५३१. (B) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर — 'वीर-देह' एहि खण्डमे लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर रूपमे बुझल जाएत अछि।
५३२. (A) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर — ई संकेत 'वीर-देह'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५३३. (B) वीर-देह — एहि प्रसंगमे 'वर्णन' सीधे 'वीर-देह' सँ जुड़ैत अछि।
५३४. (D) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर — उत्तरमे 'वीर-देह' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५३५. (C) लोक-कल्पनामे विराट बनाओल नायकक शरीर — 'वीर-देह'क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

५३६. (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता — ‘रण-धैर्य’ एहि खण्डमे लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता रूपमे बुझल जाएत अछि।
५३७. (B) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता — ई संकेत ‘रण-धैर्य’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५३८. (A) रण-धैर्य — एहि प्रसंगमे ‘गुण’ सीधे ‘रण-धैर्य’ सँ जुड़ैत अछि।
५३९. (C) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता — उत्तरमे ‘रण-धैर्य’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५४०. (B) लम्बा संघर्ष सहबाक क्षमता — ‘रण-धैर्य’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५४१. (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव — ‘शत्रु-विजय’ एहि खण्डमे अत्याचारी शक्तिक पराभव रूपमे बुझल जाएत अछि।
५४२. (C) अत्याचारी शक्तिक पराभव — ई संकेत ‘शत्रु-विजय’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५४३. (B) शत्रु-विजय — एहि प्रसंगमे ‘फल’ सीधे ‘शत्रु-विजय’ सँ जुड़ैत अछि।
५४४. (B) अत्याचारी शक्तिक पराभव — उत्तरमे ‘शत्रु-विजय’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५४५. (A) अत्याचारी शक्तिक पराभव — ‘शत्रु-विजय’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५४६. (C) वीरक जीत पर लोकक आनंद — ‘जन-जयघोष’ एहि खण्डमे वीरक जीत पर लोकक आनंद रूपमे बुझल जाएत अछि।
५४७. (B) वीरक जीत पर लोकक आनंद — ई संकेत ‘जन-जयघोष’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५४८. (D) जन-जयघोष — एहि प्रसंगमे ‘प्रतिक्रिया’ सीधे ‘जन-जयघोष’ सँ जुड़ैत अछि।
५४९. (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद — उत्तरमे ‘जन-जयघोष’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५५०. (A) वीरक जीत पर लोकक आनंद — ‘जन-जयघोष’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५५१. (D) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा — ‘रण-नैतिकता’ एहि खण्डमे बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा रूपमे बुझल जाएत अछि।
५५२. (A) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा — ई संकेत ‘रण-नैतिकता’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५५३. (C) रण-नैतिकता — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘रण-नैतिकता’ सँ जुड़ैत अछि।
५५४. (A) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा — उत्तरमे ‘रण-नैतिकता’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५५५. (D) बलकेँ न्यायक पक्षमे राखबाक मर्यादा — ‘रण-नैतिकता’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५५६. (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया — ‘अभ्यास’ एहि खण्डमे वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया रूपमे बुझल जाएत अछि।
५५७. (C) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया — ई संकेत ‘अभ्यास’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५५८. (B) अभ्यास — एहि प्रसंगमे ‘प्रक्रिया’ सीधे ‘अभ्यास’ सँ जुड़ैत अछि।
५५९. (B) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया — उत्तरमे ‘अभ्यास’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५६०. (A) वीरता केँ कौशलमे बदलयवला प्रक्रिया — ‘अभ्यास’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५६१. (A) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर — ‘प्रतिशोध’ एहि खण्डमे भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर रूपमे बुझल जाएत अछि।
५६२. (D) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर — ई संकेत ‘प्रतिशोध’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५६३. (A) प्रतिशोध — एहि प्रसंगमे ‘भाव’ सीधे ‘प्रतिशोध’ सँ जुड़ैत अछि।
५६४. (C) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर — उत्तरमे ‘प्रतिशोध’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५६५. (A) भ्रातृहत्या आ अत्याचारक विरुद्ध न्यायकारी उत्तर — ‘प्रतिशोध’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५६६. (C) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव — ‘असाधारण बल’ एहि खण्डमे लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव रूपमे बुझल जाएत अछि।
५६७. (B) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव — ई संकेत ‘असाधारण बल’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५६८. (B) असाधारण बल — एहि प्रसंगमे ‘गुण’ सीधे ‘असाधारण बल’ सँ जुड़ैत अछि।
५६९. (A) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव — उत्तरमे ‘असाधारण बल’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५७०. (A) लोकगाथामे नायकक चमत्कारिक प्रभाव — ‘असाधारण बल’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

५७१. (C) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव — ‘वीर-रस’ एहि खण्डमे युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव रूपमे बुझल जाएत अछि।
५७२. (B) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव — ई संकेत ‘वीर-रस’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५७३. (D) वीर-रस — एहि प्रसंगमे ‘रस’ सीधे ‘वीर-रस’ सँ जुड़ैत अछि।
५७४. (D) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव — उत्तरमे ‘वीर-रस’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५७५. (D) युद्ध-उत्साह आ शौर्यक भाव — ‘वीर-रस’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५७६. (C) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन — ‘संघर्ष-दृश्य’ एहि खण्डमे कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन रूपमे बुझल जाएत अछि।
५७७. (A) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन — ई संकेत ‘संघर्ष-दृश्य’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५७८. (C) संघर्ष-दृश्य — एहि प्रसंगमे ‘शैली’ सीधे ‘संघर्ष-दृश्य’ सँ जुड़ैत अछि।
५७९. (A) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन — उत्तरमे ‘संघर्ष-दृश्य’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५८०. (A) कथाकेँ आँखि-सामने आनयवला युद्ध-वर्णन — ‘संघर्ष-दृश्य’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५८१. (D) दमनक अंत आ लोकक राहत — ‘विजय’ एहि खण्डमे दमनक अंत आ लोकक राहत रूपमे बुझल जाएत अछि।
५८२. (A) दमनक अंत आ लोकक राहत — ई संकेत ‘विजय’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५८३. (A) विजय — एहि प्रसंगमे ‘फल’ सीधे ‘विजय’ सँ जुड़ैत अछि।
५८४. (C) दमनक अंत आ लोकक राहत — उत्तरमे ‘विजय’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५८५. (B) दमनक अंत आ लोकक राहत — ‘विजय’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५८६. (B) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग — ‘रण-घटना’ एहि खण्डमे कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग रूपमे बुझल जाएत अछि।
५८७. (D) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग — ई संकेत ‘रण-घटना’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५८८. (A) रण-घटना — एहि प्रसंगमे ‘घटना’ सीधे ‘रण-घटना’ सँ जुड़ैत अछि।
५८९. (B) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग — उत्तरमे ‘रण-घटना’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५९०. (A) कथानक केँ गति देयवला युद्ध-प्रसंग — ‘रण-घटना’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५९१. (B) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान — ‘योद्धा-प्रतिष्ठा’ एहि खण्डमे अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान रूपमे बुझल जाएत अछि।
५९२. (C) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान — ई संकेत ‘योद्धा-प्रतिष्ठा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५९३. (D) योद्धा-प्रतिष्ठा — एहि प्रसंगमे ‘प्रतिष्ठा’ सीधे ‘योद्धा-प्रतिष्ठा’ सँ जुड़ैत अछि।
५९४. (D) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान — उत्तरमे ‘योद्धा-प्रतिष्ठा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
५९५. (B) अखाड़ा आ युद्धसँ बनल लोक-मान — ‘योद्धा-प्रतिष्ठा’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
५९६. (A) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति — ‘पराक्रम’ एहि खण्डमे नायकक सक्रिय वीर-शक्ति रूपमे बुझल जाएत अछि।
५९७. (B) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति — ई संकेत ‘पराक्रम’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
५९८. (C) पराक्रम — एहि प्रसंगमे ‘गुण’ सीधे ‘पराक्रम’ सँ जुड़ैत अछि।
५९९. (A) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति — उत्तरमे ‘पराक्रम’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६००. (B) नायकक सक्रिय वीर-शक्ति — ‘पराक्रम’क सार कृतिक अखाड़ा, युद्ध आ पराक्रम बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६०१. (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा — ‘लोकभाषा’ एहि खण्डमे गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा रूपमे बुझल जाएत अछि।
६०२. (A) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा — ई संकेत ‘लोकभाषा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६०३. (C) लोकभाषा — एहि प्रसंगमे ‘भाषा’ सीधे ‘लोकभाषा’ सँ जुड़ैत अछि।
६०४. (B) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा — उत्तरमे ‘लोकभाषा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६०५. (D) गामक बोलचाल आ लोक-संवेदना सँ जुड़ल भाषा — ‘लोकभाषा’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

६०६. (D) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली — ‘वर्णन-कला’ एहि खण्डमे पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली रूपमे बुझल जाएत अछि।
६०७. (C) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली — ई संकेत ‘वर्णन-कला’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६०८. (A) वर्णन-कला — एहि प्रसंगमे ‘शैली’ सीधे ‘वर्णन-कला’ सँ जुड़ैत अछि।
६०९. (A) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली — उत्तरमे ‘वर्णन-कला’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६१०. (B) पात्र, देह, युद्ध आ वातावरण केँ सजीव बनाबयवाली शैली — ‘वर्णन-कला’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६११. (D) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण — ‘अतिशयोक्ति’ एहि खण्डमे वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण रूपमे बुझल जाएत अछि।
६१२. (D) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण — ई संकेत ‘अतिशयोक्ति’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६१३. (A) अतिशयोक्ति — एहि प्रसंगमे ‘अलंकारिक युक्ति’ सीधे ‘अतिशयोक्ति’ सँ जुड़ैत अछि।
६१४. (A) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण — उत्तरमे ‘अतिशयोक्ति’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६१५. (C) वीरक प्रभावकेँ लोक-कल्पना मे विराट बनाबयवला उपकरण — ‘अतिशयोक्ति’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६१६. (B) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली — ‘उपमा’ एहि खण्डमे कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली रूपमे बुझल जाएत अछि।
६१७. (A) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली — ई संकेत ‘उपमा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६१८. (B) उपमा — एहि प्रसंगमे ‘अलंकार’ सीधे ‘उपमा’ सँ जुड़ैत अछि।
६१९. (B) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली — उत्तरमे ‘उपमा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६२०. (A) कठिन दृश्य केँ परिचित वस्तुसँ बुझाबयवला शैली — ‘उपमा’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६२१. (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन — ‘संवाद’ एहि खण्डमे पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन रूपमे बुझल जाएत अछि।
६२२. (C) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन — ई संकेत ‘संवाद’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६२३. (B) संवाद — एहि प्रसंगमे ‘कथन’ सीधे ‘संवाद’ सँ जुड़ैत अछि।
६२४. (B) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन — उत्तरमे ‘संवाद’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६२५. (D) पात्रक मन, डर, संकल्प आ चुनौती प्रकट करयवला साधन — ‘संवाद’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६२६. (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा — ‘वीर-रस’ एहि खण्डमे शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा रूपमे बुझल जाएत अछि।
६२७. (A) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा — ई संकेत ‘वीर-रस’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६२८. (B) वीर-रस — एहि प्रसंगमे ‘रस’ सीधे ‘वीर-रस’ सँ जुड़ैत अछि।
६२९. (D) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा — उत्तरमे ‘वीर-रस’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६३०. (B) शौर्य, उत्साह आ युद्ध-ऊर्जा — ‘वीर-रस’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६३१. (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना — ‘करुण-रस’ एहि खण्डमे जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना रूपमे बुझल जाएत अछि।
६३२. (D) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना — ई संकेत ‘करुण-रस’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६३३. (A) करुण-रस — एहि प्रसंगमे ‘रस’ सीधे ‘करुण-रस’ सँ जुड़ैत अछि।
६३४. (C) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना — उत्तरमे ‘करुण-रस’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६३५. (A) जन-दुख, दमन आ पीड़ाक संवेदना — ‘करुण-रस’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६३६. (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण — ‘नाटकीयता’ एहि खण्डमे तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण रूपमे बुझल जाएत अछि।

६३७. (C) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण — ई संकेत 'नाटकीयता'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६३८. (A) नाटकीयता — एहि प्रसंगमे 'शैली' सीधे 'नाटकीयता' सँ जुड़ैत अछि।
६३९. (B) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण — उत्तरमे 'नाटकीयता' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६४०. (A) तनाव, टकराव आ कौतूहल बढ़ाबयवला गुण — 'नाटकीयता'क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६४१. (A) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता — 'चित्रात्मकता' एहि खण्डमे पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता रूपमे बुझल जाएत अछि।
६४२. (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता — ई संकेत 'चित्रात्मकता'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६४३. (A) चित्रात्मकता — एहि प्रसंगमे 'शैली' सीधे 'चित्रात्मकता' सँ जुड़ैत अछि।
६४४. (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता — उत्तरमे 'चित्रात्मकता' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६४५. (B) पाठकक आँखि-सामने दृश्य उपस्थित करबाक क्षमता — 'चित्रात्मकता'क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६४६. (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर — 'गाथा-धारा' एहि खण्डमे घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर रूपमे बुझल जाएत अछि।
६४७. (C) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर — ई संकेत 'गाथा-धारा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६४८. (B) गाथा-धारा — एहि प्रसंगमे 'रूप' सीधे 'गाथा-धारा' सँ जुड़ैत अछि।
६४९. (B) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर — उत्तरमे 'गाथा-धारा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६५०. (A) घटना-प्रवाहमे लोकगाथाक असर — 'गाथा-धारा'क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६५१. (C) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह — 'कथा-गति' एहि खण्डमे घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह रूपमे बुझल जाएत अछि।
६५२. (A) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह — ई संकेत 'कथा-गति'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६५३. (C) कथा-गति — एहि प्रसंगमे 'रचना' सीधे 'कथा-गति' सँ जुड़ैत अछि।
६५४. (B) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह — उत्तरमे 'कथा-गति' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६५५. (D) घटनाकेँ आगाँ बढ़ाबयवला प्रवाह — 'कथा-गति'क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६५६. (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक — 'पात्र-वर्णन' एहि खण्डमे चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक रूपमे बुझल जाएत अछि।
६५७. (B) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक — ई संकेत 'पात्र-वर्णन'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६५८. (D) पात्र-वर्णन — एहि प्रसंगमे 'शिल्प' सीधे 'पात्र-वर्णन' सँ जुड़ैत अछि।
६५९. (D) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक — उत्तरमे 'पात्र-वर्णन' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६६०. (C) चरित्रक रूप, गुण आ भूमिका उभारयवला तकनीक — 'पात्र-वर्णन'क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६६१. (C) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत — 'सामाजिक टिप्पणी' एहि खण्डमे कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत रूपमे बुझल जाएत अछि।
६६२. (A) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत — ई संकेत 'सामाजिक टिप्पणी'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६६३. (C) सामाजिक टिप्पणी — एहि प्रसंगमे 'विमर्श' सीधे 'सामाजिक टिप्पणी' सँ जुड़ैत अछि।
६६४. (D) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत — उत्तरमे 'सामाजिक टिप्पणी' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६६५. (B) कथाक भीतर समाजक विकृति पर संकेत — 'सामाजिक टिप्पणी'क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६६६. (B) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग — 'लोक-उक्ति' एहि खण्डमे जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग रूपमे बुझल जाएत अछि।
६६७. (D) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग — ई संकेत 'लोक-उक्ति'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६६८. (C) लोक-उक्ति — एहि प्रसंगमे 'भाषिक साधन' सीधे 'लोक-उक्ति' सँ जुड़ैत अछि।
६६९. (D) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग — उत्तरमे 'लोक-उक्ति' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।

६७०. (D) जनजीवनक वाक्य-स्मृति आ कहन-ढंग — ‘लोक-उक्ति’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६७१. (C) घटना, स्थान आ पात्र केँ एक दृश्यमे जोड़ब — ‘दृश्य-संयोजन’ एहि खण्डमे घटना, स्थान आ पात्र केँ एक दृश्यमे जोड़ब रूपमे बुझल जाएत अछि।
६७२. (C) घटना, स्थान आ पात्र केँ एक दृश्यमे जोड़ब — ई संकेत ‘दृश्य-संयोजन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६७३. (D) दृश्य-संयोजन — एहि प्रसंगमे ‘शिल्प’ सीधे ‘दृश्य-संयोजन’ सँ जुड़ैत अछि।
६७४. (C) घटना, स्थान आ पात्र केँ एक दृश्यमे जोड़ब — उत्तरमे ‘दृश्य-संयोजन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६७५. (C) घटना, स्थान आ पात्र केँ एक दृश्यमे जोड़ब — ‘दृश्य-संयोजन’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६७६. (D) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज — ‘कथावाचक स्वर’ एहि खण्डमे घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज रूपमे बुझल जाएत अछि।
६७७. (B) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज — ई संकेत ‘कथावाचक स्वर’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६७८. (C) कथावाचक स्वर — एहि प्रसंगमे ‘कथन’ सीधे ‘कथावाचक स्वर’ सँ जुड़ैत अछि।
६७९. (A) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज — उत्तरमे ‘कथावाचक स्वर’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६८०. (D) घटनाकेँ पाठक धरि लय जायवला आवाज — ‘कथावाचक स्वर’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६८१. (C) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव — ‘रस-वैविध्य’ एहि खण्डमे वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव रूपमे बुझल जाएत अछि।
६८२. (A) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव — ई संकेत ‘रस-वैविध्य’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६८३. (B) रस-वैविध्य — एहि प्रसंगमे ‘भाव-संरचना’ सीधे ‘रस-वैविध्य’ सँ जुड़ैत अछि।
६८४. (D) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव — उत्तरमे ‘रस-वैविध्य’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६८५. (C) वीर, करुण, प्रेम आ क्रोधक मिश्रित भाव — ‘रस-वैविध्य’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६८६. (B) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि — ‘लोक-लय’ एहि खण्डमे गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि रूपमे बुझल जाएत अछि।
६८७. (C) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि — ई संकेत ‘लोक-लय’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६८८. (D) लोक-लय — एहि प्रसंगमे ‘लय’ सीधे ‘लोक-लय’ सँ जुड़ैत अछि।
६८९. (B) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि — उत्तरमे ‘लोक-लय’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६९०. (D) गाथात्मक स्मृति सँ उपजल कथाक ध्वनि — ‘लोक-लय’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६९१. (B) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव — ‘सजीवता’ एहि खण्डमे भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव रूपमे बुझल जाएत अछि।
६९२. (B) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव — ई संकेत ‘सजीवता’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६९३. (A) सजीवता — एहि प्रसंगमे ‘प्रभाव’ सीधे ‘सजीवता’ सँ जुड़ैत अछि।
६९४. (B) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव — उत्तरमे ‘सजीवता’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
६९५. (C) भाषा आ दृश्यक कारण बनल जीवंत प्रभाव — ‘सजीवता’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
६९६. (D) लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब — ‘उपन्यासिक संरचना’ एहि खण्डमे लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब रूपमे बुझल जाएत अछि।
६९७. (C) लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब — ई संकेत ‘उपन्यासिक संरचना’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
६९८. (B) उपन्यासिक संरचना — एहि प्रसंगमे ‘संरचना’ सीधे ‘उपन्यासिक संरचना’ सँ जुड़ैत अछि।
६९९. (C) लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब — उत्तरमे ‘उपन्यासिक संरचना’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७००. (B) लोककथाकेँ क्रम, पात्र आ संघर्ष सहित विस्तार देब — ‘उपन्यासिक संरचना’क सार कृतिक भाषा, शैली आ कथनकला बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७०१. (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि — ‘गाम’ एहि खण्डमे कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि रूपमे बुझल जाएत अछि।
७०२. (B) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि — ई संकेत ‘गाम’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७०३. (C) गाम — एहि प्रसंगमे ‘परिवेश’ सीधे ‘गाम’ सँ जुड़ैत अछि।

७०४. (D) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि — उत्तरमे ‘गाम’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७०५. (C) कथाक सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारभूमि — ‘गाम’क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७०६. (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत — ‘हरवाही’ एहि खण्डमे ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत रूपमे बुझल जाएत अछि।
७०७. (C) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत — ई संकेत ‘हरवाही’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७०८. (B) हरवाही — एहि प्रसंगमे ‘श्रम’ सीधे ‘हरवाही’ सँ जुड़ैत अछि।
७०९. (A) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत — उत्तरमे ‘हरवाही’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७१०. (A) ग्रामीण श्रम आ आजीविकासँ जुड़ल संकेत — ‘हरवाही’क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७११. (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय — ‘चरवाही’ एहि खण्डमे पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय रूपमे बुझल जाएत अछि।
७१२. (D) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय — ई संकेत ‘चरवाही’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७१३. (C) चरवाही — एहि प्रसंगमे ‘श्रम’ सीधे ‘चरवाही’ सँ जुड़ैत अछि।
७१४. (C) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय — उत्तरमे ‘चरवाही’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७१५. (B) पशुधन-केन्द्रित ग्राम्य जीवनक परिचय — ‘चरवाही’क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७१६. (D) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार — ‘गोधन’ एहि खण्डमे ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार रूपमे बुझल जाएत अछि।
७१७. (A) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार — ई संकेत ‘गोधन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७१८. (C) गोधन — एहि प्रसंगमे ‘अर्थजीवन’ सीधे ‘गोधन’ सँ जुड़ैत अछि।
७१९. (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार — उत्तरमे ‘गोधन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७२०. (B) ग्रामीण अर्थजीवनक मूल्यवान आधार — ‘गोधन’क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७२१. (B) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास — ‘माँ दुर्गा’ एहि खण्डमे भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास रूपमे बुझल जाएत अछि।
७२२. (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास — ई संकेत ‘माँ दुर्गा’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७२३. (C) माँ दुर्गा — एहि प्रसंगमे ‘देवी-विश्वास’ सीधे ‘माँ दुर्गा’ सँ जुड़ैत अछि।
७२४. (A) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास — उत्तरमे ‘माँ दुर्गा’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७२५. (B) भक्ति आ वीर-प्राप्तिक लोकविश्वास — ‘माँ दुर्गा’क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७२६. (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण — ‘स्वप्न’ एहि खण्डमे भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण रूपमे बुझल जाएत अछि।
७२७. (A) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण — ई संकेत ‘स्वप्न’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७२८. (D) स्वप्न — एहि प्रसंगमे ‘विश्वास’ सीधे ‘स्वप्न’ सँ जुड़ैत अछि।
७२९. (B) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण — उत्तरमे ‘स्वप्न’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७३०. (D) भविष्य-संकेत आ लोकविश्वासक कथात्मक उपकरण — ‘स्वप्न’क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७३१. (A) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल — ‘भक्ति’ एहि खण्डमे मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल रूपमे बुझल जाएत अछि।
७३२. (D) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल — ई संकेत ‘भक्ति’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७३३. (D) भक्ति — एहि प्रसंगमे ‘धार्मिक पक्ष’ सीधे ‘भक्ति’ सँ जुड़ैत अछि।
७३४. (A) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल — उत्तरमे ‘भक्ति’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७३५. (C) मानवीय संघर्षमे देव-विश्वासक सांस्कृतिक बल — ‘भक्ति’क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७३६. (D) समाजक नैतिक न्याय-बोध — ‘लोक-न्याय’ एहि खण्डमे समाजक नैतिक न्याय-बोध रूपमे बुझल जाएत अछि।
७३७. (B) समाजक नैतिक न्याय-बोध — ई संकेत ‘लोक-न्याय’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७३८. (C) लोक-न्याय — एहि प्रसंगमे ‘मूल्य’ सीधे ‘लोक-न्याय’ सँ जुड़ैत अछि।

७३९. (C) समाजक नैतिक न्याय-बोध — उत्तरमे 'लोक-न्याय' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७४०. (D) समाजक नैतिक न्याय-बोध — 'लोक-न्याय'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७४१. (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग — 'जाति-सम्बन्ध' एहि खण्डमे समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग रूपमे बुझल जाएत अछि।
७४२. (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग — ई संकेत 'जाति-सम्बन्ध'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७४३. (C) जाति-सम्बन्ध — एहि प्रसंगमे 'समाज-विमर्श' सीधे 'जाति-सम्बन्ध' सँ जुड़ैत अछि।
७४४. (D) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग — उत्तरमे 'जाति-सम्बन्ध' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७४५. (A) समाजक जटिल संरचना केँ सावधानीसँ पढ़बाक प्रसंग — 'जाति-सम्बन्ध'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७४६. (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न — 'स्त्री-गरिमा' एहि खण्डमे समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न रूपमे बुझल जाएत अछि।
७४७. (D) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न — ई संकेत 'स्त्री-गरिमा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७४८. (D) स्त्री-गरिमा — एहि प्रसंगमे 'मूल्य' सीधे 'स्त्री-गरिमा' सँ जुड़ैत अछि।
७४९. (C) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न — उत्तरमे 'स्त्री-गरिमा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७५०. (B) समाजक नैतिक परीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न — 'स्त्री-गरिमा'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७५१. (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था — 'सामन्तवाद' एहि खण्डमे अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था रूपमे बुझल जाएत अछि।
७५२. (D) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था — ई संकेत 'सामन्तवाद'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७५३. (A) सामन्तवाद — एहि प्रसंगमे 'सामाजिक ढाँचा' सीधे 'सामन्तवाद' सँ जुड़ैत अछि।
७५४. (C) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था — उत्तरमे 'सामन्तवाद' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७५५. (A) अनियंत्रित स्थानीय सत्ता आ दमनक व्यवस्था — 'सामन्तवाद'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७५६. (C) दमन सहैत जन-साधारण — 'प्रजा' एहि खण्डमे दमन सहैत जन-साधारण रूपमे बुझल जाएत अछि।
७५७. (B) दमन सहैत जन-साधारण — ई संकेत 'प्रजा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७५८. (C) प्रजा — एहि प्रसंगमे 'समाज' सीधे 'प्रजा' सँ जुड़ैत अछि।
७५९. (A) दमन सहैत जन-साधारण — उत्तरमे 'प्रजा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७६०. (A) दमन सहैत जन-साधारण — 'प्रजा'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७६१. (C) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध — 'समूह-चेतना' एहि खण्डमे लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध रूपमे बुझल जाएत अछि।
७६२. (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध — ई संकेत 'समूह-चेतना'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७६३. (B) समूह-चेतना — एहि प्रसंगमे 'चेतना' सीधे 'समूह-चेतना' सँ जुड़ैत अछि।
७६४. (B) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध — उत्तरमे 'समूह-चेतना' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७६५. (D) लोकक साझा डर, आशा आ प्रतिरोध — 'समूह-चेतना'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७६६. (D) विजयक बाद जनक हर्ष — 'लोक-उत्साह' एहि खण्डमे विजयक बाद जनक हर्ष रूपमे बुझल जाएत अछि।
७६७. (C) विजयक बाद जनक हर्ष — ई संकेत 'लोक-उत्साह'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७६८. (A) लोक-उत्साह — एहि प्रसंगमे 'भाव' सीधे 'लोक-उत्साह' सँ जुड़ैत अछि।
७६९. (D) विजयक बाद जनक हर्ष — उत्तरमे 'लोक-उत्साह' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७७०. (D) विजयक बाद जनक हर्ष — 'लोक-उत्साह'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७७१. (A) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण — 'कैद-मुक्ति' एहि खण्डमे दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण रूपमे बुझल जाएत अछि।
७७२. (C) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण — ई संकेत 'कैद-मुक्ति'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।

७७३. (A) कैद-मुक्ति — एहि प्रसंगमे 'मुक्ति' सीधे 'कैद-मुक्ति' सँ जुड़ैत अछि।
७७४. (B) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण — उत्तरमे 'कैद-मुक्ति' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७७५. (A) दमनसँ छुटकाराक सामाजिक क्षण — 'कैद-मुक्ति'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७७६. (C) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल — 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था' एहि खण्डमे श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल रूपमे बुझल जाएत अछि।
७७७. (A) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल — ई संकेत 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७७८. (A) ग्राम्य अर्थव्यवस्था — एहि प्रसंगमे 'अर्थशास्त्र' सीधे 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था' सँ जुड़ैत अछि।
७७९. (A) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल — उत्तरमे 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७८०. (B) श्रम, गोधन आ आजीविकाक जाल — 'ग्राम्य अर्थव्यवस्था'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७८१. (B) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य — 'न्याय-संस्कृति' एहि खण्डमे बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य रूपमे बुझल जाएत अछि।
७८२. (B) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य — ई संकेत 'न्याय-संस्कृति'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७८३. (D) न्याय-संस्कृति — एहि प्रसंगमे 'मूल्य' सीधे 'न्याय-संस्कृति' सँ जुड़ैत अछि।
७८४. (C) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य — उत्तरमे 'न्याय-संस्कृति' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७८५. (B) बलक उपयोग लोकहितमे होबाक मूल्य — 'न्याय-संस्कृति'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७८६. (C) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका — 'पारिवारिक सम्बन्ध' एहि खण्डमे माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका रूपमे बुझल जाएत अछि।
७८७. (D) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका — ई संकेत 'पारिवारिक सम्बन्ध'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७८८. (A) पारिवारिक सम्बन्ध — एहि प्रसंगमे 'सम्बन्ध' सीधे 'पारिवारिक सम्बन्ध' सँ जुड़ैत अछि।
७८९. (D) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका — उत्तरमे 'पारिवारिक सम्बन्ध' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७९०. (B) माता-पिता, भ्राता आ परिजनक कथात्मक भूमिका — 'पारिवारिक सम्बन्ध'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७९१. (D) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक — 'लोक-आस्था' एहि खण्डमे देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक रूपमे बुझल जाएत अछि।
७९२. (B) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक — ई संकेत 'लोक-आस्था'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७९३. (D) लोक-आस्था — एहि प्रसंगमे 'आस्था' सीधे 'लोक-आस्था' सँ जुड़ैत अछि।
७९४. (C) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक — उत्तरमे 'लोक-आस्था' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
७९५. (D) देवी, स्वप्न आ प्रतिज्ञा सँ बनल विश्वास-लोक — 'लोक-आस्था'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
७९६. (C) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व — 'मिथिलाक लोकजीवन' एहि खण्डमे कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व रूपमे बुझल जाएत अछि।
७९७. (C) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व — ई संकेत 'मिथिलाक लोकजीवन'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
७९८. (A) मिथिलाक लोकजीवन — एहि प्रसंगमे 'परिवेश' सीधे 'मिथिलाक लोकजीवन' सँ जुड़ैत अछि।
७९९. (D) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व — उत्तरमे 'मिथिलाक लोकजीवन' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८००. (D) कृतिक सांस्कृतिक दस्तावेजी महत्त्व — 'मिथिलाक लोकजीवन'क सार कृतिक समाज-संस्कृति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८०१. (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब — 'चरित्र-चित्रण' एहि खण्डमे लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब रूपमे बुझल जाएत अछि।
८०२. (C) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब — ई संकेत 'चरित्र-चित्रण'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८०३. (B) चरित्र-चित्रण — एहि प्रसंगमे 'प्रश्न-विषय' सीधे 'चरित्र-चित्रण' सँ जुड़ैत अछि।
८०४. (D) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब — उत्तरमे 'चरित्र-चित्रण' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८०५. (A) लोरिकक वीरता, न्याय-बोध आ मानवीयता के संग पढ़ब — 'चरित्र-चित्रण'क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

८०६. (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम — ‘लोकगाथा-आधार’ एहि खण्डमे मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम रूपमे बुझल जाएत अछि।
८०७. (D) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम — ई संकेत ‘लोकगाथा-आधार’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८०८. (A) लोकगाथा-आधार — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘लोकगाथा-आधार’ सँ जुड़ैत अछि।
८०९. (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम — उत्तरमे ‘लोकगाथा-आधार’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८१०. (A) मौखिक परम्परा आ उपन्यासक संगम — ‘लोकगाथा-आधार’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८११. (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण — ‘सामाजिक प्रतिरोध’ एहि खण्डमे शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण रूपमे बुझल जाएत अछि।
८१२. (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण — ई संकेत ‘सामाजिक प्रतिरोध’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८१३. (A) सामाजिक प्रतिरोध — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘सामाजिक प्रतिरोध’ सँ जुड़ैत अछि।
८१४. (C) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण — उत्तरमे ‘सामाजिक प्रतिरोध’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८१५. (A) शोषण-विरोधी लोक-चेतनाक विश्लेषण — ‘सामाजिक प्रतिरोध’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८१६. (B) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार — ‘स्त्री-पात्र’ एहि खण्डमे मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार रूपमे बुझल जाएत अछि।
८१७. (C) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार — ई संकेत ‘स्त्री-पात्र’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८१८. (A) स्त्री-पात्र — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘स्त्री-पात्र’ सँ जुड़ैत अछि।
८१९. (A) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार — उत्तरमे ‘स्त्री-पात्र’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८२०. (D) मञ्जरी आ चनैन द्वारा स्त्री-अस्मिता पर विचार — ‘स्त्री-पात्र’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८२१. (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन — ‘भाषा-शैली’ एहि खण्डमे लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन रूपमे बुझल जाएत अछि।
८२२. (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन — ई संकेत ‘भाषा-शैली’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८२३. (A) भाषा-शैली — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘भाषा-शैली’ सँ जुड़ैत अछि।
८२४. (D) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन — उत्तरमे ‘भाषा-शैली’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८२५. (C) लोकभाषा, उपमा, अतिशयोक्ति आ दृश्य-वर्णनक अध्ययन — ‘भाषा-शैली’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८२६. (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन — ‘वीर-रस’ एहि खण्डमे युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन रूपमे बुझल जाएत अछि।
८२७. (D) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन — ई संकेत ‘वीर-रस’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८२८. (C) वीर-रस — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘वीर-रस’ सँ जुड़ैत अछि।
८२९. (A) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन — उत्तरमे ‘वीर-रस’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८३०. (D) युद्ध, साहस आ उत्साहक भाव-विवेचन — ‘वीर-रस’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८३१. (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन — ‘करुण-रस’ एहि खण्डमे दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन रूपमे बुझल जाएत अछि।
८३२. (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन — ई संकेत ‘करुण-रस’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८३३. (C) करुण-रस — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘करुण-रस’ सँ जुड़ैत अछि।
८३४. (C) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन — उत्तरमे ‘करुण-रस’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८३५. (D) दमन आ जन-दुखक भाव-विवेचन — ‘करुण-रस’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८३६. (D) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना — ‘उपन्यास-कला’ एहि खण्डमे कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना रूपमे बुझल जाएत अछि।
८३७. (D) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना — ई संकेत ‘उपन्यास-कला’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८३८. (C) उपन्यास-कला — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘उपन्यास-कला’ सँ जुड़ैत अछि।

८३९. (C) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना — उत्तरमे ‘उपन्यास-कला’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८४०. (A) कथानक, पात्र, संघर्ष आ वातावरणक संरचना — ‘उपन्यास-कला’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८४१. (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण — ‘सामन्ती दमन’ एहि खण्डमे अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण रूपमे बुझल जाएत अछि।
८४२. (A) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण — ई संकेत ‘सामन्ती दमन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८४३. (A) सामन्ती दमन — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘सामन्ती दमन’ सँ जुड़ैत अछि।
८४४. (B) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण — उत्तरमे ‘सामन्ती दमन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८४५. (D) अत्याचारी सत्ता आ जन-संघर्षक विश्लेषण — ‘सामन्ती दमन’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८४६. (D) लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब — ‘शीर्षक-व्याख्या’ एहि खण्डमे लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब रूपमे बुझल जाएत अछि।
८४७. (B) लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब — ई संकेत ‘शीर्षक-व्याख्या’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८४८. (C) शीर्षक-व्याख्या — एहि प्रसंगमे ‘प्रश्न-विषय’ सीधे ‘शीर्षक-व्याख्या’ सँ जुड़ैत अछि।
८४९. (A) लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब — उत्तरमे ‘शीर्षक-व्याख्या’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८५०. (B) लोरिकक विजयकेँ लोकमुक्तिक प्रतीक रूपमे पढ़ब — ‘शीर्षक-व्याख्या’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८५१. (B) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति — ‘कथानक-सार’ एहि खण्डमे मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति रूपमे बुझल जाएत अछि।
८५२. (D) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति — ई संकेत ‘कथानक-सार’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८५३. (B) कथानक-सार — एहि प्रसंगमे ‘उत्तर-रूप’ सीधे ‘कथानक-सार’ सँ जुड़ैत अछि।
८५४. (A) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति — उत्तरमे ‘कथानक-सार’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८५५. (D) मुख्य घटना, पात्र आ संघर्षक क्रमबद्ध प्रस्तुति — ‘कथानक-सार’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८५६. (D) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब — ‘नायक-निरूपण’ एहि खण्डमे लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब रूपमे बुझल जाएत अछि।
८५७. (D) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब — ई संकेत ‘नायक-निरूपण’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८५८. (C) नायक-निरूपण — एहि प्रसंगमे ‘उत्तर-रूप’ सीधे ‘नायक-निरूपण’ सँ जुड़ैत अछि।
८५९. (A) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब — उत्तरमे ‘नायक-निरूपण’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८६०. (B) लोरिक केँ साधारण मनुखसँ जन-नायक बनैत देखाब — ‘नायक-निरूपण’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८६१. (B) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा — ‘समाज-विमर्श’ एहि खण्डमे कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा रूपमे बुझल जाएत अछि।
८६२. (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा — ई संकेत ‘समाज-विमर्श’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८६३. (A) समाज-विमर्श — एहि प्रसंगमे ‘उत्तर-रूप’ सीधे ‘समाज-विमर्श’ सँ जुड़ैत अछि।
८६४. (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा — उत्तरमे ‘समाज-विमर्श’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८६५. (D) कथा भीतर सामाजिक विषमता आ दमन पर चर्चा — ‘समाज-विमर्श’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८६६. (A) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन — ‘लोक-संस्कृति’ एहि खण्डमे गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन रूपमे बुझल जाएत अछि।
८६७. (C) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन — ई संकेत ‘लोक-संस्कृति’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८६८. (C) लोक-संस्कृति — एहि प्रसंगमे ‘उत्तर-रूप’ सीधे ‘लोक-संस्कृति’ सँ जुड़ैत अछि।
८६९. (A) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन — उत्तरमे ‘लोक-संस्कृति’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८७०. (A) गाम, गोधन, अखाड़ा, देवी-विश्वासक विवेचन — ‘लोक-संस्कृति’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

८७१. (C) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध — ‘तुलनात्मक दृष्टि’ एहि खण्डमे लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध रूपमे बुझल जाएत अछि।
८७२. (B) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध — ई संकेत ‘तुलनात्मक दृष्टि’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८७३. (D) तुलनात्मक दृष्टि — एहि प्रसंगमे ‘उत्तर-रूप’ सीधे ‘तुलनात्मक दृष्टि’ सँ जुड़ैत अछि।
८७४. (D) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध — उत्तरमे ‘तुलनात्मक दृष्टि’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८७५. (C) लोकगाथा आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर-संबंध — ‘तुलनात्मक दृष्टि’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८७६. (B) विजयकेँ केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब — ‘समापन-दृष्टि’ एहि खण्डमे विजयकेँ केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब रूपमे बुझल जाएत अछि।
८७७. (A) विजयकेँ केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब — ई संकेत ‘समापन-दृष्टि’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८७८. (C) समापन-दृष्टि — एहि प्रसंगमे ‘निष्कर्ष’ सीधे ‘समापन-दृष्टि’ सँ जुड़ैत अछि।
८७९. (B) विजयकेँ केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब — उत्तरमे ‘समापन-दृष्टि’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८८०. (C) विजयकेँ केवल युद्ध नहि, जनमुक्ति रूपमे समझब — ‘समापन-दृष्टि’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८८१. (C) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन — ‘आलोचनात्मक संतुलन’ एहि खण्डमे प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन रूपमे बुझल जाएत अछि।
८८२. (B) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन — ई संकेत ‘आलोचनात्मक संतुलन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८८३. (D) आलोचनात्मक संतुलन — एहि प्रसंगमे ‘पद्धति’ सीधे ‘आलोचनात्मक संतुलन’ सँ जुड़ैत अछि।
८८४. (A) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन — उत्तरमे ‘आलोचनात्मक संतुलन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८८५. (D) प्रशंसा संग सामाजिक-साहित्यिक विवेचन — ‘आलोचनात्मक संतुलन’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८८६. (D) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय — ‘परीक्षा-प्रस्तावना’ एहि खण्डमे लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय रूपमे बुझल जाएत अछि।
८८७. (B) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय — ई संकेत ‘परीक्षा-प्रस्तावना’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८८८. (D) परीक्षा-प्रस्तावना — एहि प्रसंगमे ‘उत्तर-प्रारम्भ’ सीधे ‘परीक्षा-प्रस्तावना’ सँ जुड़ैत अछि।
८८९. (B) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय — उत्तरमे ‘परीक्षा-प्रस्तावना’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८९०. (B) लेखक, विधा, आधार आ विषयक संक्षिप्त परिचय — ‘परीक्षा-प्रस्तावना’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८९१. (A) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय — ‘मूल्यांकन’ एहि खण्डमे कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय रूपमे बुझल जाएत अछि।
८९२. (D) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय — ई संकेत ‘मूल्यांकन’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८९३. (D) मूल्यांकन — एहि प्रसंगमे ‘आलोचना’ सीधे ‘मूल्यांकन’ सँ जुड़ैत अछि।
८९४. (A) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय — उत्तरमे ‘मूल्यांकन’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
८९५. (A) कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक महत्त्वक निर्णय — ‘मूल्यांकन’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
८९६. (D) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम — ‘सारगर्भित निष्कर्ष’ एहि खण्डमे लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम रूपमे बुझल जाएत अछि।
८९७. (C) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम — ई संकेत ‘सारगर्भित निष्कर्ष’क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
८९८. (B) सारगर्भित निष्कर्ष — एहि प्रसंगमे ‘उत्तर-समाप्ति’ सीधे ‘सारगर्भित निष्कर्ष’ सँ जुड़ैत अछि।
८९९. (A) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम — उत्तरमे ‘सारगर्भित निष्कर्ष’ केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९००. (D) लोकस्मृति, वीरता आ न्याय-चेतनाक संगम — ‘सारगर्भित निष्कर्ष’क सार कृतिक आलोचना आ परीक्षा-दृष्टि बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९०१. (B) कथाक जन-नायक — ‘लोरिक’ एहि खण्डमे कथाक जन-नायक रूपमे बुझल जाएत अछि।

९०२. (A) कथाक जन-नायक — ई संकेत 'लोरिक'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९०३. (B) लोरिक — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'लोरिक' सँ जुड़ैत अछि।
९०४. (B) कथाक जन-नायक — उत्तरमे 'लोरिक' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९०५. (A) कथाक जन-नायक — 'लोरिक'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९०६. (D) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र — 'मञ्जरी' एहि खण्डमे मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
९०७. (B) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र — ई संकेत 'मञ्जरी'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९०८. (B) मञ्जरी — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'मञ्जरी' सँ जुड़ैत अछि।
९०९. (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र — उत्तरमे 'मञ्जरी' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९१०. (A) मर्यादा आ स्त्री-गरिमाक प्रमुख पात्र — 'मञ्जरी'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९११. (C) लोरिकक भ्राता — 'सावर' एहि खण्डमे लोरिकक भ्राता रूपमे बुझल जाएत अछि।
९१२. (A) लोरिकक भ्राता — ई संकेत 'सावर'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९१३. (D) सावर — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'सावर' सँ जुड़ैत अछि।
९१४. (B) लोरिकक भ्राता — उत्तरमे 'सावर' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९१५. (B) लोरिकक भ्राता — 'सावर'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९१६. (A) लोरिकक पिता-संदर्भ — 'कुब्बे' एहि खण्डमे लोरिकक पिता-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
९१७. (D) लोरिकक पिता-संदर्भ — ई संकेत 'कुब्बे'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९१८. (D) कुब्बे — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'कुब्बे' सँ जुड़ैत अछि।
९१९. (B) लोरिकक पिता-संदर्भ — उत्तरमे 'कुब्बे' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९२०. (A) लोरिकक पिता-संदर्भ — 'कुब्बे'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९२१. (B) लोरिकक माता-संदर्भ — 'खुलैन' एहि खण्डमे लोरिकक माता-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
९२२. (A) लोरिकक माता-संदर्भ — ई संकेत 'खुलैन'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९२३. (B) खुलैन — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'खुलैन' सँ जुड़ैत अछि।
९२४. (B) लोरिकक माता-संदर्भ — उत्तरमे 'खुलैन' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९२५. (D) लोरिकक माता-संदर्भ — 'खुलैन'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९२६. (B) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ — 'सहदेव' एहि खण्डमे अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
९२७. (A) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ — ई संकेत 'सहदेव'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९२८. (A) सहदेव — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'सहदेव' सँ जुड़ैत अछि।
९२९. (C) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ — उत्तरमे 'सहदेव' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९३०. (D) अगौरा गामक लोकप्रिय राजा-संदर्भ — 'सहदेव'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९३१. (D) मञ्जरीक मामा-संदर्भ — 'सेवाचन' एहि खण्डमे मञ्जरीक मामा-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
९३२. (A) मञ्जरीक मामा-संदर्भ — ई संकेत 'सेवाचन'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
९३३. (D) सेवाचन — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'सेवाचन' सँ जुड़ैत अछि।
९३४. (D) मञ्जरीक मामा-संदर्भ — उत्तरमे 'सेवाचन' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
९३५. (B) मञ्जरीक मामा-संदर्भ — 'सेवाचन'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
९३६. (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति — 'उधरा पँवार' एहि खण्डमे अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति रूपमे बुझल जाएत अछि।
९३७. (D) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति — ई संकेत 'उधरा पँवार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।

१३८. (A) उधरा पँवार — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'उधरा पँवार' सँ जुड़ैत अछि।
१३९. (D) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति — उत्तरमे 'उधरा पँवार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१४०. (C) अत्याचारी प्रतिपक्षी शक्ति — 'उधरा पँवार'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१४१. (B) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र — 'चनैन' एहि खण्डमे प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
१४२. (D) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र — ई संकेत 'चनैन'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१४३. (C) चनैन — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'चनैन' सँ जुड़ैत अछि।
१४४. (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र — उत्तरमे 'चनैन' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१४५. (C) प्रेम-प्रसंगसँ जुड़ल पात्र — 'चनैन'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१४६. (B) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ — 'मोचनी' एहि खण्डमे चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
१४७. (B) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ — ई संकेत 'मोचनी'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१४८. (A) मोचनी — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'मोचनी' सँ जुड़ैत अछि।
१४९. (A) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ — उत्तरमे 'मोचनी' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१५०. (C) चनैन प्रसंगक राजा-संदर्भ — 'मोचनी'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१५१. (D) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र — 'गजभीम' एहि खण्डमे मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
१५२. (D) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र — ई संकेत 'गजभीम'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१५३. (A) गजभीम — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'गजभीम' सँ जुड़ैत अछि।
१५४. (A) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र — उत्तरमे 'गजभीम' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१५५. (B) मल्लयुद्ध-संघर्षक पात्र — 'गजभीम'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१५६. (A) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा — 'हरबा' एहि खण्डमे न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा रूपमे बुझल जाएत अछि।
१५७. (B) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा — ई संकेत 'हरबा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (B) हरबा — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'हरबा' सँ जुड़ैत अछि।
१५९. (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा — उत्तरमे 'हरबा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१६०. (D) न्यूरिगढ़क अत्याचारी राजा — 'हरबा'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१६१. (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र — 'घुघरा पँवार' एहि खण्डमे हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र रूपमे बुझल जाएत अछि।
१६२. (C) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र — ई संकेत 'घुघरा पँवार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१६३. (D) घुघरा पँवार — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'घुघरा पँवार' सँ जुड़ैत अछि।
१६४. (A) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र — उत्तरमे 'घुघरा पँवार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१६५. (A) हरबाक पक्षक आक्रमणकारी पात्र — 'घुघरा पँवार'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१६६. (D) हरबाक भाई-संदर्भ — 'बरबा' एहि खण्डमे हरबाक भाई-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
१६७. (A) हरबाक भाई-संदर्भ — ई संकेत 'बरबा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१६८. (A) बरबा — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'बरबा' सँ जुड़ैत अछि।
१६९. (B) हरबाक भाई-संदर्भ — उत्तरमे 'बरबा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१७०. (C) हरबाक भाई-संदर्भ — 'बरबा'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१७१. (A) हरबाक सहायक-संदर्भ — 'कुँवर अंगार' एहि खण्डमे हरबाक सहायक-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
१७२. (A) हरबाक सहायक-संदर्भ — ई संकेत 'कुँवर अंगार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१७३. (B) कुँवर अंगार — एहि प्रसंगमे 'पात्र' सीधे 'कुँवर अंगार' सँ जुड़ैत अछि।

१७४. (D) हरबाक सहायक-संदर्भ — उत्तरमे 'कुँवर अंगार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१७५. (A) हरबाक सहायक-संदर्भ — 'कुँवर अंगार'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१७६. (B) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल — 'सिलहट अखाड़ा' एहि खण्डमे लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल रूपमे बुझल जाएत अछि।
१७७. (D) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल — ई संकेत 'सिलहट अखाड़ा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१७८. (A) सिलहट अखाड़ा — एहि प्रसंगमे 'स्थान' सीधे 'सिलहट अखाड़ा' सँ जुड़ैत अछि।
१७९. (C) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल — उत्तरमे 'सिलहट अखाड़ा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१८०. (D) लोरिकक मल्ल-प्रतिष्ठाक स्थल — 'सिलहट अखाड़ा'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१८१. (C) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार — 'अगौरा' एहि खण्डमे लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार रूपमे बुझल जाएत अछि।
१८२. (D) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार — ई संकेत 'अगौरा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१८३. (D) अगौरा — एहि प्रसंगमे 'स्थान' सीधे 'अगौरा' सँ जुड़ैत अछि।
१८४. (B) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार — उत्तरमे 'अगौरा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१८५. (A) लोरिकक कथा-संसारक गाम-आधार — 'अगौरा'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१८६. (D) मञ्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ — 'गौरा' एहि खण्डमे मञ्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
१८७. (A) मञ्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ — ई संकेत 'गौरा'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (B) गौरा — एहि प्रसंगमे 'स्थान' सीधे 'गौरा' सँ जुड़ैत अछि।
१८९. (D) मञ्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ — उत्तरमे 'गौरा' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१९०. (C) मञ्जरी आ उधरा प्रसंगक गाम-संदर्भ — 'गौरा'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१९१. (C) हरबाक राज्य-संदर्भ — 'न्यूरिगढ़' एहि खण्डमे हरबाक राज्य-संदर्भ रूपमे बुझल जाएत अछि।
१९२. (C) हरबाक राज्य-संदर्भ — ई संकेत 'न्यूरिगढ़'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१९३. (B) न्यूरिगढ़ — एहि प्रसंगमे 'स्थान' सीधे 'न्यूरिगढ़' सँ जुड़ैत अछि।
१९४. (A) हरबाक राज्य-संदर्भ — उत्तरमे 'न्यूरिगढ़' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१९५. (A) हरबाक राज्य-संदर्भ — 'न्यूरिगढ़'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।
१९६. (D) कैद आ दमनक स्थान — 'हथौरी बन्दीसार' एहि खण्डमे कैद आ दमनक स्थान रूपमे बुझल जाएत अछि।
१९७. (C) कैद आ दमनक स्थान — ई संकेत 'हथौरी बन्दीसार'क साहित्यिक भूमिका स्पष्ट करैत अछि।
१९८. (D) हथौरी बन्दीसार — एहि प्रसंगमे 'स्थान' सीधे 'हथौरी बन्दीसार' सँ जुड़ैत अछि।
१९९. (D) कैद आ दमनक स्थान — उत्तरमे 'हथौरी बन्दीसार' केँ एहि अर्थमे राखलासँ कथ्य स्पष्ट होइत अछि।
१०००. (A) कैद आ दमनक स्थान — 'हथौरी बन्दीसार'क सार कृतिक पात्र-प्रसंग पुनरावृत्ति बुझबाक लेल उपयोगी अछि।

अध्याय २ : विदेह क्विज — कृति राजकमल : आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि

१. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'राजकमल चौधरी'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (B) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह

२. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'कृति राजकमल'क सही अर्थ की अछि?

- (A) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (D) राजकमल चौधरीक मूल नाम

३. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'मैथिली अकादमी, पटना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (B) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (C) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (D) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि

४. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'आरम्भसँ दस कथा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (D) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र

५. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'आधुनिक मैथिली कथा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (C) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य

६. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'मणीन्द्र नारायण चौधरी'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (B) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
- (C) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक

७. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'फूलबाबू'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (B) राजकमलक स्नेह-नाम
- (C) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (D) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र

८. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'सीमान्त व्यक्तित्व'क सही अर्थ की अछि?

- (A) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार

९. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'बहुभाषी रचना'क सही अर्थ की अछि?
- (A) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
(B) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
(C) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
(D) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
१०. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'कथाकार-रूप'क सही अर्थ की अछि?
- (A) राजकमलक स्नेह-नाम
(B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
(C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
(D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य
११. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'कवि-स्वर'क सही अर्थ की अछि?
- (A) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
(B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
(C) केवल नाम-स्मरणक गलती
(D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
१२. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'उपन्यासकार-रूप'क सही अर्थ की अछि?
- (A) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
(B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
(C) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
(D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
१३. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'कथा-संग्रह'क सही अर्थ की अछि?
- (A) राजकमलक स्नेह-नाम
(B) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
(C) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
(D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
१४. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'पाठ्य-पुस्तक दृष्टि'क सही अर्थ की अछि?
- (A) राजकमल चौधरीक मूल नाम
(B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
(C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
(D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
१५. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'समकालीनता'क सही अर्थ की अछि?
- (A) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
(B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
(C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
(D) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
१६. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'प्रयोगशीलता'क सही अर्थ की अछि?
- (A) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
(B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
(C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
(D) केवल नाम-स्मरणक गलती

१७. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'विवादधर्मिता'क सही अर्थ की अछि?
- (A) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
(B) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
(C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
(D) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
१८. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'यथार्थबोध'क सही अर्थ की अछि?
- (A) राजकमलक स्नेह-नाम
(B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
(C) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
(D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण
१९. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'मिथिला-समाज'क सही अर्थ की अछि?
- (A) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
(B) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
(C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
(D) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
२०. लेखक आ पाठ्य-सन्दर्भ खण्डमे 'परीक्षा-कुंजी'क सही अर्थ की अछि?
- (A) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
(B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य
(C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
(D) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
२१. 'राजकमल चौधरी' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?
- (A) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
(B) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
(C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
(D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण
२२. 'कृति राजकमल' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?
- (A) राजकमलक स्नेह-नाम
(B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
(C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
(D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
२३. 'मैथिली अकादमी, पटना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?
- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
(B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
(C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
(D) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
२४. 'आरम्भसँ दस कथा' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?
- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
(B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
(C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
(D) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा

२५. 'आधुनिक मैथिली कथा' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (B) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (C) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (D) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन

२६. 'मणीन्द्र नारायण चौधरी' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

२७. 'फूलबाबू' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
- (B) राजकमलक स्नेह-नाम
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

२८. 'सीमान्त व्यक्तित्व' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (B) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

२९. 'बहुभाषी रचना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (B) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
- (C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (D) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र

३०. 'कथाकार-रूप' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह

३१. 'कवि-स्वर' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था

३२. 'उपन्यासकार-रूप' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (B) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (D) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार

३३. 'कथा-संग्रह' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
- (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (D) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी

३४. 'पाठ्य-पुस्तक दृष्टि' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (D) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था

३५. 'समकालीनता' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य

३६. 'प्रयोगशीलता' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार

३७. 'विवादधर्मिता' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (B) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (C) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण
- (D) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस

३८. 'यथार्थबोध' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण

३९. 'मिथिला-समाज' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) राजकमलक स्नेह-नाम
- (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

४०. 'परीक्षा-कुंजी' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य
- (C) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (D) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार

४१. परीक्षा-उत्तरमे 'राजकमल चौधरी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (B) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

४२. परीक्षा-उत्तरमे 'कृति राजकमल' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
- (B) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (C) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (D) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार

४३. परीक्षा-उत्तरमे 'मैथिली अकादमी, पटना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (B) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (C) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
- (D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक

४४. परीक्षा-उत्तरमे 'आरम्भसँ दस कथा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह

४५. परीक्षा-उत्तरमे 'आधुनिक मैथिली कथा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) राजकमलक स्नेह-नाम
- (D) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा

४६. परीक्षा-उत्तरमे 'मणीन्द्र नारायण चौधरी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) राजकमलक स्नेह-नाम
- (B) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) राजकमल चौधरीक मूल नाम

४७. परीक्षा-उत्तरमे 'फूलबाबू' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (B) राजकमलक स्नेह-नाम
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब

४८. परीक्षा-उत्तरमे 'सीमान्त व्यक्तित्व' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
- (C) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (D) राजकमलक स्नेह-नाम

४९. परीक्षा-उत्तरमे 'बहुभाषी रचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (B) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
- (C) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

५०. परीक्षा-उत्तरमे 'कथाकार-रूप' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पुरान रुढ़िक सरल दोहराव
- (B) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (C) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण

५१. परीक्षा-उत्तरमे 'कवि-स्वर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) पुरान रुढ़िक सरल दोहराव

५२. परीक्षा-उत्तरमे 'उपन्यासकार-रूप' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
- (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र

५३. परीक्षा-उत्तरमे 'कथा-संग्रह' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव

५४. परीक्षा-उत्तरमे 'पाठ्य-पुस्तक दृष्टि' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
- (C) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

५५. परीक्षा-उत्तरमे 'समकालीनता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

५६. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रयोगशीलता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (D) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब

५७. परीक्षा-उत्तरमे 'विवादधर्मिता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
- (B) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) राजकमलक स्नेह-नाम

५८. परीक्षा-उत्तरमे 'यथार्थबोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार

५९. परीक्षा-उत्तरमे 'मिथिला-समाज' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण

६०. परीक्षा-उत्तरमे 'परीक्षा-कुंजी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य
- (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण

६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'राजकमल चौधरी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (B) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कृति राजकमल' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (B) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन

६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मैथिली अकादमी, पटना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आरम्भसँ दस कथा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक

६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आधुनिक मैथिली कथा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (B) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मणीन्द्र नारायण चौधरी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (C) राजकमलक स्नेह-नाम
- (D) राजकमल चौधरीक मूल नाम

६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'फूलबाबू' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (B) राजकमलक स्नेह-नाम
- (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (D) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार

६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सीमान्त व्यक्तित्व' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (B) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (C) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'बहुभाषी रचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह

७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कथाकार-रूप' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) राजकमलक स्नेह-नाम
- (D) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप

७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कवि-स्वर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
- (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (D) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन

७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'उपन्यासकार-रूप' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (B) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (C) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कथा-संग्रह' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (C) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
- (D) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप

७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'पाठ्य-पुस्तक दृष्टि' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (C) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (D) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन

७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'समकालीनता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रुढ़िक सरल दोहराव
- (B) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (C) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (D) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस

७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'प्रयोगशीलता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'विवादधर्मिता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) राजकमलक स्नेह-नाम
- (D) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप

७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'यथार्थबोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (C) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
- (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण

७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मिथिला-समाज' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (B) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'परीक्षा-कुंजी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य

८१. 'राजकमल चौधरी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण
- (B) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव

८२. 'कृति राजकमल' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक
- (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह

८३. 'मैथिली अकादमी, पटना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (D) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र

८४. 'आरम्भसँ दस कथा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र
- (D) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा

८५. 'आधुनिक मैथिली कथा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
- (D) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा

८६. 'मणीन्द्र नारायण चौधरी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (B) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा
- (C) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (D) राजकमल चौधरीक मूल नाम

८७. 'फूलबाबू' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) राजकमलक स्नेह-नाम
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

८८. 'सीमान्त व्यक्तित्व' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार
- (D) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी

८९. 'बहुभाषी रचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) राजकमलक स्नेह-नाम
- (B) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन
- (C) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

९०. 'कथाकार-रूप' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
- (C) राजकमलक स्नेह-नाम
- (D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक

९१. 'कवि-स्वर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था
- (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक

९२. 'उपन्यासकार-रूप' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार
- (B) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक

९३. 'कथा-संग्रह' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप
- (B) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
- (C) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह

९४. 'पाठ्य-पुस्तक दृष्टि' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी
- (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

९५. 'समकालीनता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (B) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस
- (C) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार
- (D) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप

९६. 'प्रयोगशीलता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

९७. 'विवादधर्मिता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (D) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस

९८. 'यथार्थबोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान रुढ़िक सरल दोहराव
- (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (C) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण
- (D) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र

९९. 'मिथिला-समाज' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव
- (D) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार

१००. 'परीक्षा-कुंजी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) राजकमल चौधरीक मूल नाम
- (D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य

१०१. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'अकेलापन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (C) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

१०२. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'विस्थापन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब

१०३. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'अस्तित्व-संकट'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (C) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (D) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि

१०४. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'मध्यवर्गीय पाखण्ड'क सही अर्थ की अछि?

- (A) ऊपरसँ नैतिक मुद्दा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (B) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (C) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया
- (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल

१०५. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'यौन-राजनीति'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव

१०६. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'सामाजिक विडम्बना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (C) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध

१०७. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'असंतोष'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी

१०८. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'साहसिक कथ्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (C) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि

१०९. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'नैतिक प्रश्न'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (B) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (C) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थिति सँ उठल सवाल

११०. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'शहरी तनाव'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (B) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा

१११. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'गाम-नगर द्वन्द्व'क सही अर्थ की अछि?

- (A) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव
- (B) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (C) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

११२. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'आत्म-विद्रोह'क सही अर्थ की अछि?

- (A) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

११३. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'उपेक्षित मनुष्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (C) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब
- (D) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया

११४. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'सम्बन्ध-विघटन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया

११५. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'भूख आ अभाव'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट

११६. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'भयावह यथार्थ'क सही अर्थ की अछि?

- (A) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि

११७. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'स्वप्न-भंग'क सही अर्थ की अछि?

- (A) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (B) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव

११८. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'मुक्ति-कामना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव
- (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (C) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि

११९. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'अनुभूतिक तीव्रता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (C) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल

१२०. आधुनिक कथा-दृष्टि खण्डमे 'प्रश्नाकुलता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध

१२१. 'अकेलापन' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (C) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव

१२२. 'विस्थापन' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब
- (C) ऊपरसँ नैतिक मुद्दा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (D) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न

१२३. 'अस्तित्व-संकट' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

१२४. 'मध्यवर्गीय पाखण्ड' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) ऊपरसँ नैतिक मुद्दा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (B) घटना छोट हो, मुद्दा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (C) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट

१२५. 'यौन-राजनीति' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव
- (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव

१२६. 'सामाजिक विडम्बना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध

१२७. 'असंतोष' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (B) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (C) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

१२८. 'साहसिक कथ्य' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (C) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

१२९. 'नैतिक प्रश्न' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थिति सँ उठल सवाल

१३०. 'शहरी तनाव' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा

१३१. 'गाम-नगर द्वन्द्व' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्र अपन भीतरक झूठ सँ लड़ैत अछि
- (B) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (C) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

१३२. 'आत्म-विद्रोह' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (B) पात्र अपन भीतरक झूठ सँ लड़ैत अछि
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थिति सँ उठल सवाल

१३३. 'उपेक्षित मनुष्य' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (B) बंधन सँ बाहर निकलथक तीव्र चाह
- (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव

१३४. 'सम्बन्ध-विघटन' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटथक प्रक्रिया
- (C) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट

१३५. 'भूख आ अभाव' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा सँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट

१३६. 'भयावह यथार्थ' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (B) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (C) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि

१३७. 'स्वप्न-भंग' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (B) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (D) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह

१३८. 'मुक्ति-कामना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट

१३९. 'अनुभूतिक तीव्रता' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (D) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ

१४०. 'प्रश्नाकुलता' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह

१४१. परीक्षा-उत्तरमे 'अकेलापन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (B) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा

१४२. परीक्षा-उत्तरमे 'विस्थापन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (B) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (C) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब
- (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल

१४३. परीक्षा-उत्तरमे 'अस्तित्व-संकट' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध

१४४. परीक्षा-उत्तरमे 'मध्यवर्गीय पाखण्ड' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (B) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव

१४५. परीक्षा-उत्तरमे 'यौन-राजनीति' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (B) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव

१४६. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक विडम्बना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (B) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी
- (C) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (D) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा

१४७. परीक्षा-उत्तरमे 'असंतोष' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (B) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी

१४८. परीक्षा-उत्तरमे 'साहसिक कथ्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (D) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न

१४९. परीक्षा-उत्तरमे 'नैतिक प्रश्न' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (B) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (C) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थिति सँ उठल सवाल
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

१५०. परीक्षा-उत्तरमे 'शहरी तनाव' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (B) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (C) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

१५१. परीक्षा-उत्तरमे 'गाम-नगर द्वन्द्व' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (C) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव

१५२. परीक्षा-उत्तरमे 'आत्म-विद्रोह' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

१५३. परीक्षा-उत्तरमे 'उपेक्षित मनुष्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसेँ उठल सवाल
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

१५४. परीक्षा-उत्तरमे 'सम्बन्ध-विघटन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया
- (B) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (C) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (D) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर

१५५. परीक्षा-उत्तरमे 'भूख आ अभाव' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) आर्थिक कमी सेँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (C) कथासेँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव

१५६. परीक्षा-उत्तरमे 'भयावह यथार्थ' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथासेँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (D) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा

१५७. परीक्षा-उत्तरमे 'स्वप्न-भंग' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसेँ उठल सवाल
- (C) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

१५८. परीक्षा-उत्तरमे 'मुक्ति-कामना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (C) बंधनसेँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि

१५९. परीक्षा-उत्तरमे 'अनुभूतिक तीव्रता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (B) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससेँ कटि जाएब
- (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध

१६०. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रश्नाकुलता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) आर्थिक कमी सेँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (B) ऊपरसेँ नैतिक मुदा भीतर सेँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (C) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (D) कथासेँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

१६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अकेलापन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (B) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (C) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव

१६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'विस्थापन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब

१६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अस्तित्व-संकट' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (B) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव
- (C) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

१६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मध्यवर्गीय पाखण्ड' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

१६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'यौन-राजनीति' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी
- (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव

१६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सामाजिक विडम्बना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (C) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध

१६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'असंतोष' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (B) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (C) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी
- (D) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि

१६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'साहसिक कथ्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (C) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि

१६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'नैतिक प्रश्न' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव

१७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'शहरी तनाव' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (B) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (C) ऊपरसँ नैतिक मुद्दा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा

१७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'गाम-नगर द्वन्द्व' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव

१७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आत्म-विद्रोह' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी
- (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (C) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (D) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि

१७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'उपेक्षित मनुष्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (D) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी

१७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सम्बन्ध-विघटन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (D) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया

१७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'भूख आ अभाव' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

१७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'भयावह यथार्थ' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (B) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव
- (C) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (D) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा

१७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्वप्न-भंग' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ
- (B) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव
- (C) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

१७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मुक्ति-कामना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा

१७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अनुभूतिक तीव्रता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि

१८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'प्रश्नाकुलता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव

१८१. 'अकेलापन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव

१८२. 'विस्थापन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव
- (C) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब
- (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव

१८३. 'अस्तित्व-संकट' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (C) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (D) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि

१८४. 'मध्यवर्गीय पाखण्ड' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया
- (B) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ

१८५. 'यौन-राजनीति' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव

१८६. 'सामाजिक विडम्बना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब
- (B) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध

१८७. 'असंतोष' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया
- (C) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

१८८. 'साहसिक कथ्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (C) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव
- (D) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न

१८९. 'नैतिक प्रश्न' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह
- (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (C) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (D) ऊपरसँ नैतिक मुद्दा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ

१९०. 'शहरी तनाव' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा
- (C) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

१९१. 'गाम-नगर द्वन्द्व' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि
- (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव

१९२. 'आत्म-विद्रोह' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (D) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि

१९३. 'उपेक्षित मनुष्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब
- (B) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (C) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

१९४. 'सम्बन्ध-विघटन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (C) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (D) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया

१९५. 'भूख आ अभाव' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (B) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट
- (C) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

१९६. 'भयावह यथार्थ' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव
- (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब

१९७. 'स्वप्न-भंग' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव
- (B) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया
- (C) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि
- (D) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव

१९८. 'मुक्ति-कामना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि
- (B) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह

१९९. 'अनुभूतिक तीव्रता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा
- (B) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव
- (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर
- (D) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न

२००. 'प्रश्नाकुलता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थिति सँ उठल सवाल
- (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट

२०१. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'आरम्भिक कथा-समूह'क सही अर्थ की अछि?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब
- (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

२०२. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'प्रवेश-कथा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश

२०३. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'कथानकक संक्षिप्तता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (C) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

२०४. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'वातावरण-निर्माण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (B) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (D) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव

२०५. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'अचानक मोड़'क सही अर्थ की अछि?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (D) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण

२०६. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'खुला अन्त'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान

२०७. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'मौनक अर्थ'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब
- (C) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

२०८. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'पात्र-केन्द्र'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (C) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (D) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब

२०९. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'क्षण-बोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

२१०. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'अन्तःसंवाद'क सही अर्थ की अछि?

- (A) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (B) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (C) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (D) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान

२११. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'संकेत-शृंखला'क सही अर्थ की अछि?

- (A) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (B) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

२१२. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'सामाजिक पृष्ठभूमि'क सही अर्थ की अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

२१३. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'घरेलू प्रसंग'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (C) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (D) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि

२१४. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'बाजारक संकेत'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (B) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (C) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

२१५. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'स्मृति-रचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि

२१६. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'विरोधाभास'क सही अर्थ की अछि?

- (A) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (B) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२१७. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'करुण-व्यंग्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (C) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

२१८. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'लघु दृश्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

२१९. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'विषय-क्रम'क सही अर्थ की अछि?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

२२०. आरम्भिक दस कथाक विन्यास खण्डमे 'पाठकीय सतर्कता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान

२२१. 'आरम्भिक कथा-समूह' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि

२२२. 'प्रवेश-कथा' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (B) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (C) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (D) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि

२२३. 'कथानकक संक्षिप्तता' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (B) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (C) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२२४. 'वातावरण-निर्माण' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

२२५. 'अचानक मोड़' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (B) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (C) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

२२६. 'खुला अन्त' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (B) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (C) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

२२७. 'मौनक अर्थ' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

२२८. 'पात्र-केन्द्र' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब
- (B) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (C) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (D) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर

२२९. 'क्षण-बोध' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

२३०. 'अन्तःसंवाद' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (B) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (C) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

२३१. 'संकेत-शृंखला' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (C) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (D) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब

२३२. 'सामाजिक पृष्ठभूमि' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

२३३. 'घरेलू प्रसंग' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (B) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (C) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (D) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी

२३४. 'बाजारक संकेत' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (B) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (D) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन

२३५. 'स्मृति-रचना' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (B) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (C) बीटल घटना वर्तमान संकट के अर्थ देइत अछि
- (D) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन

२३६. 'विरोधाभास' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (D) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक

२३७. 'करुण-व्यंग्य' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (B) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

२३८. 'लघु दृश्य' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

२३९. 'विषय-क्रम' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (C) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (D) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी

२४०. 'पाठकीय सतर्कता' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) बीटल घटना वर्तमान संकट के अर्थ देइत अछि
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (D) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क

२४१. परीक्षा-उत्तरमे 'आरम्भिक कथा-समूह' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (C) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब

२४२. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रवेश-कथा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (B) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक

२४३. परीक्षा-उत्तरमे 'कथानकक संक्षिप्तता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण

२४४. परीक्षा-उत्तरमे 'वातावरण-निर्माण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (D) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क

२४५. परीक्षा-उत्तरमे 'अचानक मोड़' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (D) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण

२४६. परीक्षा-उत्तरमे 'खुला अन्त' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (C) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

२४७. परीक्षा-उत्तरमे 'मौनक अर्थ' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (B) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति
- (C) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

२४८. परीक्षा-उत्तरमे 'पात्र-केन्द्र' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (B) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (C) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

२४९. परीक्षा-उत्तरमे 'क्षण-बोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (D) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान

२५०. परीक्षा-उत्तरमे 'अन्तःसंवाद' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क

२५१. परीक्षा-उत्तरमे 'संकेत-शृंखला' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (C) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (D) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क

२५२. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक पृष्ठभूमि' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (C) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

२५३. परीक्षा-उत्तरमे 'घरेलू प्रसंग' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (B) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

२५४. परीक्षा-उत्तरमे 'बाजारक संकेत' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (B) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

२५५. परीक्षा-उत्तरमे 'स्मृति-रचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (C) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (D) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब

२५६. परीक्षा-उत्तरमे 'विरोधाभास' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब

२५७. परीक्षा-उत्तरमे 'करुण-व्यंग्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२५८. परीक्षा-उत्तरमे 'लघु दृश्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (B) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (C) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (D) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि

२५९. परीक्षा-उत्तरमे 'विषय-क्रम' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (D) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क

२६०. परीक्षा-उत्तरमे 'पाठकीय सतर्कता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब

२६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आरम्भिक कथा-समूह' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (D) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन

२६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'प्रवेश-कथा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (B) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (C) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (D) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि

२६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कथानक संक्षिप्तता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'वातावरण-निर्माण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (B) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (D) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश

२६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अचानक मोड़' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (D) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर

२६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'खुला अन्त' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (B) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (C) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब

२६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मौनक अर्थ' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (B) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब
- (C) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (D) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण

२६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'पात्र-केन्द्र' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (C) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'क्षण-बोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (B) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति
- (C) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

२७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अन्तःसंवाद' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (C) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (D) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क

२७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'संकेत-शृंखला' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (D) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन

२७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सामाजिक पृष्ठभूमि' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

२७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'घरेलू प्रसंग' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (B) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (D) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि

२७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'बाजारक संकेत' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (D) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क

२७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्मृति-रचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (B) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (C) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

२७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'विरोधाभास' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (D) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव

२७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'करुण-व्यंग्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब
- (B) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (C) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (D) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण

२७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'लघु दृश्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (C) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

२७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'विषय-क्रम' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (D) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी

२८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'पाठकीय सतर्कता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

२८१. 'आरम्भिक कथा-समूह' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन
- (B) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (C) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

२८२. 'प्रवेश-कथा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (B) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (C) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (D) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब

२८३. 'कथानकक संक्षिप्तता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि
- (B) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति
- (C) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

२८४. 'वातावरण-निर्माण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (D) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब

२८५. 'अचानक मोड़' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (B) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (C) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

२८६. 'खुला अन्त' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (B) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (C) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब

२८७. 'मौनक अर्थ' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब
- (B) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२८८. 'पात्र-केन्द्र' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (C) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (D) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क

२८९. 'क्षण-बोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (C) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब
- (D) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि

२९०. 'अन्तःसंवाद' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (B) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

२९१. 'संकेत-शृंखला' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (B) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव

२९२. 'सामाजिक पृष्ठभूमि' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि
- (B) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२९३. 'घरेलू प्रसंग' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि

२९४. 'बाजारक संकेत' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (B) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव
- (C) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (D) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि

२९५. 'स्मृति-रचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव

२९६. 'विरोधाभास' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क
- (B) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क
- (C) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब
- (D) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब

२९७. 'करुण-व्यंग्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (B) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव
- (C) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर
- (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति

२९८. 'लघु दृश्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि

२९९. 'विषय-क्रम' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण
- (B) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब

३००. 'पाठकीय सतर्कता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश
- (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव
- (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान
- (D) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव

३०१. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'टूटल पात्र'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि

३०२. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'अपराध-बोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (B) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (C) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

३०३. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'द्वन्द्व'क सही अर्थ की अछि?

- (A) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (D) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष

३०४. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'निरर्थकता-बोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (B) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण
- (C) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

३०५. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'आत्म-छल'क सही अर्थ की अछि?

- (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

३०६. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'मनोकामना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (B) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

३०७. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'भ्रम'क सही अर्थ की अछि?

- (A) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (D) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण

३०८. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'कुण्ठा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (D) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब

३०९. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'आत्म-सम्मान'क सही अर्थ की अछि?

- (A) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि
- (B) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (C) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (D) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा

३१०. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'लाचारी'क सही अर्थ की अछि?

- (A) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (B) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (D) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष

३११. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'छटपटाहट'क सही अर्थ की अछि?

- (A) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (B) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (C) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

३१२. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'स्मृतिजन्य पीड़ा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (B) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि

३१३. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'मौन प्रतिरोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (D) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब

३१४. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'सामाजिक मुखौटा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि

३१५. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'आत्म-विच्छेद'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न
- (D) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब

३१६. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'दबायल क्रोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (B) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (C) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (D) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ

३१७. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'करुण मनुष्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र

३१८. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'अनाम भय'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (C) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

३१९. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'भीतरक संवाद'क सही अर्थ की अछि?

- (A) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (B) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न

३२०. पात्र आ मनोविज्ञान खण्डमे 'मनोवैज्ञानिक यथार्थ'क सही अर्थ की अछि?

- (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (B) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (C) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न

३२१. 'टूटल पात्र' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि
- (B) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (C) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (D) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा

३२२. 'अपराध-बोध' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच

३२३. 'द्वन्द्व' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (C) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (D) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब

३२४. 'निरर्थकता-बोध' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (B) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

३२५. 'आत्म-छल' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (B) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (C) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न

३२६. 'मनोकामना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र

३२७. 'भ्रम' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (B) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

३२८. 'कुण्ठा' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (B) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि

३२९. 'आत्म-सम्मान' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (C) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (D) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा

३३०. 'लाचारी' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) सत्य कें देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण

३३१. 'छटपटाहट' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) बीतल घटना वर्तमान मनकें कुरेदैत अछि

३३२. 'स्मृतिजन्य पीड़ा' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) बीतल घटना वर्तमान मनकें कुरेदैत अछि

३३३. 'मौन प्रतिरोध' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (D) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब

३३४. 'सामाजिक मुखौटा' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच

३३५. 'आत्म-विच्छेद' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि

३३६. 'दबायल क्रोध' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (B) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (C) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

३३७. 'करुण मनुष्य' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (C) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

३३८. 'अनाम भय' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (B) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (C) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (D) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि

३३९. 'भीतरक संवाद' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न
- (D) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा

३४०. 'मनोवैज्ञानिक यथार्थ' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र

३४१. परीक्षा-उत्तरमे 'टूटल पात्र' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि

३४२. परीक्षा-उत्तरमे 'अपराध-बोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (B) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (C) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

३४३. परीक्षा-उत्तरमे 'द्वन्द्व' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि

३४४. परीक्षा-उत्तरमे 'निरर्थकता-बोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (B) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब

३४५. परीक्षा-उत्तरमे 'आत्म-छल' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (B) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (D) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच

३४६. परीक्षा-उत्तरमे 'मनोकामना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा
- (B) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि
- (C) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (D) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब

३४७. परीक्षा-उत्तरमे 'भ्रम' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न
- (B) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (C) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण
- (D) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति

३४८. परीक्षा-उत्तरमे 'कुण्ठा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (C) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण
- (D) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ

३४९. परीक्षा-उत्तरमे 'आत्म-सम्मान' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (D) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा

३५०. परीक्षा-उत्तरमे 'लाचारी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

३५१. परीक्षा-उत्तरमे 'छटपटाहट' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न

३५२. परीक्षा-उत्तरमे 'स्मृतिजन्य पीड़ा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (D) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि

३५३. परीक्षा-उत्तरमे 'मौन प्रतिरोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (C) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (D) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण

३५४. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक मुखौटा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (B) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि
- (C) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न

३५५. परीक्षा-उत्तरमे 'आत्म-विच्छेद' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

३५६. परीक्षा-उत्तरमे 'दबायल क्रोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार

३५७. परीक्षा-उत्तरमे 'करुण मनुष्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (D) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि

३५८. परीक्षा-उत्तरमे 'अनाम भय' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र

३५९. परीक्षा-उत्तरमे 'भीतरक संवाद' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

३६०. परीक्षा-उत्तरमे 'मनोवैज्ञानिक यथार्थ' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (B) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (D) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि

३६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'टूटल पात्र' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि
- (C) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (D) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब

३६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अपराध-बोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (C) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (D) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि

३६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'द्वन्द्व' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (B) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (C) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (D) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण

३६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'निरर्थकता-बोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

३६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आत्म-छल' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि

३६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मनोकामना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

३६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'भ्रम' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा
- (D) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण

३६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कुण्ठा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (B) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

३६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आत्म-सम्मान' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (B) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (C) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा
- (D) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण

३७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'लाचारी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

३७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'छटपटाहट' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

३७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्मृतिजन्य पीड़ा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (B) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (D) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब

३७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मौन प्रतिरोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (B) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (D) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ

३७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सामाजिक मुखौटा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

३७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आत्म-विच्छेद' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (B) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

३७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'दबायल क्रोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (C) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र

३७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'करुण मनुष्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (C) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष
- (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र

३७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अनाम भय' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (B) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (C) बीतल घटना वर्तमान मनकें कुरेदैत अछि
- (D) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ

३७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'भीतरक संवाद' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न

३८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मनोवैज्ञानिक यथार्थ' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (D) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब

३८१. 'टूटल पात्र' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (B) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि
- (C) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

३८२. 'अपराध-बोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (B) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न
- (C) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (D) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ

३८३. 'द्वन्द्व' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (D) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष

३८४. 'निरर्थकता-बोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

३८५. 'आत्म-छल' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (B) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

३८६. 'मनोकामना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (D) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि

३८७. 'भ्रम' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि
- (B) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण
- (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

३८८. 'कुण्ठा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

३८९. 'आत्म-सम्मान' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

३९०. 'लाचारी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न
- (D) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति

३९१. 'छटपटाहट' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब
- (B) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि

३९२. 'स्मृतिजन्य पीड़ा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि
- (B) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (C) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति
- (D) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब

३९३. 'मौन प्रतिरोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब
- (B) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

३९४. 'सामाजिक मुखौटा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (B) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि
- (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (D) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच

३९५. 'आत्म-विच्छेद' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (D) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि

३९६. 'दबायल क्रोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (B) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (C) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (D) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब

३९७. 'करुण मनुष्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र

३९८. 'अनाम भय' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (C) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (D) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि

३९९. 'भीतरक संवाद' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार
- (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न

४००. 'मनोवैज्ञानिक यथार्थ' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब
- (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा
- (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ
- (D) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब

४०१. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'स्त्री-अनुभव'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (C) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (D) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना

४०२. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'देहक प्रश्न'क सही अर्थ की अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (C) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

४०३. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'दाम्पत्य तनाव'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (C) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (D) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास

४०४. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'प्रेमक विडम्बना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (C) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव

४०५. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'स्त्री-स्वायत्तता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका

४०६. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'पुरुष-दृष्टि'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (C) व्यक्ति अपन चाहकेँ मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (D) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका

४०७. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'नैतिक दमन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (C) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (D) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना

४०८. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'देह-बाजार'क सही अर्थ की अछि?

- (A) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (B) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

४०९. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'अन्तरंगता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण

४१०. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'अपमान'क सही अर्थ की अछि?

- (A) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (B) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (C) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (D) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब

४११. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'विवाह-संस्था'क सही अर्थ की अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

४१२. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'मातृत्व'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा

४१३. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'इच्छाक अधिकार'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (D) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम

४१४. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'स्त्रीक मौन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास

४१५. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'शोषण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (C) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (D) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव

४१६. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'सामाजिक लांछन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (B) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका

४१७. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'करुणा आ आलोचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (D) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट

४१८. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'स्त्री-पुरुष असमानता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (D) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड

४१९. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'भितरी आवाज'क सही अर्थ की अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (C) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (D) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी

४२०. स्त्री-पात्र, देह आ समाज खण्डमे 'देह-संवेदना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

४२१. 'स्त्री-अनुभव' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (C) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (D) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा

४२२. 'देहक प्रश्न' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण

४२३. 'दाम्पत्य तनाव' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव

४२४. 'प्रेमक विडम्बना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (B) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (C) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (D) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना

४२५. 'स्त्री-स्वायत्तता' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (B) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (C) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

४२६. 'पुरुष-दृष्टि' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (D) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज

४२७. 'नैतिक दमन' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (B) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

४२८. 'देह-बाजार' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (C) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

४२९. 'अन्तरंगता' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (B) व्यक्ति अपन चाहकेँ मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम

४३०. 'अपमान' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (B) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (C) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (D) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय

४३१. 'विवाह-संस्था' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति

४३२. 'मातृत्व' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (B) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (C) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

४३३. 'इच्छाक अधिकार' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) व्यक्ति अपन चाहकेँ मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (B) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

४३४. 'स्त्रीक मौन' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (D) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव

४३५. 'शोषण' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (B) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (C) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

४३६. 'सामाजिक लांछन' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (C) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण

४३७. 'करुणा आ आलोचना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (B) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (C) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (D) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना

४३८. 'स्त्री-पुरुष असमानता' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (B) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) व्यक्ति अपन चाहकेँ मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति

४३९. 'भितरी आवाज' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (B) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (C) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति

४४०. 'देह-संवेदना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (C) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (D) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड

४४१. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-अनुभव' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (C) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (D) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब

४४२. परीक्षा-उत्तरमे 'देहक प्रश्न' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (B) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण

४४३. परीक्षा-उत्तरमे 'दाम्पत्य तनाव' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (B) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

४४४. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रेमक विडम्बना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (B) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव

४४५. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-स्वायत्तता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (C) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

४४६. परीक्षा-उत्तरमे 'पुरुष-दृष्टि' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका

४४७. परीक्षा-उत्तरमे 'नैतिक दमन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (B) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय

४४८. परीक्षा-उत्तरमे 'देह-बाजार' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (D) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट

४४९. परीक्षा-उत्तरमे 'अन्तरंगता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

४५०. परीक्षा-उत्तरमे 'अपमान' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (C) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (D) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास

४५१. परीक्षा-उत्तरमे 'विवाह-संस्था' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम

४५२. परीक्षा-उत्तरमे 'मातृत्व' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (C) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति

४५३. परीक्षा-उत्तरमे 'इच्छाक अधिकार' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

४५४. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्रीक मौन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट

४५५. परीक्षा-उत्तरमे 'शोषण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (B) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (D) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव

४५६. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक लांछन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय

४५७. परीक्षा-उत्तरमे 'करुणा आ आलोचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (D) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति

४५८. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-पुरुष असमानता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (B) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (C) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (D) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड

४५९. परीक्षा-उत्तरमे 'भितरी आवाज' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

४६०. परीक्षा-उत्तरमे 'देह-संवेदना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (B) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड
- (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (D) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव

४६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्त्री-अनुभव' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छ, पीड़ा आ आवाज
- (B) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (C) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (D) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट

४६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'देहक प्रश्न' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (C) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति

४६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'दाम्पत्य तनाव' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (D) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव

४६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'प्रेमक विडम्बना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

४६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्त्री-स्वायत्तता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (B) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (C) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

४६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'पुरुष-दृष्टि' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका

४६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'नैतिक दमन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति

४६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'देह-बाजार' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

४६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अन्तरंगता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) व्यक्ति अपन चाहकेँ मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (C) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड
- (D) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी

४७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अपमान' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना

४७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'विवाह-संस्था' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (C) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (D) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब

४७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मातृत्व' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (B) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (D) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा

४७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'इच्छाक अधिकार' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट
- (C) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (D) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति

४७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्त्रीक मौन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (B) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

४७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'शोषण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब

४७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सामाजिक लांछन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (D) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय

४७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'करुणा आ आलोचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (B) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड

४७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्त्री-पुरुष असमानता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (D) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज

४७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'भितरी आवाज' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास

४८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'देह-संवेदना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (B) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ

४८१. 'स्त्री-अनुभव' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (B) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (C) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण

४८२. 'देहक प्रश्न' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (B) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण

४८३. 'दाम्पत्य तनाव' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (B) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (C) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (D) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड

४८४. 'प्रेमक विडम्बना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट
- (B) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव

४८५. 'स्त्री-स्वायत्तता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि
- (B) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (D) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय

४८६. 'पुरुष-दृष्टि' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम

४८७. 'नैतिक दमन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति
- (C) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (D) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट

४८८. 'देह-बाजार' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (C) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (D) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध

४८९. 'अन्तरंगता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव
- (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (D) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ

४९०. 'अपमान' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट

४९१. 'विवाह-संस्था' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम
- (D) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास

४९२. 'मातृत्व' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज
- (B) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा
- (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (D) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट

४९३. 'इच्छाक अधिकार' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास
- (B) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति
- (C) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (D) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट

४९४. 'स्त्रीक मौन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति

४९५. 'शोषण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

४९६. 'सामाजिक लांछन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (B) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (C) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण
- (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव

४९७. 'करुणा आ आलोचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति

४९८. 'स्त्री-पुरुष असमानता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय
- (C) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड
- (D) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब

४९९. 'भितरी आवाज' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका
- (C) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव
- (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति

५००. 'देह-संवेदना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध
- (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

५०१. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'मध्यवर्ग'क सही अर्थ की अछि?

- (A) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (B) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी

५०२. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'निम्नवर्ग'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (D) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण

५०३. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'अर्थाभाव'क सही अर्थ की अछि?

- (A) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (B) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (C) ककरा निर्णायक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

५०४. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'उपभोग-लालसा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (B) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (C) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (D) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह

५०५. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'नवधनाढ्य मानसिकता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (B) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव

५०६. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'परमिट-राज'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण

५०७. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'भ्रष्टाचार'क सही अर्थ की अछि?

- (A) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (B) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न

५०८. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'शहर'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (B) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (C) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र

५०९. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'गाम'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (B) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (D) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था

५१०. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'कस्बा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (C) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश

५११. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'जाति-संरचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र
- (B) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था

५१२. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'पितृसत्ता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (B) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (C) ककरा निर्णायक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता
- (D) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल

५१३. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'लोक-संस्कार'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार

५१४. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'वर्ग-अन्तर'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न

५१५. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'रोजगार-संकट'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न

५१६. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'सत्ता-संबंध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता

५१७. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'सामाजिक अपदस्थता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (B) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (D) केन्द्रसँ किनार पर धकेलल जाएब

५१८. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'सांस्कृतिक संक्रमण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (D) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण

५१९. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'परिवेश-संकेत'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न

५२०. समाज, वर्ग आ परिवेश खण्डमे 'समाज-आलोचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (D) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न

५२१. 'मध्यवर्ग' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (C) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

५२२. 'निम्नवर्ग' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग

५२३. 'अर्थाभाव' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) केन्द्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (C) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव

५२४. 'उपभोग-लालसा' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (B) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (C) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

५२५. 'नवधनाढ्य मानसिकता' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (C) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (D) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल

५२६. 'परमिट-राज' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण

५२७. 'भ्रष्टाचार' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (B) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (D) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग

५२८. 'शहर' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (B) ककरा निर्णायक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता
- (C) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र

५२९. 'गाम' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (B) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (C) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार

५३०. 'कस्बा' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (D) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह

५३१. 'जाति-संरचना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (B) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता

५३२. 'पितृसत्ता' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (B) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (C) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (D) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण

५३३. 'लोक-संस्कार' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (D) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था

५३४. 'वर्ग-अन्तर' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (C) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (D) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग

५३५. 'रोजगार-संकट' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र

५३६. 'सत्ता-संबंध' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (B) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (C) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता

५३७. 'सामाजिक अपदस्थता' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (D) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब

५३८. 'सांस्कृतिक संक्रमण' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

५३९. 'परिवेश-संकेत' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (D) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग

५४०. 'समाज-आलोचना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

५४१. परीक्षा-उत्तरमे 'मध्यवर्ग' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (C) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

५४२. परीक्षा-उत्तरमे 'निम्नवर्ग' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र
- (B) ककरा निर्णायक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता
- (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (D) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल

५४३. परीक्षा-उत्तरमे 'अर्थाभाव' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव

५४४. परीक्षा-उत्तरमे 'उपभोग-लालसा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार

५४५. परीक्षा-उत्तरमे 'नवधनाढ्य मानसिकता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

५४६. परीक्षा-उत्तरमे 'परमिट-राज' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (B) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (C) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

५४७. परीक्षा-उत्तरमे 'भ्रष्टाचार' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (B) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (D) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण

५४८. परीक्षा-उत्तरमे 'शहर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (B) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र

५४९. परीक्षा-उत्तरमे 'गाम' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (B) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (C) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

५५०. परीक्षा-उत्तरमे 'कस्बा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (B) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (D) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था

५५१. परीक्षा-उत्तरमे 'जाति-संरचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

५५२. परीक्षा-उत्तरमे 'पितृसत्ता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (B) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण

५५३. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-संस्कार' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार

५५४. परीक्षा-उत्तरमे 'वर्ग-अन्तर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (B) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (C) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (D) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब

५५५. परीक्षा-उत्तरमे 'रोजगार-संकट' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (B) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र

५५६. परीक्षा-उत्तरमे 'सत्ता-संबंध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता

५५७. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक अपदस्थता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (D) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल

५५८. परीक्षा-उत्तरमे 'सांस्कृतिक संक्रमण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

५५९. परीक्षा-उत्तरमे 'परिवेश-संकेत' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

५६०. परीक्षा-उत्तरमे 'समाज-आलोचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न

५६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मध्यवर्ग' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (C) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

५६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'निम्नवर्ग' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग

५६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अर्थाभाव' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र

५६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'उपभोग-लालसा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश

५६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'नवधनाढ्य मानसिकता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (D) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था

५६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'परमिट-राज' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (B) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश

५६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'भ्रष्टाचार' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (B) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (C) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

५६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'शहर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (B) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (C) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र
- (D) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न

५६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'गाम' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (B) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (C) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता
- (D) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी

५७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कस्बा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश

५७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'जाति-संरचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न

५७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'पितृसत्ता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

५७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'लोक-संस्कार' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न

५७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'वर्ग-अन्तर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (C) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश

५७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'रोजगार-संकट' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (D) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब

५७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सत्ता-संबंध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता

५७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सामाजिक अपदस्थता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (B) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब

५७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सांस्कृतिक संक्रमण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (D) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल

५७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'परिवेश-संकेत' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (D) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण

५८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'समाज-आलोचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

५८१. 'मध्यवर्ग' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (D) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था

५८२. 'निम्नवर्ग' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग
- (D) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल

५८३. 'अर्थाभाव' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (B) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (C) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव

५८४. 'उपभोग-लालसा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (C) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

५८५. 'नवधनाढ्य मानसिकता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (B) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (C) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (D) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल

५८६. 'परमिट-राज' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण
- (B) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (C) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार

५८७. 'भ्रष्टाचार' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

५८८. 'शहर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (B) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र
- (C) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव

५८९. 'गाम' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (B) ककरा निर्णायक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार

५९०. 'कस्बा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश

५९१. 'जाति-संरचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

५९२. 'पितृसत्ता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था
- (B) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण
- (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न

५९३. 'लोक-संस्कार' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र

५९४. 'वर्ग-अन्तर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

५९५. 'रोजगार-संकट' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश
- (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (C) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

५९६. 'सत्ता-संबंध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह
- (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (C) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र
- (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता

५९७. 'सामाजिक अपदस्थता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब
- (B) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग

५९८. 'सांस्कृतिक संक्रमण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब

५९९. 'परिवेश-संकेत' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता
- (B) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ
- (C) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

६००. 'समाज-आलोचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण
- (B) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल
- (C) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न
- (D) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग

६०१. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'संक्षिप्त वाक्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (D) कम शब्दमे तीखा प्रभाव

६०२. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'काव्यात्मक बिम्ब'क सही अर्थ की अछि?

- (A) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (B) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

६०३. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'प्रतीक'क सही अर्थ की अछि?

- (A) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (C) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (D) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन

६०४. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'आन्तरिक एकालाप'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (D) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब

६०५. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'विखण्डित संरचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरान रुढ़िक सरल दोहराव
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

६०६. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'व्यंग्यात्मक भाषा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (B) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (C) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (D) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ

६०७. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'लोक-शब्द'क सही अर्थ की अछि?

- (A) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (B) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) कम शब्दमे तीखा प्रभाव

६०८. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'शहरी शब्द-संकेत'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (B) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (C) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (D) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली

६०९. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'मौन-विराम'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (C) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

६१०. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'कटाक्ष'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) कम शब्दमे तीखा प्रभाव

६११. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'वस्तु-चित्रण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (D) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही

६१२. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'रूपक'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (B) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब

६१३. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'सम्बोधन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (B) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (C) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (D) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब

६१४. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'संवाद'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (C) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा

६१५. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'उपपाठ'क सही अर्थ की अछि?

- (A) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (B) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि

६१६. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'बिम्ब-विरोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (D) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव

६१७. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'कथावाचक'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (B) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (C) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

६१८. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'समय-प्रयोग'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (B) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (D) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता

६१९. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'अन्तक झटका'क सही अर्थ की अछि?

- (A) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (B) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब

६२०. भाषा, शिल्प आ प्रतीक खण्डमे 'शिल्प-चेतना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

६२१. 'संक्षिप्त वाक्य' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (B) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (C) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (D) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि

६२२. 'काव्यात्मक बिम्ब' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (B) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

६२३. 'प्रतीक' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (B) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि

६२४. 'आन्तरिक एकालाप' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (B) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (C) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (D) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन

६२५. 'विखण्डित संरचना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

६२६. 'व्यंग्यात्मक भाषा' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब

६२७. 'लोक-शब्द' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (B) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (D) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द

६२८. 'शहरी शब्द-संकेत' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (C) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

६२९. 'मौन-विराम' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (D) कथनक बीच रुकी गेल बात

६३०. 'कटाक्ष' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (D) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन

६३१. 'वस्तु-चित्रण' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब

६३२. 'रूपक' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (B) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (C) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (D) कथनक बीच रुकी गेल बात

६३३. 'सम्बोधन' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (D) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव

६३४. 'संवाद' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (C) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (D) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि

६३५. 'उपपाठ' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (B) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (C) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (D) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ

६३६. 'बिम्ब-विरोध' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (C) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (D) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ

६३७. 'कथावाचक' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (C) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (D) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन

६३८. 'समय-प्रयोग' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६३९. 'अन्तक झटका' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (D) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ

६४०. 'शिल्प-चेतना' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (B) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

६४१. परीक्षा-उत्तरमे 'संक्षिप्त वाक्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (B) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) कम शब्दमे तीखा प्रभाव

६४२. परीक्षा-उत्तरमे 'काव्यात्मक बिम्ब' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (D) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव

६४३. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रतीक' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६४४. परीक्षा-उत्तरमे 'आन्तरिक एकालाप' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (B) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (C) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६४५. परीक्षा-उत्तरमे 'विखण्डित संरचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६४६. परीक्षा-उत्तरमे 'व्यंग्यात्मक भाषा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (B) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ

६४७. परीक्षा-उत्तरमे 'लोक-शब्द' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (B) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (C) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (D) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द

६४८. परीक्षा-उत्तरमे 'शहरी शब्द-संकेत' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (B) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (C) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा

६४९. परीक्षा-उत्तरमे 'मौन-विराम' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (B) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (C) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (D) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी

६५०. परीक्षा-उत्तरमे 'कटाक्ष' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा

६५१. परीक्षा-उत्तरमे 'वस्तु-चित्रण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (B) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (C) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

६५२. परीक्षा-उत्तरमे 'रूपक' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (B) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (C) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (D) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि

६५३. परीक्षा-उत्तरमे 'सम्बोधन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (B) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

६५४. परीक्षा-उत्तरमे 'संवाद' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (D) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब

६५५. परीक्षा-उत्तरमे 'उपपाठ' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (B) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (C) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (D) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली

६५६. परीक्षा-उत्तरमे 'बिम्ब-विरोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

६५७. परीक्षा-उत्तरमे 'कथावाचक' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (D) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब

६५८. परीक्षा-उत्तरमे 'समय-प्रयोग' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा

६५९. परीक्षा-उत्तरमे 'अन्तक झटका' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६६०. परीक्षा-उत्तरमे 'शिल्प-चेतना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (B) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (C) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

६६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'संक्षिप्त वाक्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (D) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली

६६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'काव्यात्मक बिम्ब' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि

६६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'प्रतीक' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (B) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (C) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (D) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द

६६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आन्तरिक एकालाप' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन

६६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'विखण्डित संरचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा

६६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'व्यंग्यात्मक भाषा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरान रुढ़िक सरल दोहराव
- (B) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (C) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

६६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'लोक-शब्द' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (D) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता

६६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'शहरी शब्द-संकेत' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा

६६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मौन-विराम' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (D) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब

६७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कटाक्ष' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि

६७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'वस्तु-चित्रण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (B) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (C) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

६७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'रूपक' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

६७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सम्बोधन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (B) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (C) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

६७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'संवाद' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (B) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

६७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'उपपाठ' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (C) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

६७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'बिम्ब-विरोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन

६७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कथावाचक' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (D) कम शब्दमे तीखा प्रभाव

६७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'समय-प्रयोग' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (B) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब

६७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अन्तक झटका' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (B) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब

६८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'शिल्प-चेतना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (D) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली

६८१. 'संक्षिप्त वाक्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (B) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

६८२. 'काव्यात्मक बिम्ब' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान रुढ़िक सरल दोहराव
- (B) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन

६८३. 'प्रतीक' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि
- (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (C) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (D) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब

६८४. 'आन्तरिक एकालाप' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब
- (B) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (C) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

६८५. 'विखण्डित संरचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि

६८६. 'व्यंग्यात्मक भाषा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (C) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (D) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन

६८७. 'लोक-शब्द' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन
- (B) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (C) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (D) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब

६८८. 'शहरी शब्द-संकेत' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (B) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (C) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

६८९. 'मौन-विराम' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता
- (D) कथनक बीच रुकी गेल बात

६९०. 'कटाक्ष' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (B) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ
- (C) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (D) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली

६९१. 'वस्तु-चित्रण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कम शब्दमे तीखा प्रभाव
- (B) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब
- (C) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द
- (D) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन

६९२. 'रूपक' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (D) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ

६९३. 'सम्बोधन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

६९४. 'संवाद' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन
- (C) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (D) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब

६९५. 'उपपाठ' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (D) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ

६९६. 'बिम्ब-विरोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) कथनक बीच रुकी गेल बात
- (C) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा

६९७. 'कथावाचक' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (C) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब
- (D) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि

६९८. 'समय-प्रयोग' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब
- (B) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही

६९९. 'अन्तक झटका' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब

७००. 'शिल्प-चेतना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी
- (B) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव
- (C) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ
- (D) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता

७०१. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'मूल्य-भंजन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (C) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (D) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न

७०२. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'सामाजिक पाखण्ड'क सही अर्थ की अछि?

- (A) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (D) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता

७०३. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'धर्माडम्बर'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (D) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण

७०४. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'नैतिक दोहरापन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (D) मानवीय संबंधक वस्तुकरण

७०५. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'व्यवस्था-विरोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (B) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (C) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार

७०६. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'वर्ग-आलोचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (B) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय

७०७. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'देह-नियंत्रणक आलोचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (B) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (C) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (D) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह

७०८. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'सांस्कृतिक रूढ़ि'क सही अर्थ की अछि?

- (A) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (D) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम

७०९. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'नागरिक विडम्बना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल

७१०. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'बाजारवाद'क सही अर्थ की अछि?

- (A) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (D) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न

७११. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'आत्म-आलोचना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि

७१२. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'विद्रोही भाषा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि

७१३. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'करुण व्यंग्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (B) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल

७१४. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'सत्ता-व्यवस्था'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (B) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल

७१५. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'छद्म आदर्श'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता
- (C) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार

७१६. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'अन्याय-बोध'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि

७१७. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'सवाल करब'क सही अर्थ की अछि?

- (A) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

७१८. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'असुविधाजनक सत्य'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि

७१९. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'रचनात्मक असहमति'क सही अर्थ की अछि?

- (A) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (B) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ

७२०. व्यंग्य, विद्रोह आ आलोचना खण्डमे 'आलोचनात्मक आधुनिकता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (D) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब

७२१. 'मूल्य-भंजन' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (D) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता

७२२. 'सामाजिक पाखण्ड' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (B) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (C) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ
- (D) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि

७२३. 'धर्माडम्बर' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि
- (D) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण

७२४. 'नैतिक दोहरापन' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (C) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल

७२५. 'व्यवस्था-विरोध' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (B) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब

७२६. 'वर्ग-आलोचना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

७२७. 'देह-नियंत्रणक आलोचना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (D) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ

७२८. 'सांस्कृतिक रूढ़ि' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (D) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता

७२९. 'नागरिक विडम्बना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

७३०. 'बाजारवाद' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

७३१. 'आत्म-आलोचना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराईत अछि
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) मानवीय संबंधक वस्तुकरण

७३२. 'विद्रोही भाषा' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (B) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि

७३३. 'करुण व्यंग्य' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (C) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि
- (D) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा

७३४. 'सत्ता-व्यवस्था' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (B) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि
- (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

७३५. 'छद्म आदर्श' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (D) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह

७३६. 'अन्याय-बोध' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (B) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराईत अछि

७३७. 'सवाल करब' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (B) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (C) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार

७३८. 'असुविधाजनक सत्य' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (B) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि
- (C) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

७३९. 'रचनात्मक असहमति' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (B) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (C) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (D) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन

७४०. 'आलोचनात्मक आधुनिकता' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

७४१. परीक्षा-उत्तरमे 'मूल्य-भंजन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब

७४२. परीक्षा-उत्तरमे 'सामाजिक पाखण्ड' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ
- (B) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि

७४३. परीक्षा-उत्तरमे 'धर्माडम्बर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि
- (B) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (C) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार

७४४. परीक्षा-उत्तरमे 'नैतिक दोहरापन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (C) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

७४५. परीक्षा-उत्तरमे 'व्यवस्था-विरोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (B) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल

७४६. परीक्षा-उत्तरमे 'वर्ग-आलोचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

७४७. परीक्षा-उत्तरमे 'देह-नियंत्रणक आलोचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (B) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (C) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराईत अछि
- (D) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न

७४८. परीक्षा-उत्तरमे 'सांस्कृतिक रूढ़ि' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (B) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

७४९. परीक्षा-उत्तरमे 'नागरिक विडम्बना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (B) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल

७५०. परीक्षा-उत्तरमे 'बाजारवाद' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (D) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ

७५१. परीक्षा-उत्तरमे 'आत्म-आलोचना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (B) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (C) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराईत अछि

७५२. परीक्षा-उत्तरमे 'विद्रोही भाषा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

७५३. परीक्षा-उत्तरमे 'करुण व्यंग्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि
- (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (C) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

७५४. परीक्षा-उत्तरमे 'सत्ता-व्यवस्था' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (B) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा

७५५. परीक्षा-उत्तरमे 'छद्म आदर्श' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (D) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब

७५६. परीक्षा-उत्तरमे 'अन्याय-बोध' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (D) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि

७५७. परीक्षा-उत्तरमे 'सवाल करब' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (B) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (C) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (D) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ

७५८. परीक्षा-उत्तरमे 'असुविधाजनक सत्य' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (B) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि
- (C) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

७५९. परीक्षा-उत्तरमे 'रचनात्मक असहमति' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (C) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

७६०. परीक्षा-उत्तरमे 'आलोचनात्मक आधुनिकता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (B) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (C) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (D) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न

७६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मूल्य-भंजन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (D) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा

७६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सामाजिक पाखण्ड' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ
- (B) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि

७६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'धर्माडम्बर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (C) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (D) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब

७६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'नैतिक दोहरापन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (B) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल

७६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'व्यवस्था-विरोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (B) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (C) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

७६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'वर्ग-आलोचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

७६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'देह-नियंत्रणक आलोचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (B) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

७६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सांस्कृतिक रूढ़ि' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

७६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'नागरिक विडम्बना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (B) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (D) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह

७७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'बाजारवाद' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (B) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (C) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

७७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आत्म-आलोचना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि
- (B) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) मानवीय संबंधक वस्तुकरण

७७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'विद्रोही भाषा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन

७७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'करुण व्यंग्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (C) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (D) मानवीय संबंधक वस्तुकरण

७७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सत्ता-व्यवस्था' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

७७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'छद्म आदर्श' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (C) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (D) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल

७७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अन्याय-बोध' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (B) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (C) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (D) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि

७७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सवाल करब' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (D) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब

७७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'असुविधाजनक सत्य' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (B) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार

७७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'रचनात्मक असहमति' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल

७८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आलोचनात्मक आधुनिकता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (B) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ
- (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल

७८१. 'मूल्य-भंजन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराईत अछि
- (D) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा

७८२. 'सामाजिक पाखण्ड' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ
- (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार

७८३. 'धर्माडम्बर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा

७८४. 'नैतिक दोहरापन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

७८५. 'व्यवस्था-विरोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (B) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (C) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार

७८६. 'वर्ग-आलोचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल
- (D) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय

७८७. 'देह-नियंत्रणक आलोचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा
- (D) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम

७८८. 'सांस्कृतिक रूढ़ि' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (B) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (C) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (D) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता

७८९. 'नागरिक विडम्बना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा
- (B) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

७९०. 'बाजारवाद' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (C) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (D) मानवीय संबंधक वस्तुकरण

७९१. 'आत्म-आलोचना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (B) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि
- (C) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

७९२. 'विद्रोही भाषा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि
- (B) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कटु आ सत्यक कथन
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

७९३. 'करुण व्यंग्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (D) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा

७९४. 'सत्ता-व्यवस्था' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय
- (B) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल

७९५. 'छद्म आदर्श' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण
- (D) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब

७९६. 'अन्याय-बोध' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल
- (B) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (C) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि
- (D) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ

७९७. 'सवाल करब' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब
- (B) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा

७९८. 'असुविधाजनक सत्य' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि
- (B) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह
- (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

७९९. 'रचनात्मक असहमति' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि
- (B) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम
- (C) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन
- (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि

८००. 'आलोचनात्मक आधुनिकता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि
- (B) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ
- (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न
- (D) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल

८०१. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'कृति-केन्द्रित उत्तर'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (D) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य

८०२. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'लेखक-सन्दर्भ'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (D) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब

८०३. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'कथ्य-सूत्र'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (B) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु

८०४. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'शिल्प-सूत्र'क सही अर्थ की अछि?

- (A) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (B) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (C) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

८०५. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'पात्र-विश्लेषण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (B) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (C) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (D) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर

८०६. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'स्त्री-दृष्टि'क सही अर्थ की अछि?

- (A) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (D) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब

८०७. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'समाजशास्त्रीय पाठ'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका

८०८. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'मनोवैज्ञानिक पाठ'क सही अर्थ की अछि?

- (A) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (B) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल

८०९. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'नवकथा-संवेदना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका

८१०. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'भाषिक विश्लेषण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत

८११. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'सारांश सँ बचब'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्वपूर्ण
- (D) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़

८१२. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'शीर्षक-विश्लेषण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (D) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब

८१३. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'तुलना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (B) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

८१४. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'आलोचनात्मक निष्कर्ष'क सही अर्थ की अछि?

- (A) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (B) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (C) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

८१५. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'उद्धरण-सावधानी'क सही अर्थ की अछि?

- (A) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

८१६. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'स्मरण-योजना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब
- (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्वपूर्ण
- (D) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द

८१७. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'दीर्घ उत्तर'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

८१८. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'लघु उत्तर'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (B) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (C) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

८१९. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'वस्तुनिष्ठ तैयारी'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (D) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द

८२०. तुलनात्मक परीक्षा-दृष्टि खण्डमे 'समग्र मूल्यांकन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (D) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान

८२१. 'कृति-केन्द्रित उत्तर' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (D) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा

८२२. 'लेखक-सन्दर्भ' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

८२३. 'कथ्य-सूत्र' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (C) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (D) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु

८२४. 'शिल्प-सूत्र' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (B) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल

८२५. 'पात्र-विश्लेषण' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (B) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

८२६. 'स्त्री-दृष्टि' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (B) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल

८२७. 'समाजशास्त्रीय पाठ' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (B) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

८२८. 'मनोवैज्ञानिक पाठ' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (B) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (C) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

८२९. 'नवकथा-संवेदना' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब
- (B) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

८३०. 'भाषिक विश्लेषण' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (B) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

८३१. 'सारांश सँ बचब' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

८३२. 'शीर्षक-विश्लेषण' केँ राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका

८३३. 'तुलना' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (D) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु

८३४. 'आलोचनात्मक निष्कर्ष' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (B) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (C) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (D) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब

८३५. 'उद्धरण-सावधानी' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब
- (B) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (C) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (D) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़

८३६. 'स्मरण-योजना' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (D) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब

८३७. 'दीर्घ उत्तर' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

८३८. 'लघु उत्तर' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (C) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (D) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना

८३९. 'वस्तुनिष्ठ तैयारी' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (B) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (D) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम

८४०. 'समग्र मूल्यांकन' के राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (B) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (C) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (D) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब

८४१. परीक्षा-उत्तरमे 'कृति-केन्द्रित उत्तर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्वपूर्ण
- (D) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर

८४२. परीक्षा-उत्तरमे 'लेखक-सन्दर्भ' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (D) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति

८४३. परीक्षा-उत्तरमे 'कथ्य-सूत्र' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (D) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा

८४४. परीक्षा-उत्तरमे 'शिल्प-सूत्र' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (B) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब

८४५. परीक्षा-उत्तरमे 'पात्र-विश्लेषण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (B) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (C) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

८४६. परीक्षा-उत्तरमे 'स्त्री-दृष्टि' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्वपूर्ण
- (B) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (D) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत

८४७. परीक्षा-उत्तरमे 'समाजशास्त्रीय पाठ' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (B) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब

८४८. परीक्षा-उत्तरमे 'मनोवैज्ञानिक पाठ' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (B) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

८४९. परीक्षा-उत्तरमे 'नवकथा-संवेदना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (D) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा

८५०. परीक्षा-उत्तरमे 'भाषिक विश्लेषण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (B) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

८५१. परीक्षा-उत्तरमे 'सारांश सँ बचब' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (B) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण
- (D) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान

८५२. परीक्षा-उत्तरमे 'शीर्षक-विश्लेषण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (B) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल

८५३. परीक्षा-उत्तरमे 'तुलना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर

८५४. परीक्षा-उत्तरमे 'आलोचनात्मक निष्कर्ष' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (C) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (D) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर

८५५. परीक्षा-उत्तरमे 'उद्धरण-सावधानी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब
- (C) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

८५६. परीक्षा-उत्तरमे 'स्मरण-योजना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (B) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (D) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब

८५७. परीक्षा-उत्तरमे 'दीर्घ उत्तर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (C) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (D) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम

८५८. परीक्षा-उत्तरमे 'लघु उत्तर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य

८५९. परीक्षा-उत्तरमे 'वस्तुनिष्ठ तैयारी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (D) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर

८६०. परीक्षा-उत्तरमे 'समग्र मूल्यांकन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (C) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

८६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कृति-केन्द्रित उत्तर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (B) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (D) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा

८६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'लेखक-सन्दर्भ' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (B) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

८६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कथ्य-सूत्र' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

८६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'शिल्प-सूत्र' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

८६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'पात्र-विश्लेषण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका

८६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्त्री-दृष्टि' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (D) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु

८६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'समाजशास्त्रीय पाठ' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (B) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (C) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका

८६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मनोवैज्ञानिक पाठ' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (C) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

८६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'नवकथा-संवेदना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु

८७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'भाषिक विश्लेषण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (C) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

८७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'सारांश सँ बचब' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण
- (B) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (C) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपदाक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

८७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'शीर्षक-विश्लेषण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (B) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (C) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (D) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण

८७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'तुलना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (B) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (C) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

८७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आलोचनात्मक निष्कर्ष' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (C) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (D) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब

८७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'उद्धरण-सावधानी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब
- (B) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (C) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (D) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति

८७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्मरण-योजना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा

८७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'दीर्घ उत्तर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा

८७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'लघु उत्तर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

८७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'वस्तुनिष्ठ तैयारी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (B) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (C) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

८८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'समग्र मूल्यांकन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (C) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

८८१. 'कृति-केन्द्रित उत्तर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (B) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

८८२. 'लेखक-सन्दर्भ' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (B) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (D) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब

८८३. 'कथ्य-सूत्र' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा

८८४. 'शिल्प-सूत्र' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (B) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब
- (C) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका

८८५. 'पात्र-विश्लेषण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (B) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (C) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (D) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब

८८६. 'स्त्री-दृष्टि' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (B) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द

८८७. 'समाजशास्त्रीय पाठ' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (B) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका

८८८. 'मनोवैज्ञानिक पाठ' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (B) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

८८९. 'नवकथा-संवेदना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

८९०. 'भाषिक विश्लेषण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द
- (B) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर

८९१. 'सारांश सँ बचब' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (B) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (C) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (D) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण

८९२. 'शीर्षक-विश्लेषण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम

८९३. 'तुलना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर
- (B) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (C) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प

८९४. 'आलोचनात्मक निष्कर्ष' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान
- (B) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (C) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब
- (D) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब

८९५. 'उद्धरण-सावधानी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब
- (D) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब

८९६. 'स्मरण-योजना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प
- (C) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

८९७. 'दीर्घ उत्तर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा
- (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (D) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल

८९८. 'लघु उत्तर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य
- (C) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम
- (D) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब

८९९. 'वस्तुनिष्ठ तैयारी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत
- (B) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा
- (D) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान

९००. 'समग्र मूल्यांकन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़
- (B) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

९०१. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'कथावाचकक दूरी'क सही अर्थ की अछि?

- (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (B) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (C) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत

९०२. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'अन्तर्विरोधी पात्र'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू
- (B) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

९०३. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'नैतिक अस्पष्टता'क सही अर्थ की अछि?

- (A) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि

९०४. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'दैनन्दिन घटना'क सही अर्थ की अछि?

- (A) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (D) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि

९०५. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'कथा-तनाव'क सही अर्थ की अछि?

- (A) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (B) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (C) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (D) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम

९०६. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'अदृश्य हिंसा'क सही अर्थ की अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (C) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

९०७. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'अर्थ-संकट'क सही अर्थ की अछि?

- (A) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (D) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य

९०८. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'प्रेम-त्रासदी'क सही अर्थ की अछि?

- (A) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (B) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

९०९. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'मुक्ति आ बन्धन'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (B) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि

९१०. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'व्यक्ति बनाम समाज'क सही अर्थ की अछि?

- (A) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (B) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव

९११. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'अपूर्ण संवाद'क सही अर्थ की अछि?

- (A) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (B) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि

९१२. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'दोषी समाज'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो

९१३. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'आशा-किरण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत

९१४. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'असुरक्षित स्त्री'क सही अर्थ की अछि?

- (A) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (B) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत

९१५. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'बेचैन पुरुष'क सही अर्थ की अछि?

- (A) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (B) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो

९१६. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'निष्क्रिय दर्शक'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (D) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि

९१७. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'स्मृति आ वर्तमान'क सही अर्थ की अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय

९१८. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'निर्णयक क्षण'क सही अर्थ की अछि?

- (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (B) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (C) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

९१९. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'अन्तिम प्रभाव'क सही अर्थ की अछि?

- (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (B) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (D) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ

९२०. पात्र-प्रसंग आ कथ्य पुनरावृत्ति खण्डमे 'पहिल दस कथाक समग्र स्वर'क सही अर्थ की अछि?

- (A) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (B) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

१२१. 'कथावाचक दूरी' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

१२२. 'अन्तर्विरोधी पात्र' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (B) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (C) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

१२३. 'नैतिक अस्पष्टता' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (B) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (C) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (D) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि

१२४. 'दैनन्दिन घटना' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (D) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय

१२५. 'कथा-तनाव' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (C) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (D) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि

१२६. 'अदृश्य हिंसा' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (B) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (C) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

१२७. 'अर्थ-संकट' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (D) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि

१२८. 'प्रेम-त्रासदी' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (B) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (C) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

९२९. 'मुक्ति आ बन्धन' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

९३०. 'व्यक्ति बनाम समाज' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (B) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू

९३१. 'अपूर्ण संवाद' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (B) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (C) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि

९३२. 'दोषी समाज' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ
- (B) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो
- (C) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (D) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम

९३३. 'आशा-किरण' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (D) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव

९३४. 'असुरक्षित स्त्री' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (B) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (C) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (D) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम

९३५. 'बेचैन पुरुष' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (B) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (C) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (D) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि

९३६. 'निष्क्रिय दर्शक' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (B) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (C) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि

९३७. 'स्मृति आ वर्तमान' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (C) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

९३८. 'निर्णयक क्षण' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (B) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (C) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (D) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ

९३९. 'अन्तिम प्रभाव' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (B) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

९४०. 'पहिल दस कथाक समग्र स्वर' कें राजकमल चौधरीक कथा-पाठमे कोना बुझब उचित अछि?

- (A) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ
- (B) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब

९४१. परीक्षा-उत्तरमे 'कथावाचकक दूरी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि

९४२. परीक्षा-उत्तरमे 'अन्तर्विरोधी पात्र' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

९४३. परीक्षा-उत्तरमे 'नैतिक अस्पष्टता' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (C) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

९४४. परीक्षा-उत्तरमे 'दैनन्दिन घटना' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (B) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो

९४५. परीक्षा-उत्तरमे 'कथा-तनाव' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (C) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

९४६. परीक्षा-उत्तरमे 'अदृश्य हिंसा' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (C) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

९४७. परीक्षा-उत्तरमे 'अर्थ-संकट' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (B) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (C) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (D) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि

९४८. परीक्षा-उत्तरमे 'प्रेम-त्रासदी' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (B) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (C) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (D) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि

९४९. परीक्षा-उत्तरमे 'मुक्ति आ बन्धन' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (B) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

९५०. परीक्षा-उत्तरमे 'व्यक्ति बनाम समाज' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो
- (D) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय

९५१. परीक्षा-उत्तरमे 'अपूर्ण संवाद' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (B) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (C) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि

९५२. परीक्षा-उत्तरमे 'दोषी समाज' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (B) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू
- (C) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो

९५३. परीक्षा-उत्तरमे 'आशा-किरण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (B) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो

९५४. परीक्षा-उत्तरमे 'असुरक्षित स्त्री' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (D) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि

९५५. परीक्षा-उत्तरमे 'बेचैन पुरुष' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (C) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि

९५६. परीक्षा-उत्तरमे 'निष्क्रिय दर्शक' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (B) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो
- (C) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (D) केवल जन्म-वर्षक सूचना

९५७. परीक्षा-उत्तरमे 'स्मृति आ वर्तमान' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (B) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (C) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (D) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि

९५८. परीक्षा-उत्तरमे 'निर्णायक क्षण' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (B) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (C) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि

९५९. परीक्षा-उत्तरमे 'अन्तिम प्रभाव' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (B) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना

९६०. परीक्षा-उत्तरमे 'पहिल दस कथाक समग्र स्वर' लिखैत काल कोन बात प्रमुख राखल जाएत?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ
- (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (D) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम

९६१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कथावाचकक दूरी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत

९६२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अन्तर्विरोधी पात्र' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (C) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू
- (D) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना

९६३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'नैतिक अस्पष्टता' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (B) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (C) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि

९६४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'दैनन्दिन घटना' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (B) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (C) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि

९६५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'कथा-तनाव' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (D) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ

९६६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अदृश्य हिंसा' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (B) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (C) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (D) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष

९६७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अर्थ-संकट' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (B) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव

९६८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'प्रेम-त्रासदी' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (B) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ

९६९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'मुक्ति आ बन्धन' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (C) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (D) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना

९७०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'व्यक्ति बनाम समाज' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (B) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढबैत
- (D) केवल नाम-स्मरणक गलती

९७१. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अपूर्ण संवाद' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (B) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (C) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (D) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य

९७२. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'दोषी समाज' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो

९७३. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'आशा-किरण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (C) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (D) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि

९७४. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'असुरक्षित स्त्री' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (D) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम

९७५. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'बेचैन पुरुष' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि

९७६. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'निष्क्रिय दर्शक' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (B) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (C) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

९७७. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'स्मृति आ वर्तमान' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (B) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (C) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (D) अप्रासंगिक बाह्य विवरण

९७८. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'निर्णायक क्षण' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (C) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि

९७९. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'अन्तिम प्रभाव' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (B) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत

९८०. आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि 'पहिल दस कथाक समग्र स्वर' किएक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि?

- (A) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम
- (D) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ

९८१. 'कथावाचकक दूरी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (B) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (C) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत

९८२. 'अन्तर्विरोधी पात्र' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि

९८३. 'नैतिक अस्पष्टता' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) अप्रासंगिक बाह्य विवरण
- (B) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव

९८४. 'दैनन्दिन घटना' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (B) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (C) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (D) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ

९८५. 'कथा-तनाव' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (D) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम

९८६. 'अदृश्य हिंसा' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (B) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (D) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय

९८७. 'अर्थ-संकट' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना
- (C) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि

९८८. 'प्रेम-त्रासदी' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (B) एकरेखीय उपदेशात्मक निष्कर्ष
- (C) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि

९८९. 'मुक्ति आ बन्धन' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय
- (B) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (D) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि

९९०. 'व्यक्ति बनाम समाज' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल नाम-स्मरणक गलती
- (B) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (C) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि

९९१. 'अपूर्ण संवाद' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि
- (B) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (C) लोककथा मात्र, आधुनिक अर्थ बिना
- (D) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव

९९२. 'दोषी समाज' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (B) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (C) कथा-पाठसँ असम्बद्ध तथ्य
- (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो

९९३. 'आशा-किरण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) कथासँ असम्बद्ध ऐतिहासिक घटना
- (C) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत
- (D) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना

९९४. 'असुरक्षित स्त्री' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि
- (B) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम
- (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (D) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब

९९५. 'बेचैन पुरुष' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (B) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव
- (C) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

९९६. 'निष्क्रिय दर्शक' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (B) पुरान रूढ़िक सरल दोहराव
- (C) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि
- (D) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब

९९७. 'स्मृति आ वर्तमान' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) केवल प्रकाशन-सूची बिना कथ्य
- (B) केवल जन्म-वर्षक सूचना
- (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि
- (D) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय

९९८. 'निर्णयक क्षण' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि
- (B) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (C) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि
- (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि

९९९. 'अन्तिम प्रभाव' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव
- (B) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ
- (C) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट
- (D) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव

१०००. 'पहिल दस कथाक समग्र स्वर' सम्बन्धी निम्नमे कोन कथन ठीक अछि?

- (A) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत
- (B) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि
- (C) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ
- (D) सजावटी सूचना जे कथा-बोध नहि बढ़बैत

१. (B) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि — राजकमल चौधरी आधुनिक मैथिली कथाक तीक्ष्ण, बेचैन आ प्रयोगशील स्वर छथि।
२. (A) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह — परीक्षा-पाठ्यक्रममे 'कृति राजकमल'क आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि अध्ययन-क्षेत्र मानल जाइत अछि।
३. (A) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था — एहि पाठक सन्दर्भमे प्रकाशक-सूचना परीक्षा-उत्तरक आरम्भिक तथ्य बनि सकैत अछि।
४. (D) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र — एहि सीमासँ विद्यार्थी केँ पूरा लेखक नहि, निर्धारित आरम्भिक कथा-समूह पर केन्द्रित रहबाक चाही।
५. (C) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा — राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली कथाक रुढ़ि-भंजन आ नूतन संवेदनाक उदाहरण अछि।
६. (C) राजकमल चौधरीक मूल नाम — लेखकक मूल नाम आ साहित्यिक नाम अलग-अलग याद रखब परीक्षा-दृष्टिसँ उपयोगी अछि।
७. (B) राजकमलक स्नेह-नाम — लेखकक लोक-पहिचानमे ई स्नेह-नामो भेटैत अछि।
८. (D) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार — राजकमलक लेखनमे सीमांत मनुष्य आ टूटैत समाजक आवाज तीक्ष्ण रूपेँ अबैत अछि।
९. (C) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन — राजकमलक साहित्यिक व्यक्तित्व मैथिली-हिन्दी दुनू क्षेत्रसँ सम्बद्ध अछि।
१०. (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक — हुनक कथा केवल घटना नहि, आधुनिक जीवनक कठोर सच उघारैत अछि।
११. (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन — राजकमलक गद्य बेर-बेर कवितामय छवि आ लय धारण करैत अछि।
१२. (A) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार — कथा-पाठ बुझबा लेल लेखकक उपन्यासकार स्वरूपक ज्ञान सहायक अछि।
१३. (C) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप — 'कृति राजकमल'क अध्ययनमे संग्रहित कथासभक आपसी स्वर-सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि।
१४. (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी — विद्यार्थीकेँ लेखक-जीवनक संग कथा-शिल्प आ कथ्य दुनू पर ध्यान देबाक चाही।
१५. (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव — राजकमलक कथा तत्कालीन समाजक असंतोष, अकेलापन आ पाखण्डकेँ पकड़ैत अछि।
१६. (B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब — राजकमल कथा-रूपमे भाषा, संरचना आ दृष्टि स्तर पर प्रयोग करैत छथि।
१७. (B) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस — राजकमल प्रायः सभ्य समाजक दबायल सत्य केँ कथामे सामने अनैत छथि।
१८. (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण — हुनक कथा सजावटी आदर्शवादसँ अलग कडुआ यथार्थक सामना करबैत अछि।
१९. (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार — राजकमल आधुनिकता आ मिथिलाक लोक-सामाजिक धरातलकेँ एक संग देखैत छथि।
२०. (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य — एहि पाठक उत्तरमे तथ्य आ व्याख्या दुनू संतुलित होयबाक चाही।
२१. (C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि — 'राजकमल चौधरी'क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल चौधरी आधुनिक मैथिली कथाक तीक्ष्ण, बेचैन आ प्रयोगशील स्वर छथि।
२२. (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह — 'कृति राजकमल'क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे परीक्षा-पाठ्यक्रममे 'कृति राजकमल'क आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि अध्ययन-क्षेत्र मानल जाइत अछि।
२३. (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था — 'मैथिली अकादमी, पटना'क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि पाठक सन्दर्भमे प्रकाशक-सूचना परीक्षा-उत्तरक आरम्भिक तथ्य बनि सकैत अछि।
२४. (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र — 'आरम्भसँ दस कथा'क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि सीमासँ विद्यार्थी केँ पूरा लेखक नहि, निर्धारित आरम्भिक कथा-समूह पर केन्द्रित रहबाक चाही।
२५. (C) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा — 'आधुनिक मैथिली कथा'क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली कथाक रुढ़ि-भंजन आ नूतन संवेदनाक उदाहरण अछि।
२६. (A) राजकमल चौधरीक मूल नाम — 'मणीन्द्र नारायण चौधरी'क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे लेखकक मूल नाम आ साहित्यिक नाम अलग-अलग याद रखब परीक्षा-दृष्टिसँ उपयोगी अछि।
२७. (B) राजकमलक स्नेह-नाम — 'फूलबाबू'क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे लेखकक लोक-पहिचानमे ई स्नेह-नामो भेटैत अछि।

२८. (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार — ‘सीमान्त व्यक्तित्व’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक लेखनमे सीमांत मनुष्य आ टूटैत समाजक आवाज तीक्ष्ण रूपेँ अबैत अछि।
२९. (A) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन — ‘बहुभाषी रचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक साहित्यिक व्यक्तित्व मैथिली-हिन्दी दुनू क्षेत्रसँ सम्बद्ध अछि।
३०. (C) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक — ‘कथाकार-रूप’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हुनक कथा केवल घटना नहि, आधुनिक जीवनक कठोर सच उघारैत अछि।
३१. (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन — ‘कवि-स्वर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक गद्य बेर-बेर कवितामय छवि आ लय धारण करैत अछि।
३२. (D) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार — ‘उपन्यासकार-रूप’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा-पाठ बुझबा लेल लेखकक उपन्यासकार स्वरूपक ज्ञान सहायक अछि।
३३. (B) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप — ‘कथा-संग्रह’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ‘कृति राजकमल’क अध्ययनमे संग्रहित कथासभक आपसी स्वर-सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि।
३४. (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी — ‘पाठ्य-पुस्तक दृष्टि’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे विद्यार्थीकेँ लेखक-जीवनक संग कथा-शिल्प आ कथ्य दुनू पर ध्यान देबाक चाही।
३५. (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव — ‘समकालीनता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा तत्कालीन समाजक असंतोष, अकेलापन आ पाखण्डकेँ पकड़ैत अछि।
३६. (B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब — ‘प्रयोगशीलता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल कथा-रूपमे भाषा, संरचना आ दृष्टि स्तर पर प्रयोग करैत छथि।
३७. (D) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस — ‘विवादधर्मिता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल प्रायः सभ्य समाजक दबायल सत्य केँ कथामे सामने अनैत छथि।
३८. (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण — ‘यथार्थबोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हुनक कथा सजावटी आदर्शवादसँ अलग कडुआ यथार्थक सामना करबैत अछि।
३९. (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार — ‘मिथिला-समाज’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल आधुनिकता आ मिथिलाक लोक-सामाजिक धरातलकेँ एक संग देखैत छथि।
४०. (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य — ‘परीक्षा-कुंजी’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि पाठक उत्तरमे तथ्य आ व्याख्या दुनू संतुलित होयबाक चाही।
४१. (B) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि — परीक्षा-दृष्टिसँ राजकमल चौधरी केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल चौधरी आधुनिक मैथिली कथाक तीक्ष्ण, बेचैन आ प्रयोगशील स्वर छथि।
४२. (C) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह — परीक्षा-दृष्टिसँ कृति राजकमल केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। परीक्षा-पाठ्यक्रममे ‘कृति राजकमल’क आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि अध्ययन-क्षेत्र मानल जाइत अछि।
४३. (B) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था — परीक्षा-दृष्टिसँ मैथिली अकादमी, पटना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि पाठक सन्दर्भमे प्रकाशक-सूचना परीक्षा-उत्तरक आरम्भिक तथ्य बनि सकैत अछि।
४४. (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र — परीक्षा-दृष्टिसँ आरम्भसँ दस कथा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि सीमासँ विद्यार्थी केँ पूरा लेखक नहि, निर्धारित आरम्भिक कथा-समूह पर केन्द्रित रहबाक चाही।
४५. (D) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा — परीक्षा-दृष्टिसँ आधुनिक मैथिली कथा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली कथाक रुढ़ि-भंजन आ नूतन संवेदनाक उदाहरण अछि।
४६. (D) राजकमल चौधरीक मूल नाम — परीक्षा-दृष्टिसँ मणीन्द्र नारायण चौधरी केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। लेखकक मूल नाम आ साहित्यिक नाम अलग-अलग याद रखब परीक्षा-दृष्टिसँ उपयोगी अछि।
४७. (B) राजकमलक स्नेह-नाम — परीक्षा-दृष्टिसँ फूलबाबू केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। लेखकक लोक-पहिचानमे ई स्नेह-नामो भेटैत अछि।

४८. (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार — परीक्षा-दृष्टिसँ सीमान्त व्यक्तित्व केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक लेखनमे सीमांत मनुष्य आ टूटैत समाजक आवाज तीक्ष्ण रूपेँ अबैत अछि।
४९. (A) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन — परीक्षा-दृष्टिसँ बहुभाषी रचना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक साहित्यिक व्यक्तित्व मैथिली-हिन्दी दुनू क्षेत्रसँ सम्बद्ध अछि।
५०. (B) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक — परीक्षा-दृष्टिसँ कथाकार-रूप केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हुनक कथा केवल घटना नहि, आधुनिक जीवनक कठोर सच उघारैत अछि।
५१. (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन — परीक्षा-दृष्टिसँ कवि-स्वर केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक गद्य बेर-बेर कवितामय छवि आ लय धारण करैत अछि।
५२. (A) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार — परीक्षा-दृष्टिसँ उपन्यासकार-रूप केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा-पाठ बुझबा लेल लेखकक उपन्यासकार स्वरूपक ज्ञान सहायक अछि।
५३. (A) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप — परीक्षा-दृष्टिसँ कथा-संग्रह केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ‘कृति राजकमल’क अध्ययनमे संग्रहित कथासभक आपसी स्वर-सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि।
५४. (C) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी — परीक्षा-दृष्टिसँ पाठ्य-पुस्तक दृष्टि केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। विद्यार्थीकेँ लेखक-जीवनक संग कथा-शिल्प आ कथ्य दुनू पर ध्यान देबाक चाही।
५५. (B) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव — परीक्षा-दृष्टिसँ समकालीनता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा तत्कालीन समाजक असंतोष, अकेलापन आ पाखण्डकेँ पकड़ैत अछि।
५६. (D) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब — परीक्षा-दृष्टिसँ प्रयोगशीलता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल कथा-रूपमे भाषा, संरचना आ दृष्टि स्तर पर प्रयोग करैत छथि।
५७. (A) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस — परीक्षा-दृष्टिसँ विवादधर्मिता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल प्रायः सभ्य समाजक दबायल सत्य केँ कथामे सामने अनैत छथि।
५८. (A) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण — परीक्षा-दृष्टिसँ यथार्थबोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हुनक कथा सजावटी आदर्शवादसँ अलग कडुआ यथार्थक सामना करबैत अछि।
५९. (C) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार — परीक्षा-दृष्टिसँ मिथिला-समाज केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल आधुनिकता आ मिथिलाक लोक-सामाजिक धरातलकेँ एक संग देखैत छथि।
६०. (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य — परीक्षा-दृष्टिसँ परीक्षा-कुंजी केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि पाठक उत्तरमे तथ्य आ व्याख्या दुनू संतुलित होयबाक चाही।
६१. (C) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल चौधरी आधुनिक मैथिली कथाक तीक्ष्ण, बेचैन आ प्रयोगशील स्वर छथि।
६२. (B) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। परीक्षा-पाठ्यक्रममे ‘कृति राजकमल’क आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि अध्ययन-क्षेत्र मानल जाइत अछि।
६३. (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि पाठक सन्दर्भमे प्रकाशक-सूचना परीक्षा-उत्तरक आरम्भिक तथ्य बनि सकैत अछि।
६४. (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि सीमासँ विद्यार्थी केँ पूरा लेखक नहि, निर्धारित आरम्भिक कथा-समूह पर केन्द्रित रहबाक चाही।
६५. (B) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली कथाक रुढ़ि-भंजन आ नूतन संवेदनाक उदाहरण अछि।
६६. (D) राजकमल चौधरीक मूल नाम — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। लेखकक मूल नाम आ साहित्यिक नाम अलग-अलग याद रखब परीक्षा-दृष्टिसँ उपयोगी अछि।
६७. (B) राजकमलक स्नेह-नाम — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। लेखकक लोक-पहिचानमे ई स्नेह-नामो भेटैत अछि।
६८. (C) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक लेखनमे सीमांत मनुष्य आ टूटैत समाजक आवाज तीक्ष्ण रूपेँ अबैत अछि।

६९. (A) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक साहित्यिक व्यक्तित्व मैथिली-हिन्दी दुनू क्षेत्रसँ सम्बद्ध अछि।
७०. (A) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हुनक कथा केवल घटना नहि, आधुनिक जीवनक कठोर सच उघारैत अछि।
७१. (D) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक गद्य बेर-बेर कवितामय छवि आ लय धारण करैत अछि।
७२. (C) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा-पाठ बुझबा लेल लेखकक उपन्यासकार स्वरूपक ज्ञान सहायक अछि।
७३. (D) अनेक कथाकें एकत्र करयवला ग्रन्थरूप — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ‘कृति राजकमल’क अध्ययनमे संग्रहित कथासभक आपसी स्वर-सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि।
७४. (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। विद्यार्थीकें लेखक-जीवनक संग कथा-शिल्प आ कथ्य दुनू पर ध्यान देबाक चाही।
७५. (C) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा तत्कालीन समाजक असंतोष, अकेलापन आ पाखण्डकें पकड़ैत अछि।
७६. (A) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल कथा-रूपमे भाषा, संरचना आ दृष्टि स्तर पर प्रयोग करैत छथि।
७७. (A) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल प्रायः सभ्य समाजक दबायल सत्य केँ कथामे सामने अनैत छथि।
७८. (D) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हुनक कथा सजावटी आदर्शवादसँ अलग कड़ुआ यथार्थक सामना करबैत अछि।
७९. (A) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल आधुनिकता आ मिथिलाक लोक-सामाजिक धरातलकें एक संग देखैत छथि।
८०. (D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि पाठक उत्तरमे तथ्य आ व्याख्या दुनू संतुलित होयबाक चाही।
८१. (B) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषाक आधुनिक कथाकार-कवि — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल चौधरी आधुनिक मैथिली कथाक तीक्ष्ण, बेचैन आ प्रयोगशील स्वर छथि।
८२. (D) मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित राजकमलक रचनासंग्रह — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। परीक्षा-पाठ्यक्रममे ‘कृति राजकमल’क आरम्भसँ पहिल दस कथा धरि अध्ययन-क्षेत्र मानल जाइत अछि।
८३. (C) कृति राजकमलक प्रकाशक संस्था — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि पाठक सन्दर्भमे प्रकाशक-सूचना परीक्षा-उत्तरक आरम्भिक तथ्य बनि सकैत अछि।
८४. (C) पाठ्यक्रममे निर्धारित सीमित अध्ययन-क्षेत्र — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि सीमासँ विद्यार्थी केँ पूरा लेखक नहि, निर्धारित आरम्भिक कथा-समूह पर केन्द्रित रहबाक चाही।
८५. (D) नव मनोविज्ञान, सामाजिक तनाव आ शिल्प-प्रयोगक कथा-धारा — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली कथाक रूढ़ि-भंजन आ नूतन संवेदनाक उदाहरण अछि।
८६. (D) राजकमल चौधरीक मूल नाम — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। लेखकक मूल नाम आ साहित्यिक नाम अलग-अलग याद रखब परीक्षा-दृष्टिसँ उपयोगी अछि।
८७. (B) राजकमलक स्नेह-नाम — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। लेखकक लोक-पहिचानमे ई स्नेह-नामो भेटैत अछि।
८८. (A) मुख्यधारासँ असहज, बेचैन आ प्रश्नाकुल रचनाकार — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक लेखनमे सीमांत मनुष्य आ टूटैत समाजक आवाज तीक्ष्ण रूपेँ अबैत अछि।
८९. (B) मैथिली आ हिन्दीमे सक्रिय सृजन — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक साहित्यिक व्यक्तित्व मैथिली-हिन्दी दुनू क्षेत्रसँ सम्बद्ध अछि।

१०. (D) व्यक्ति, समाज, देह, भूख आ व्यवस्था पर प्रश्न करयवला लेखक — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हुनक कथा केवल घटना नहि, आधुनिक जीवनक कठोर सच उघारैत अछि।
११. (B) कथा-भाषामे सेहो काव्यात्मक तनाव आ बिम्बन — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक गद्य बेर-बेर कवितामय छवि आ लय धारण करैत अछि।
१२. (A) दीर्घ आख्यानमे आधुनिक मनुष्यक संकट लिखनिहार — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा-पाठ बुझबा लेल लेखकक उपन्यासकार स्वरूपक ज्ञान सहायक अछि।
१३. (A) अनेक कथाकेँ एकत्र करयवला ग्रन्थरूप — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ‘कृति राजकमल’क अध्ययनमे संग्रहित कथासभक आपसी स्वर-सम्बन्ध देखब आवश्यक अछि।
१४. (B) निर्धारित कथा-सीमा पर प्रश्नोत्तर तैयारी — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। विद्यार्थीकेँ लेखक-जीवनक संग कथा-शिल्प आ कथ्य दुनू पर ध्यान देबाक चाही।
१५. (A) अपन समयक सामाजिक टूटन आ बेचैनीक अनुभव — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा तत्कालीन समाजक असंतोष, अकेलापन आ पाखण्डकेँ पकड़ैत अछि।
१६. (B) पुरान कथा-ढाँचा तोड़ि नूतन अभिव्यक्ति खोजब — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल कथा-रूपमे भाषा, संरचना आ दृष्टि स्तर पर प्रयोग करैत छथि।
१७. (D) असुविधाजनक प्रश्न उठाबयक रचनात्मक साहस — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल प्रायः सभ्य समाजक दबायल सत्य केँ कथामे सामने अनैत छथि।
१८. (C) जीवनक कठोर, अंधार आ असमान पक्षक चित्रण — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हुनक कथा सजावटी आदर्शवादसँ अलग कडुआ यथार्थक सामना करबैत अछि।
१९. (D) कथा-पृष्ठभूमिमे उपस्थित क्षेत्रीय जीवन-संस्कार — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल आधुनिकता आ मिथिलाक लोक-सामाजिक धरातलकेँ एक संग देखैत छथि।
१००. (D) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, कथ्य, शिल्प आ आलोचनात्मक मूल्य — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि पाठक उत्तरमे तथ्य आ व्याख्या दुनू संतुलित होयबाक चाही।
१०१. (C) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव — राजकमलक कथा आधुनिक जीवनक गहिर अकेलापनकेँ रचनात्मक विषय बनबैत अछि।
१०२. (D) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब — विस्थापन केवल भौगोलिक नहि, मानसिक आ सामाजिको होइत अछि।
१०३. (C) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि — एहि संकटमे पात्र बाहरी सफलता रहितो भीतर सँ टूटल देखाइत अछि।
१०४. (A) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ — राजकमलक कथा मध्यवर्गक दुहरी चाल पर तीखा प्रकाश दैत अछि।
१०५. (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव — हुनक कथा देहकेँ केवल भोग-वस्तु नहि, सत्ता-संरचनाक प्रश्न बनबैत अछि।
१०६. (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध — विडम्बना कथा केँ आलोचनात्मक धार दैत अछि।
१०७. (D) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढाँगसँ बेचैनी — राजकमलक पात्र बहुत बेर सन्तुष्ट जीवन-छवि केँ अस्वीकार करैत अछि।
१०८. (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि — साहसिक कथ्य राजकमलक आधुनिकताक महत्वपूर्ण आधार अछि।
१०९. (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थिति सँ उठल सवाल — हुनक कथा पाठककेँ तैयार उत्तर नहि, विचारक असुविधा दैत अछि।
११०. (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा — शहर राजकमलक कथामे आधुनिक विखण्डनक प्रतीक बनैत अछि।
१११. (B) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव — ई द्वन्द्व मिथिला-समाजक बदलैत संरचना बुझबैत अछि।
११२. (C) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि — राजकमलक कथा बाहरी विद्रोहक संग भीतरी संघर्षो रचैत अछि।
११३. (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति — हुनक कथा समाजक चमकदार भागसँ बेसी उपेक्षित भाग दिस देखैत अछि।
११४. (D) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया — आधुनिक कथा-पटभूमिमे सम्बन्धक दरार केन्द्रीय संवेदना अछि।
११५. (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट — राजकमलक यथार्थमे पेट, देह आ आत्मसम्मानक सम्बन्ध खुलैत अछि।
११६. (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा — हुनक कथा सुन्दर आवरण हटाकऽ समाजक भयावहता देखबैत अछि।

११७. (A) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव — स्वप्न टूटलासँ पात्रक असली स्थिति उजागर होइत अछि।
११८. (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह — बहुत पात्र भीतरसँ स्वतन्त्र होमय चाहैत अछि, मुदा समाजक जाल रोकैत अछि।
११९. (B) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर — राजकमलक कथा भावनात्मक तीक्ष्णता सँ पाठककेँ झकझोरैत अछि।
१२०. (B) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न — प्रश्नाकुलता राजकमलक आधुनिक कथा-दृष्टिक मूल ऊर्जा अछि।
१२१. (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव — ‘अकेलापन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा आधुनिक जीवनक गहिर अकेलापनकेँ रचनात्मक विषय बनबैत अछि।
१२२. (B) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब — ‘विस्थापन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे विस्थापन केवल भौगोलिक नहि, मानसिक आ सामाजिको होइत अछि।
१२३. (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि — ‘अस्तित्व-संकट’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि संकटमे पात्र बाहरी सफलता रहितो भीतर सँ टूटल देखाइत अछि।
१२४. (A) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ — ‘मध्यवर्गीय पाखण्ड’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा मध्यवर्गक दुहरी चाल पर तीखा प्रकाश दैत अछि।
१२५. (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव — ‘यौन-राजनीति’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हुनक कथा देहकेँ केवल भोग-वस्तु नहि, सत्ता-संरचनाक प्रश्न बनबैत अछि।
१२६. (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध — ‘सामाजिक विडम्बना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे विडम्बना कथा केँ आलोचनात्मक धार दैत अछि।
१२७. (C) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी — ‘असंतोष’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक पात्र बहुत बेर सन्तुष्ट जीवन-छवि केँ अस्वीकार करैत अछि।
१२८. (A) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि — ‘साहसिक कथ्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे साहसिक कथ्य राजकमलक आधुनिकताक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।
१२९. (D) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल — ‘नैतिक प्रश्न’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हुनक कथा पाठककेँ तैयार उत्तर नहि, विचारक असुविधा दैत अछि।
१३०. (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा — ‘शहरी तनाव’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे शहर राजकमलक कथामे आधुनिक विखण्डनक प्रतीक बनैत अछि।
१३१. (C) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव — ‘गाम-नगर द्वन्द्व’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई द्वन्द्व मिथिला-समाजक बदलैत संरचना बुझबैत अछि।
१३२. (B) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि — ‘आत्म-विद्रोह’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा बाहरी विद्रोहक संग भीतरी संघर्षो रचैत अछि।
१३३. (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति — ‘उपेक्षित मनुष्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हुनक कथा समाजक चमकदार भागसँ बेसी उपेक्षित भाग दिस देखैत अछि।
१३४. (B) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया — ‘सम्बन्ध-विघटन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आधुनिक कथा-पटभूमिमे सम्बन्धक दरार केन्द्रीय संवेदना अछि।
१३५. (D) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट — ‘भूख आ अभाव’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक यथार्थमे पेट, देह आ आत्मसम्मानक सम्बन्ध खुलैत अछि।
१३६. (C) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा — ‘भयावह यथार्थ’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हुनक कथा सुन्दर आवरण हटाकऽ समाजक भयावहता देखबैत अछि।
१३७. (B) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव — ‘स्वप्न-भंग’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे स्वप्न टूटलासँ पात्रक असली स्थिति उजागर होइत अछि।
१३८. (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह — ‘मुक्ति-कामना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे बहुत पात्र भीतरसँ स्वतन्त्र होमय चाहैत अछि, मुदा समाजक जाल रोकैत अछि।

- १३९. (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर** — ‘अनुभूतिक तीव्रता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा भावनात्मक तीक्ष्णता सँ पाठककें झकझोरैत अछि।
- १४०. (A) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न** — ‘प्रश्नाकुलता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे प्रश्नाकुलता राजकमलक आधुनिक कथा-दृष्टिक मूल ऊर्जा अछि।
- १४१. (B) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव** — परीक्षा-दृष्टिसँ अकेलापन कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा आधुनिक जीवनक गहिर अकेलापनकें रचनात्मक विषय बनबैत अछि।
- १४२. (C) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब** — परीक्षा-दृष्टिसँ विस्थापन कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। विस्थापन केवल भौगोलिक नहि, मानसिक आ सामाजिको होइत अछि।
- १४३. (B) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ अस्तित्व-संकट कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि संकटमे पात्र बाहरी सफलता रहितो भीतर सँ टूटल देखाइत अछि।
- १४४. (B) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ** — परीक्षा-दृष्टिसँ मध्यवर्गीय पाखण्ड कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा मध्यवर्गक दुहरी चाल पर तीखा प्रकाश दैत अछि।
- १४५. (B) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव** — परीक्षा-दृष्टिसँ यौन-राजनीति कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हुनक कथा देहकें केवल भोग-वस्तु नहि, सत्ता-संरचनाक प्रश्न बनबैत अछि।
- १४६. (A) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध** — परीक्षा-दृष्टिसँ सामाजिक विडम्बना कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। विडम्बना कथा कें आलोचनात्मक धार दैत अछि।
- १४७. (D) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी** — परीक्षा-दृष्टिसँ असंतोष कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक पात्र बहुत बेर सन्तुष्ट जीवन-छवि कें अस्वीकार करैत अछि।
- १४८. (C) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ साहसिक कथ्य कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। साहसिक कथ्य राजकमलक आधुनिकताक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।
- १४९. (C) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल** — परीक्षा-दृष्टिसँ नैतिक प्रश्न कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हुनक कथा पाठककें तैयार उत्तर नहि, विचारक असुविधा दैत अछि।
- १५०. (B) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा** — परीक्षा-दृष्टिसँ शहरी तनाव कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। शहर राजकमलक कथामे आधुनिक विखण्डनक प्रतीक बनैत अछि।
- १५१. (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव** — परीक्षा-दृष्टिसँ गाम-नगर द्वन्द्व कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई द्वन्द्व मिथिला-समाजक बदलैत संरचना बुझबैत अछि।
- १५२. (A) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ आत्म-विद्रोह कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा बाहरी विद्रोहक संग भीतरी संघर्षो रचैत अछि।
- १५३. (A) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति** — परीक्षा-दृष्टिसँ उपेक्षित मनुष्य कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हुनक कथा समाजक चमकदार भागसँ बेसी उपेक्षित भाग दिस देखैत अछि।
- १५४. (A) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया** — परीक्षा-दृष्टिसँ सम्बन्ध-विघटन कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आधुनिक कथा-पटभूमिमे सम्बन्धक दरार केन्द्रीय संवेदना अछि।
- १५५. (B) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट** — परीक्षा-दृष्टिसँ भूख आ अभाव कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक यथार्थमे पेट, देह आ आत्मसम्मानक सम्बन्ध खुलैत अछि।
- १५६. (D) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा** — परीक्षा-दृष्टिसँ भयावह यथार्थ कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हुनक कथा सुन्दर आवरण हटाकऽ समाजक भयावहता देखबैत अछि।
- १५७. (C) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव** — परीक्षा-दृष्टिसँ स्वप्न-भंग कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। स्वप्न टूटलासँ पात्रक असली स्थिति उजागर होइत अछि।
- १५८. (C) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह** — परीक्षा-दृष्टिसँ मुक्ति-कामना कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। बहुत पात्र भीतरसँ स्वतन्त्र होमय चाहैत अछि, मुदा समाजक जाल रोकैत अछि।

- १५९. (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर** — परीक्षा-दृष्टिसँ अनुभूतिक तीव्रता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा भावनात्मक तीक्ष्णता सँ पाठककेँ झकझोरैत अछि।
- १६०. (C) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न** — परीक्षा-दृष्टिसँ प्रश्नाकुलता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। प्रश्नाकुलता राजकमलक आधुनिक कथा-दृष्टिक मूल ऊर्जा अछि।
- १६१. (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा आधुनिक जीवनक गहिर अकेलापनकेँ रचनात्मक विषय बनबैत अछि।
- १६२. (D) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। विस्थापन केवल भौगोलिक नहि, मानसिक आ सामाजिको होइत अछि।
- १६३. (C) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि संकेतमे पात्र बाहरी सफलता रहितो भीतर सँ टूटल देखाइत अछि।
- १६४. (C) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा मध्यवर्गक दुहरी चाल पर तीखा प्रकाश दैत अछि।
- १६५. (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हुनक कथा देहकेँ केवल भोग-वस्तु नहि, सत्ता-संरचनाक प्रश्न बनबैत अछि।
- १६६. (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। विडम्बना कथा केँ आलोचनात्मक धार दैत अछि।
- १६७. (C) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक पात्र बहुत बेर सन्तुष्ट जीवन-छवि केँ अस्वीकार करैत अछि।
- १६८. (D) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। साहसिक कथ्य राजकमलक आधुनिकताक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।
- १६९. (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हुनक कथा पाठककेँ तैयार उत्तर नहि, विचारक असुविधा दैत अछि।
- १७०. (D) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। शहर राजकमलक कथामे आधुनिक विखण्डनक प्रतीक बनैत अछि।
- १७१. (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई द्वन्द्व मिथिला-समाजक बदलैत संरचना बुझबैत अछि।
- १७२. (D) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा बाहरी विद्रोहक संग भीतरी संघर्षो रचैत अछि।
- १७३. (C) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हुनक कथा समाजक चमकदार भागसँ बेसी उपेक्षित भाग दिस देखैत अछि।
- १७४. (D) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आधुनिक कथा-पटभूमिमे सम्बन्धक दरार केन्द्रीय संवेदना अछि।
- १७५. (A) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक यथार्थमे पेट, देह आ आत्मसम्मानक सम्बन्ध खुलैत अछि।
- १७६. (D) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हुनक कथा सुन्दर आवरण हटाकऽ समाजक भयावहता देखबैत अछि।
- १७७. (B) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। स्वप्न टूटलासँ पात्रक असली स्थिति उजागर होइत अछि।
- १७८. (B) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। बहुत पात्र भीतरसँ स्वतन्त्र होमय चाहैत अछि, मुदा समाजक जाल रोकेत अछि।

- १७९. (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा भावनात्मक तीक्ष्णता सँ पाठककें झकझोरैत अछि।
- १८०. (B) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। प्रश्नाकुलता राजकमलक आधुनिक कथा-दृष्टिक मूल ऊर्जा अछि।
- १८१. (D) भीड़मे रहितो भीतर सँ अलग पड़ल मनुष्यक अनुभव** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा आधुनिक जीवनक गहिर अकेलापनकें रचनात्मक विषय बनबैत अछि।
- १८२. (C) अपन जगह, सम्बन्ध वा आत्मविश्वाससँ कटि जाएब** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। विस्थापन केवल भौगोलिक नहि, मानसिक आ सामाजिको होइत अछि।
- १८३. (D) मनुष्य अपन जीवनक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि संकटमे पात्र बाहरी सफलता रहितो भीतर सँ टूटल देखाइत अछि।
- १८४. (D) ऊपरसँ नैतिक मुदा भीतर सँ लोभ, डर आ स्वार्थ** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा मध्यवर्गक दुहरी चाल पर तीखा प्रकाश दैत अछि।
- १८५. (D) देह, इच्छा आ सामाजिक नियंत्रणक टकराव** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हुनक कथा देहकें केवल भोग-वस्तु नहि, सत्ता-संरचनाक प्रश्न बनबैत अछि।
- १८६. (D) मूल्य आ व्यवहारक बीचक विरोध** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। विडम्बना कथा कें आलोचनात्मक धार दैत अछि।
- १८७. (C) व्यवस्था, परिवार आ नैतिक ढोंगसँ बेचैनी** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक पात्र बहुत बेर सन्तुष्ट जीवन-छवि कें अस्वीकार करैत अछि।
- १८८. (A) जकरा समाज छिपबैत अछि, तकरा कथा प्रकट करैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। साहसिक कथ्य राजकमलक आधुनिकताक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।
- १८९. (B) ठोस उपदेश नहि, कठिन जीवन-स्थितिसँ उठल सवाल** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हुनक कथा पाठककें तैयार उत्तर नहि, विचारक असुविधा दैत अछि।
- १९०. (B) नगरक भीड़, उपभोग, देह-बाजार आ असुरक्षा** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। शहर राजकमलक कथामे आधुनिक विखण्डनक प्रतीक बनैत अछि।
- १९१. (D) परम्परा आ आधुनिकता बीच मनुष्यक खिंचाव** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई द्वन्द्व मिथिला-समाजक बदलैत संरचना बुझबैत अछि।
- १९२. (D) पात्र अपन भीतरक झूठसँ लड़ैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा बाहरी विद्रोहक संग भीतरी संघर्षो रचैत अछि।
- १९३. (C) किनाराक लोकक पीड़ा आ अभिव्यक्ति** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हुनक कथा समाजक चमकदार भागसँ बेसी उपेक्षित भाग दिस देखैत अछि।
- १९४. (D) परिवार, प्रेम, दाम्पत्य वा मित्रता टूटयक प्रक्रिया** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आधुनिक कथा-पटभूमिमे सम्बन्धक दरार केन्द्रीय संवेदना अछि।
- १९५. (B) आर्थिक कमी सँ उपजल मनोवैज्ञानिक आ नैतिक संकट** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक यथार्थमे पेट, देह आ आत्मसम्मानक सम्बन्ध खुलैत अछि।
- १९६. (B) जीवनक कुरूप, हिंसक आ असहज चेहरा** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हुनक कथा सुन्दर आवरण हटाकऽ समाजक भयावहता देखबैत अछि।
- १९७. (D) आशा आ वास्तविकता बीच कठोर टकराव** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। स्वप्न टूटलासँ पात्रक असली स्थिति उजागर होइत अछि।
- १९८. (D) बंधनसँ बाहर निकलयक तीव्र चाह** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। बहुत पात्र भीतरसँ स्वतन्त्र होमय चाहैत अछि, मुदा समाजक जाल रोकैत अछि।

१९९. (C) घटना छोट हो, मुदा मनक प्रतिक्रिया गहिर — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा भावनात्मक तीक्ष्णता सँ पाठककें झकझोरैत अछि।
२००. (A) हर मूल्य, सम्बन्ध आ व्यवस्था पर प्रश्न — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। प्रश्नाकुलता राजकमलक आधुनिक कथा-दृष्टिक मूल ऊर्जा अछि।
२०१. (A) ग्रन्थक शुरुआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन — पहिल दस कथा कें अलग-अलग कथानक संग एक सामूहिक आधुनिक स्वर रूपें पढ़ल जा सकैत अछि।
२०२. (D) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश — आरम्भिक कथा पाठककें लेखकक भाषा, प्रश्न आ वातावरणसँ परिचित करबैत अछि।
२०३. (C) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति — राजकमलक आरम्भिक कथा-रूपमे बाहरी विस्तारसँ बेसी आन्तरिक तनाव महत्त्वपूर्ण होइत अछि।
२०४. (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब — कथा-संसारक असर केवल घटना नहि, वातावरणसँ बनैत अछि।
२०५. (D) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण — मोड़ कथाक अन्तर्विरोध आ आश्चर्य उभारैत अछि।
२०६. (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब — खुला अन्त पाठककें सोचबाक जिम्मा दैत अछि।
२०७. (B) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब — राजकमलक कथा बहुत बेर मौन आ संकेतसँ गहिर अर्थ बनबैत अछि।
२०८. (C) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर — आधुनिक कथा मे मनोवैज्ञानिक केन्द्र बहुत महत्त्वपूर्ण अछि।
२०९. (A) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब — छोट दृश्य राजकमलक कथामे व्यापक सामाजिक अर्थ लऽ सकैत अछि।
२१०. (B) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क — अन्तःसंवाद पात्रक गहिर मनःस्थिति खोलैत अछि।
२११. (A) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि — संकेत कथा कें सीधा उपदेश बनय सँ बचबैत अछि।
२१२. (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव — व्यक्ति-संकटकें समाजसँ अलग कऽ नहि पढ़बाक चाही।
२१३. (D) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि — घर आधुनिक कथा मे छिपल सत्ता-संबन्धक ठाम बनि सकैत अछि।
२१४. (C) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव — राजकमलक कथा आधुनिक बाजार-बोधक आलोचना करैत अछि।
२१५. (D) बीटल घटना वर्तमान संकट कें अर्थ देइत अछि — स्मृति कथा कें रैखिक समयसँ बाहर निकालैत अछि।
२१६. (B) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क — विरोधाभास आधुनिक कथा-सत्यक प्रमुख साधन अछि।
२१७. (C) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव — राजकमलक कथामे व्यंग्य बहुत बेर करुणा सँ जुड़ल रहैत अछि।
२१८. (B) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक — एक क्षुद्र प्रसंगो कथामे व्यापक टिप्पणी बनि सकैत अछि।
२१९. (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी — आरम्भिक कथा-समूह कें विषयगत सूत्रसँ जोड़ि पढ़ब उपयोगी अछि।
२२०. (D) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान — राजकमलक कथा सतही कथानकसँ बेसी सूक्ष्म पाठ मागैत अछि।
२२१. (A) ग्रन्थक शुरुआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन — ‘आरम्भिक कथा-समूह’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे पहिल दस कथा कें अलग-अलग कथानक संग एक सामूहिक आधुनिक स्वर रूपें पढ़ल जा सकैत अछि।
२२२. (C) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश — ‘प्रवेश-कथा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आरम्भिक कथा पाठककें लेखकक भाषा, प्रश्न आ वातावरणसँ परिचित करबैत अछि।
२२३. (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति — ‘कथानकक संक्षिप्तता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक आरम्भिक कथा-रूपमे बाहरी विस्तारसँ बेसी आन्तरिक तनाव महत्त्वपूर्ण होइत अछि।
२२४. (A) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब — ‘वातावरण-निर्माण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा-संसारक असर केवल घटना नहि, वातावरणसँ बनैत अछि।
२२५. (A) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण — ‘अचानक मोड़’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे मोड़ कथाक अन्तर्विरोध आ आश्चर्य उभारैत अछि।
२२६. (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब — ‘खुला अन्त’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे खुला अन्त पाठककें सोचबाक जिम्मा दैत अछि।
२२७. (A) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब — ‘मौनक अर्थ’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा बहुत बेर मौन आ संकेतसँ गहिर अर्थ बनबैत अछि।

- २२८. (D) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर** — ‘पात्र-केन्द्र’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आधुनिक कथा मे मनोवैज्ञानिक केन्द्र बहुत महत्त्वपूर्ण अछि।
- २२९. (B) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब** — ‘क्षण-बोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे छोट दृश्य राजकमलक कथामे व्यापक सामाजिक अर्थ लऽ सकैत अछि।
- २३०. (A) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क** — ‘अन्तःसंवाद’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अन्तःसंवाद पात्रक गहिर मनःस्थिति खोलैत अछि।
- २३१. (C) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि** — ‘संकेत-शृंखला’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे संकेत कथा केँ सीधा उपदेश बनय सँ बचबैत अछि।
- २३२. (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव** — ‘सामाजिक पृष्ठभूमि’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे व्यक्ति-संकटकेँ समाजसँ अलग कऽ नहि पढ़बाक चाही।
- २३३. (A) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि** — ‘घरेलू प्रसंग’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे घर आधुनिक कथा मे छिपल सत्ता-संबन्धक ठाम बनि सकैत अछि।
- २३४. (B) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव** — ‘बाजारक संकेत’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा आधुनिक बाजार-बोधक आलोचना करैत अछि।
- २३५. (C) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि** — ‘स्मृति-रचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे स्मृति कथा केँ रैखिक समयसँ बाहर निकालैत अछि।
- २३६. (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क** — ‘विरोधाभास’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे विरोधाभास आधुनिक कथा-सत्यक प्रमुख साधन अछि।
- २३७. (B) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव** — ‘करुण-व्यंग्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथामे व्यंग्य बहुत बेर करुणा सँ जुड़ल रहैत अछि।
- २३८. (A) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक** — ‘लघु दृश्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एक क्षुद्र प्रसंगो कथामे व्यापक टिप्पणी बनि सकैत अछि।
- २३९. (D) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी** — ‘विषय-क्रम’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आरम्भिक कथा-समूह केँ विषयगत सूत्रसँ जोड़ि पढ़ब उपयोगी अछि।
- २४०. (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान** — ‘पाठकीय सतर्कता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा सतही कथानकसँ बेसी सूक्ष्म पाठ मागैत अछि।
- २४१. (C) ग्रन्थक शुरुआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन** — परीक्षा-दृष्टिसँ आरम्भिक कथा-समूह केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। पहिल दस कथा केँ अलग-अलग कथानक संग एक सामूहिक आधुनिक स्वर रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।
- २४२. (B) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश** — परीक्षा-दृष्टिसँ प्रवेश-कथा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आरम्भिक कथा पाठककेँ लेखकक भाषा, प्रश्न आ वातावरणसँ परिचित करबैत अछि।
- २४३. (B) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति** — परीक्षा-दृष्टिसँ कथानकक संक्षिप्तता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक आरम्भिक कथा-रूपमे बाहरी विस्तारसँ बेसी आन्तरिक तनाव महत्त्वपूर्ण होइत अछि।
- २४४. (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब** — परीक्षा-दृष्टिसँ वातावरण-निर्माण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा-संसारक असर केवल घटना नहि, वातावरणसँ बनैत अछि।
- २४५. (D) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण** — परीक्षा-दृष्टिसँ अचानक मोड़ केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। मोड़ कथाक अन्तर्विरोध आ आश्चर्य उभारैत अछि।
- २४६. (A) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब** — परीक्षा-दृष्टिसँ खुला अन्त केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। खुला अन्त पाठककेँ सोचबाक जिम्मा दैत अछि।
- २४७. (C) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब** — परीक्षा-दृष्टिसँ मौनक अर्थ केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा बहुत बेर मौन आ संकेतसँ गहिर अर्थ बनबैत अछि।
- २४८. (B) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर** — परीक्षा-दृष्टिसँ पात्र-केन्द्र केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आधुनिक कथा मे मनोवैज्ञानिक केन्द्र बहुत महत्त्वपूर्ण अछि।

- २४९. (A) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब** — परीक्षा-दृष्टिसँ क्षण-बोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। छोट दृश्य राजकमलक कथामे व्यापक सामाजिक अर्थ लऽ सकैत अछि।
- २५०. (D) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क** — परीक्षा-दृष्टिसँ अन्तःसंवाद केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अन्तःसंवाद पात्रक गहिर मनःस्थिति खोलैत अछि।
- २५१. (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ संकेत-शृंखला केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। संकेत कथा केँ सीधा उपदेश बनय सँ बचबैत अछि।
- २५२. (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव** — परीक्षा-दृष्टिसँ सामाजिक पृष्ठभूमि केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। व्यक्ति-संकटकेँ समाजसँ अलग कऽ नहि पढ़बाक चाही।
- २५३. (B) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ घरेलू प्रसंग केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। घर आधुनिक कथा मे छिपल सत्ता-संबन्धक ठाम बनि सकैत अछि।
- २५४. (A) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव** — परीक्षा-दृष्टिसँ बाजारक संकेत केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा आधुनिक बाजार-बोधक आलोचना करैत अछि।
- २५५. (B) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ स्मृति-रचना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। स्मृति कथा केँ रैखिक समयसँ बाहर निकालैत अछि।
- २५६. (B) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क** — परीक्षा-दृष्टिसँ विरोधाभास केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। विरोधाभास आधुनिक कथा-सत्यक प्रमुख साधन अछि।
- २५७. (C) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव** — परीक्षा-दृष्टिसँ करुण-व्यंग्य केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथामे व्यंग्य बहुत बेर करुणा सँ जुड़ल रहैत अछि।
- २५८. (A) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक** — परीक्षा-दृष्टिसँ लघु दृश्य केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एक क्षुद्र प्रसंगो कथामे व्यापक टिप्पणी बनि सकैत अछि।
- २५९. (C) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी** — परीक्षा-दृष्टिसँ विषय-क्रम केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आरम्भिक कथा-समूह केँ विषयगत सूत्रसँ जोड़ि पढ़ब उपयोगी अछि।
- २६०. (B) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान** — परीक्षा-दृष्टिसँ पाठकीय सतर्कता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा सतही कथानकसँ बेसी सूक्ष्म पाठ मागैत अछि।
- २६१. (D) ग्रन्थक शुरूआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। पहिल दस कथा केँ अलग-अलग कथानक संग एक सामूहिक आधुनिक स्वर रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।
- २६२. (A) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आरम्भिक कथा पाठककेँ लेखकक भाषा, प्रश्न आ वातावरणसँ परिचित करबैत अछि।
- २६३. (D) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक आरम्भिक कथा-रूपमे बाहरी विस्तारसँ बेसी आन्तरिक तनाव महत्त्वपूर्ण होइत अछि।
- २६४. (C) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा-संसारक असर केवल घटना नहि, वातावरणसँ बनैत अछि।
- २६५. (C) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। मोड़ कथाक अन्तर्विरोध आ आश्चर्य उभारैत अछि।
- २६६. (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। खुला अन्त पाठककेँ सोचबाक जिम्मा दैत अछि।
- २६७. (B) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा बहुत बेर मौन आ संकेतसँ गहिर अर्थ बनबैत अछि।
- २६८. (B) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आधुनिक कथा मे मनोवैज्ञानिक केन्द्र बहुत महत्त्वपूर्ण अछि।

- २६९. (C) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। छोट दृश्य राजकमलक कथामे व्यापक सामाजिक अर्थ लऽ सकैत अछि।
- २७०. (D) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अन्तःसंवाद पात्रक गहिर मनःस्थिति खोलैत अछि।
- २७१. (B) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। संकेत कथा केँ सीधा उपदेश बनय सँ बचबैत अछि।
- २७२. (B) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। व्यक्ति-संकटकेँ समाजसँ अलग कऽ नहि पढ़बाक चाही।
- २७३. (D) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। घर आधुनिक कथा मे छिपल सत्ता-संबन्धक ठाम बनि सकैत अछि।
- २७४. (A) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा आधुनिक बाजार-बोधक आलोचना करैत अछि।
- २७५. (B) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। स्मृति कथा केँ रैखिक समयसँ बाहर निकालैत अछि।
- २७६. (C) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। विरोधाभास आधुनिक कथा-सत्यक प्रमुख साधन अछि।
- २७७. (B) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथामे व्यंग्य बहुत बेर करुणा सँ जुड़ल रहैत अछि।
- २७८. (C) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एक क्षुद्र प्रसंगो कथामे व्यापक टिप्पणी बनि सकैत अछि।
- २७९. (D) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आरम्भिक कथा-समूह केँ विषयगत सूत्रसँ जोड़ि पढ़ब उपयोगी अछि।
- २८०. (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा सतही कथानकसँ बेसी सूक्ष्म पाठ मागैत अछि।
- २८१. (A) ग्रन्थक शुरुआती दस कथाक सामूहिक अध्ययन** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। पहिल दस कथा केँ अलग-अलग कथानक संग एक सामूहिक आधुनिक स्वर रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।
- २८२. (B) लेखकक कथा-जगतमे पाठकक पहिल प्रवेश** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आरम्भिक कथा पाठककेँ लेखकक भाषा, प्रश्न आ वातावरणसँ परिचित करबैत अछि।
- २८३. (B) कम घटना मे गहिर अर्थक प्रस्तुति** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक आरम्भिक कथा-रूपमे बाहरी विस्तारसँ बेसी आन्तरिक तनाव महत्वपूर्ण होइत अछि।
- २८४. (D) स्थान, मौन, स्मृति आ संकेत सँ मनःस्थिति बनायब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा-संसारक असर केवल घटना नहि, वातावरणसँ बनैत अछि।
- २८५. (C) पाठकक अनुमान तोड़यवला कथा-क्षण** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। मोड़ कथाक अन्तर्विरोध आ आश्चर्य उभारैत अछि।
- २८६. (D) कथा समाप्त भेलाक बादो प्रश्न बाकी रहब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। खुला अन्त पाठककेँ सोचबाक जिम्मा दैत अछि।
- २८७. (A) जे स्पष्ट नहि कहल गेल, ताहिमे कथा-सत्य रहब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा बहुत बेर मौन आ संकेतसँ गहिर अर्थ बनबैत अछि।
- २८८. (C) घटना सँ बेसी पात्रक भीतरक टूटन पर जोर** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आधुनिक कथा मे मनोवैज्ञानिक केन्द्र बहुत महत्वपूर्ण अछि।

- २८९. (C) एक क्षणमे पूरा जीवनक संकट चमकब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। छोट दृश्य राजकमलक कथामे व्यापक सामाजिक अर्थ लऽ सकैत अछि।
- २९०. (B) पात्रक भीतर चलैत असमंजस आ तर्क-वितर्क** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अन्तःसंवाद पात्रक गहिर मनःस्थिति खोलैत अछि।
- २९१. (A) छोट-छोट बिम्बक सहारे कथा अर्थ बनबैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। संकेत कथा केँ सीधा उपदेश बनय सँ बचबैत अछि।
- २९२. (C) कथा-पात्रक जीवनक पाछाँ समाजक दबाव** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। व्यक्ति-संकटकेँ समाजसँ अलग कऽ नहि पढ़बाक चाही।
- २९३. (D) परिवार आ घरक छोट घटना सँ पैघ अर्थ निकलैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। घर आधुनिक कथा मे छिपल सत्ता-संबन्धक ठाम बनि सकैत अछि।
- २९४. (B) मानवीय सम्बन्ध पर मूल्य, सौदा आ उपभोगक प्रभाव** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा आधुनिक बाजार-बोधक आलोचना करैत अछि।
- २९५. (A) बीटल घटना वर्तमान संकट केँ अर्थ देइत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। स्मृति कथा केँ रैखिक समयसँ बाहर निकालैत अछि।
- २९६. (A) पात्र जे कहैत अछि आ जे जीबैत अछि, ताहिमे फर्क** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। विरोधाभास आधुनिक कथा-सत्यक प्रमुख साधन अछि।
- २९७. (B) दुख आ हँसीक संयुक्त प्रभाव** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथामे व्यंग्य बहुत बेर करुणा सँ जुड़ल रहैत अछि।
- २९८. (B) छोट दृश्य द्वारा पूरा समाजक झलक** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एक क्षुद्र प्रसंगो कथामे व्यापक टिप्पणी बनि सकैत अछि।
- २९९. (B) पहिल दस कथामे अलग प्रसंग रहितो समान बेचैनी** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आरम्भिक कथा-समूह केँ विषयगत सूत्रसँ जोड़ि पढ़ब उपयोगी अछि।
- ३००. (C) कथा-पंक्ति, संकेत, पात्र-स्वर आ अन्त सब पर ध्यान** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा सतही कथानकसँ बेसी सूक्ष्म पाठ मागैत अछि।
- ३०१. (D) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि** — राजकमलक पात्र प्रायः सामाजिक रूपेँ सामान्य, भीतर सँ अस्थिर देखाइत अछि।
- ३०२. (C) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि** — अपराध-बोध पात्रक मनोवैज्ञानिक गहिराइ बढ़बैत अछि।
- ३०३. (D) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष** — द्वन्द्व आधुनिक कथापात्रक मूल मनःस्थिति अछि।
- ३०४. (C) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब** — ई बोध पात्रकेँ सामाजिक सफलता सँ अलग एक गहिर संकटमे राखैत अछि।
- ३०५. (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि** — राजकमलक कथा आत्म-छलकेँ पकड़ि मनुष्यक असल चेहरा देखबैत अछि।
- ३०६. (B) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि** — इच्छा केँ दबाओल जाए तखन ओ कथा-संघर्ष बनि उठैत अछि।
- ३०७. (D) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण** — भ्रम टूटलासँ कथा मे तीखा आत्म-बोध आबैत अछि।
- ३०८. (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ** — कुण्ठा पात्रक व्यवहारक अप्रकट कारण बनि सकैत अछि।
- ३०९. (D) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा** — कथा मे आत्म-सम्मान मनुष्यकेँ वस्तु बनय सँ रोकैत अछि।
- ३१०. (B) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति** — लाचारी पात्रक नैतिक विकल्प सीमित करैत अछि।
- ३११. (B) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब** — छटपटाहट कथा केँ गति आ बेचैनी दैत अछि।
- ३१२. (D) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि** — स्मृति राजकमलक कथा मे मनोवैज्ञानिक नाट्य खोलैत अछि।
- ३१३. (D) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब** — सब प्रतिरोध उद्धोषणा नहि; कखनहु मौन सेहो कथा मे तीखा होइत अछि।
- ३१४. (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच** — मुखौटा उतरला पर पात्र आ समाज दुनूक विडम्बना खुलैत अछि।
- ३१५. (D) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब** — आधुनिकताक दबाव पात्रकेँ अपनहि भीतर अजनबी बना सकैत अछि।

३१६. (C) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार — दबायल क्रोध कथा मे संकेत, कटाक्ष वा अचानक प्रतिक्रिया बनि सकैत अछि।
३१७. (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र — राजकमल पात्रकें केवल दोषी नहि, परिस्थितिग्रस्त मनुष्य रूपें देखैत छथि।
३१८. (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा — अनाम भय आधुनिक कथा वातावरणकें बेचैन बनबैत अछि।
३१९. (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न — भीतरक संवाद पात्रक मनक परत खोलैत अछि।
३२०. (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ — एहि यथार्थमे कथाक असली क्षेत्र मनुष्यक भीतर होइत अछि।
३२१. (A) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि — ‘टूटल पात्र’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक पात्र प्रायः सामाजिक रूपें सामान्य, भीतर सँ अस्थिर देखाइत अछि।
३२२. (A) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि — ‘अपराध-बोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अपराध-बोध पात्रक मनोवैज्ञानिक गहिराइ बढ़बैत अछि।
३२३. (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष — ‘द्वन्द्व’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे द्वन्द्व आधुनिक कथापात्रक मूल मनःस्थिति अछि।
३२४. (B) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब — ‘निरर्थकता-बोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई बोध पात्रकें सामाजिक सफलता सँ अलग एक गहिर संकटमे राखैत अछि।
३२५. (B) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि — ‘आत्म-छल’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा आत्म-छलकें पकड़ि मनुष्यक असल चेहरा देखबैत अछि।
३२६. (A) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि — ‘मनोकामना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे इच्छा कें दबाओल जाए तखन ओ कथा-संघर्ष बनि उठैत अछि।
३२७. (B) सत्य कें देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण — ‘भ्रम’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे भ्रम टूटलासँ कथा मे तीखा आत्म-बोध आबैत अछि।
३२८. (A) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ — ‘कुण्ठा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कुण्ठा पात्रक व्यवहारक अप्रकट कारण बनि सकैत अछि।
३२९. (D) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा — ‘आत्म-सम्मान’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा मे आत्म-सम्मान मनुष्यकें वस्तु बनय सँ रोकैत अछि।
३३०. (A) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति — ‘लाचारी’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे लाचारी पात्रक नैतिक विकल्प सीमित करैत अछि।
३३१. (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब — ‘छटपटाहट’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे छटपटाहट कथा कें गति आ बेचैनी दैत अछि।
३३२. (D) बीतल घटना वर्तमान मनकें कुरेदैत अछि — ‘स्मृतिजन्य पीड़ा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे स्मृति राजकमलक कथा मे मनोवैज्ञानिक नाट्य खोलैत अछि।
३३३. (D) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब — ‘मौन प्रतिरोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे सब प्रतिरोध उद्घोषणा नहि; कखनहु मौन सेहो कथा मे तीखा होइत अछि।
३३४. (D) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच — ‘सामाजिक मुखौटा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे मुखौटा उतरला पर पात्र आ समाज दुनूक विडम्बना खुलैत अछि।
३३५. (A) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब — ‘आत्म-विच्छेद’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आधुनिकताक दबाव पात्रकें अपनहि भीतर अजनबी बना सकैत अछि।
३३६. (B) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार — ‘दबायल क्रोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे दबायल क्रोध कथा मे संकेत, कटाक्ष वा अचानक प्रतिक्रिया बनि सकैत अछि।
३३७. (B) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र — ‘करुण मनुष्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल पात्रकें केवल दोषी नहि, परिस्थितिग्रस्त मनुष्य रूपें देखैत छथि।
३३८. (C) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा — ‘अनाम भय’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अनाम भय आधुनिक कथा वातावरणकें बेचैन बनबैत अछि।
३३९. (C) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न — ‘भीतरक संवाद’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे भीतरक संवाद पात्रक मनक परत खोलैत अछि।

- ३४०. (A) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ** — ‘मनोवैज्ञानिक यथार्थ’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि यथार्थमे कथाक असली क्षेत्र मनुष्यक भीतर होइत अछि।
- ३४१. (D) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ टूटल पात्र केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक पात्र प्रायः सामाजिक रूपेँ सामान्य, भीतर सँ अस्थिर देखाइत अछि।
- ३४२. (B) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि** — परीक्षा-दृष्टिसँ अपराध-बोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अपराध-बोध पात्रक मनोवैज्ञानिक गहिराइ बढ़बैत अछि।
- ३४३. (B) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष** — परीक्षा-दृष्टिसँ द्वन्द्व केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। द्वन्द्व आधुनिक कथापात्रक मूल मनःस्थिति अछि।
- ३४४. (B) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब** — परीक्षा-दृष्टिसँ निरर्थकता-बोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई बोध पात्रकेँ सामाजिक सफलता सँ अलग एक गहिर संकटमे राखैत अछि।
- ३४५. (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ आत्म-छल केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा आत्म-छलकेँ पकड़ि मनुष्यक असल चेहरा देखबैत अछि।
- ३४६. (C) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ मनोकामना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। इच्छा केँ दबाओल जाए तखन ओ कथा-संघर्ष बनि उठैत अछि।
- ३४७. (C) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण** — परीक्षा-दृष्टिसँ भ्रम केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। भ्रम टूटलासँ कथा मे तीखा आत्म-बोध आवैत अछि।
- ३४८. (D) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ** — परीक्षा-दृष्टिसँ कुण्ठा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कुण्ठा पात्रक व्यवहारक अप्रकट कारण बनि सकैत अछि।
- ३४९. (D) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा** — परीक्षा-दृष्टिसँ आत्म-सम्मान केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा मे आत्म-सम्मान मनुष्यकेँ वस्तु बनय सँ रोकेत अछि।
- ३५०. (C) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति** — परीक्षा-दृष्टिसँ लाचारी केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। लाचारी पात्रक नैतिक विकल्प सीमित करैत अछि।
- ३५१. (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब** — परीक्षा-दृष्टिसँ छटपटाहट केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। छटपटाहट कथा केँ गति आ बेचैनी दैत अछि।
- ३५२. (C) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ स्मृतिजन्य पीड़ा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। स्मृति राजकमलक कथा मे मनोवैज्ञानिक नाट्य खोलैत अछि।
- ३५३. (B) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब** — परीक्षा-दृष्टिसँ मौन प्रतिरोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। सब प्रतिरोध उद्घोषणा नहि; कखनहु मौन सेहो कथा मे तीखा होइत अछि।
- ३५४. (A) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच** — परीक्षा-दृष्टिसँ सामाजिक मुखौटा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। मुखौटा उतरला पर पात्र आ समाज दुनूक विडम्बना खुलैत अछि।
- ३५५. (A) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब** — परीक्षा-दृष्टिसँ आत्म-विच्छेद केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आधुनिकताक दबाव पात्रकेँ अपनहि भीतर अजनबी बना सकैत अछि।
- ३५६. (D) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार** — परीक्षा-दृष्टिसँ दबायल क्रोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। दबायल क्रोध कथा मे संकेत, कटाक्ष वा अचानक प्रतिक्रिया बनि सकैत अछि।
- ३५७. (A) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र** — परीक्षा-दृष्टिसँ करुण मनुष्य केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल पात्रकेँ केवल दोषी नहि, परिस्थितिग्रस्त मनुष्य रूपेँ देखैत छथि।
- ३५८. (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा** — परीक्षा-दृष्टिसँ अनाम भय केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अनाम भय आधुनिक कथा वातावरणकेँ बेचैन बनबैत अछि।
- ३५९. (C) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न** — परीक्षा-दृष्टिसँ भीतरक संवाद केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। भीतरक संवाद पात्रक मनक परत खोलैत अछि।

- ३६०. (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ** — परीक्षा-दृष्टिसँ मनोवैज्ञानिक यथार्थ केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि यथार्थमे कथाक असली क्षेत्र मनुष्यक भीतर होइत अछि।
- ३६१. (B) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक पात्र प्रायः सामाजिक रूपेँ सामान्य, भीतर सँ अस्थिर देखाइत अछि।
- ३६२. (B) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अपराध-बोध पात्रक मनोवैज्ञानिक गहिराइ बढ़बैत अछि।
- ३६३. (C) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। द्वन्द्व आधुनिक कथापात्रक मूल मनःस्थिति अछि।
- ३६४. (C) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई बोध पात्रकेँ सामाजिक सफलता सँ अलग एक गहिर संकटमे राखैत अछि।
- ३६५. (D) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा आत्म-छलकेँ पकड़ि मनुष्यक असल चेहरा देखबैत अछि।
- ३६६. (C) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। इच्छा केँ दबाओल जाए तखन ओ कथा-संघर्ष बनि उठैत अछि।
- ३६७. (D) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। भ्रम टूटलासँ कथा मे तीखा आत्म-बोध आबैत अछि।
- ३६८. (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कुण्ठा पात्रक व्यवहारक अप्रकट कारण बनि सकैत अछि।
- ३६९. (C) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा मे आत्म-सम्मान मनुष्यकेँ वस्तु बनय सँ रोकैत अछि।
- ३७०. (C) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। लाचारी पात्रक नैतिक विकल्प सीमित करैत अछि।
- ३७१. (C) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। छटपटाहट कथा केँ गति आ बेचैनी दैत अछि।
- ३७२. (A) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। स्मृति राजकमलक कथा मे मनोवैज्ञानिक नाट्य खोलैत अछि।
- ३७३. (A) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। सब प्रतिरोध उद्घोषणा नहि; कखनहु मौन सेहो कथा मे तीखा होइत अछि।
- ३७४. (B) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। मुखौटा उतरला पर पात्र आ समाज दुनूक विडम्बना खुलैत अछि।
- ३७५. (B) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आधुनिकताक दबाव पात्रकेँ अपनहि भीतर अजनबी बना सकैत अछि।
- ३७६. (A) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकैत प्रतिकार** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। दबायल क्रोध कथा मे संकेत, कटाक्ष वा अचानक प्रतिक्रिया बनि सकैत अछि।
- ३७७. (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल पात्रकेँ केवल दोषी नहि, परिस्थितिग्रस्त मनुष्य रूपेँ देखैत छथि।
- ३७८. (A) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अनाम भय आधुनिक कथा वातावरणकेँ बेचैन बनबैत अछि।
- ३७९. (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। भीतरक संवाद पात्रक मनक परत खोलैत अछि।

- ३८०. (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि यथार्थमे कथाक असली क्षेत्र मनुष्यक भीतर होइत अछि।
- ३८१. (B) बाहरी जीवन चलि रहल अछि, मुदा भीतर दरार अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक पात्र प्रायः सामाजिक रूपेँ सामान्य, भीतर सँ अस्थिर देखाइत अछि।
- ३८२. (C) करम, इच्छा वा मौन कारणे भीतरक ग्लानि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अपराध-बोध पात्रक मनोवैज्ञानिक गहिराइ बढ़बैत अछि।
- ३८३. (D) चाह आ मर्यादा, देह आ नीति, भय आ विद्रोहक संघर्ष** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। द्वन्द्व आधुनिक कथापात्रक मूल मनःस्थिति अछि।
- ३८४. (C) जीवनक अर्थ खाली वा असफल लागब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई बोध पात्रकेँ सामाजिक सफलता सँ अलग एक गहिर संकटमे राखैत अछि।
- ३८५. (C) पात्र अपनहि सँ झूठ बाजैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा आत्म-छलकेँ पकड़ि मनुष्यक असल चेहरा देखबैत अछि।
- ३८६. (D) दबायल इच्छा जे कथा मे तनाव बनबैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। इच्छा केँ दबाओल जाए तखन ओ कथा-संघर्ष बनि उठैत अछि।
- ३८७. (B) सत्य केँ देखबासँ बचबाक मानसिक आवरण** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। भ्रम टूटलासँ कथा मे तीखा आत्म-बोध आबैत अछि।
- ३८८. (C) अपूर्ति, अपमान वा दमन सँ उपजल भीतरक गांठ** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कुण्ठा पात्रक व्यवहारक अप्रकट कारण बनि सकैत अछि।
- ३८९. (C) गरीबी वा अपमानक बीचो भीतरक गरिमा** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा मे आत्म-सम्मान मनुष्यकेँ वस्तु बनय सँ रोकेत अछि।
- ३९०. (D) समाज, परिवार वा अर्थ-व्यवस्था सँ घेरायल स्थिति** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। लाचारी पात्रक नैतिक विकल्प सीमित करैत अछि।
- ३९१. (A) स्थिति बदलबाक चाह, पर रास्ता नहि भेटब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। छटपटाहट कथा केँ गति आ बेचैनी दैत अछि।
- ३९२. (A) बीतल घटना वर्तमान मनकेँ कुरेदैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। स्मृति राजकमलक कथा मे मनोवैज्ञानिक नाट्य खोलैत अछि।
- ३९३. (A) बिना शोर अपन असहमति बचाकऽ राखब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। सब प्रतिरोध उद्धोषणा नहि; कखनहु मौन सेहो कथा मे तीखा होइत अछि।
- ३९४. (D) दुनिया सामने अलग चेहरा, भीतर अलग सच** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। मुखौटा उतरला पर पात्र आ समाज दुनूक विडम्बना खुलैत अछि।
- ३९५. (C) मनुष्य अपनहि जीवनसँ अलग पड़ि जाएब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आधुनिकताक दबाव पात्रकेँ अपनहि भीतर अजनबी बना सकैत अछि।
- ३९६. (C) प्रत्यक्ष हिंसा नहि, मुदा भीतर धधकेत प्रतिकार** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। दबायल क्रोध कथा मे संकेत, कटाक्ष वा अचानक प्रतिक्रिया बनि सकैत अछि।
- ३९७. (D) भूल आ कमजोरी रहितो सहानुभूतिक पात्र** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल पात्रकेँ केवल दोषी नहि, परिस्थितिग्रस्त मनुष्य रूपेँ देखैत छथि।
- ३९८. (B) स्पष्ट कारण बिना जीवनसँ असुरक्षा** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अनाम भय आधुनिक कथा वातावरणकेँ बेचैन बनबैत अछि।
- ३९९. (D) स्वयं सँ बहस आ आत्म-प्रश्न** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। भीतरक संवाद पात्रक मनक परत खोलैत अछि।

४००. (C) घटना सँ बेसी मनक संरचना पर केन्द्रित यथार्थ — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि यथार्थमे कथाक असली क्षेत्र मनुष्यक भीतर होइत अछि।
४०१. (C) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छ, पीड़ा आ आवाज — राजकमलक कथा स्त्रीकेँ केवल सजावट नहि, जटिल अनुभवक केन्द्र बनबैत अछि।
४०२. (C) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण — देह राजकमलक कथा मे सत्ता, अभाव आ आत्म-अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।
४०३. (D) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास — दाम्पत्य कथा मे निजी जीवनक भीतर सामाजिक ढाँचा देखाइत अछि।
४०४. (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव — राजकमलक कथा प्रेमकेँ सजावटी सुखांतमे सीमित नहि करैत अछि।
४०५. (A) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि — एहि स्वायत्तताक माग सामाजिक संघर्षक कारण बनैत अछि।
४०६. (D) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका — कथा पुरुष-दृष्टिक सीमाकेँ उघारि सकैत अछि।
४०७. (B) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट — ई दुहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।
४०८. (A) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध — राजकमलक कथा देह-बाजारक पाछाँक आर्थिक-सामाजिक कारण खोजैत अछि।
४०९. (A) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी — अन्तरंगता कथाक मनोवैज्ञानिक परत उजागर करैत अछि।
४१०. (C) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट — अपमान कथा मे प्रतिरोध वा टूटनक बीज बनैत अछि।
४११. (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम — कथा विवाहक भीतरक असमानता आ मौन तनाव देखबैत अछि।
४१२. (D) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा — मातृत्व कथामे करुणा, बोझ आ पहचानक जटिल रूप ले सकैत अछि।
४१३. (C) व्यक्ति अपन चाहकेँ मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति — इच्छा केँ अपराध मानबाक सामाजिक प्रवृत्ति कथा में सवाल बनैत अछि।
४१४. (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव — मौन स्त्री-पात्रक अशक्तता आ भीतरक प्रतिरोध दुनू कहि सकैत अछि।
४१५. (B) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब — राजकमलक कथा शोषणक नाजुक आ क्रूर रूप सभ देखबैत अछि।
४१६. (B) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय — लांछन समाजक नैतिक पुलिसगिरीक रूप अछि।
४१७. (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना — एहि दू दृष्टिक मेल कथा केँ गम्भीर बनबैत अछि।
४१८. (D) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड — एहि असमानताक पर्दाफाश आधुनिक कथा-दृष्टिक भाग अछि।
४१९. (B) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति — भीतरी आवाज कथा केँ केवल बाहरी घटना नहि रहय दैत अछि।
४२०. (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ — राजकमलक कथा देह-संवेदनाकेँ गहिर सामाजिक सन्दर्भमे राखैत अछि।
४२१. (C) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छ, पीड़ा आ आवाज — ‘स्त्री-अनुभव’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा स्त्रीकेँ केवल सजावट नहि, जटिल अनुभवक केन्द्र बनबैत अछि।
४२२. (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण — ‘देहक प्रश्न’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे देह राजकमलक कथा मे सत्ता, अभाव आ आत्म-अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।
४२३. (C) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास — ‘दाम्पत्य तनाव’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे दाम्पत्य कथा मे निजी जीवनक भीतर सामाजिक ढाँचा देखाइत अछि।
४२४. (A) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव — ‘प्रेमक विडम्बना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा प्रेमकेँ सजावटी सुखांतमे सीमित नहि करैत अछि।
४२५. (B) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि — ‘स्त्री-स्वायत्तता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि स्वायत्तताक माग सामाजिक संघर्षक कारण बनैत अछि।
४२६. (C) स्त्रीकेँ देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका — ‘पुरुष-दृष्टि’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा पुरुष-दृष्टिक सीमाकेँ उघारि सकैत अछि।
४२७. (A) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट — ‘नैतिक दमन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई दुहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।
४२८. (C) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध — ‘देह-बाजार’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा देह-बाजारक पाछाँक आर्थिक-सामाजिक कारण खोजैत अछि।

- ४३९. (A) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी** — ‘अन्तरंगता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अन्तरंगता कथाक मनोवैज्ञानिक परत उजागर करैत अछि।
- ४३०. (B) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट** — ‘अपमान’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अपमान कथा मे प्रतिरोध वा टूटनक बीज बनैत अछि।
- ४३१. (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम** — ‘विवाह-संस्था’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा विवाहक भीतरक असमानता आ मौन तनाव देखबैत अछि।
- ४३२. (B) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा** — ‘मातृत्व’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे मातृत्व कथामे करुणा, बोझ आ पहचानक जटिल रूप ले सकैत अछि।
- ४३३. (A) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति** — ‘इच्छाक अधिकार’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे इच्छा कें अपराध मानबाक सामाजिक प्रवृत्ति कथा में सवाल बनैत अछि।
- ४३४. (D) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव** — ‘स्त्रीक मौन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे मौन स्त्री-पात्रक अशक्तता आ भीतरक प्रतिरोध दुनू कहि सकैत अछि।
- ४३५. (A) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब** — ‘शोषण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा शोषणक नाजुक आ क्रूर रूप सभ देखबैत अछि।
- ४३६. (B) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय** — ‘सामाजिक लांछन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे लांछन समाजक नैतिक पुलिसगिरीक रूप अछि।
- ४३७. (D) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना** — ‘करुणा आ आलोचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि दू दृष्टिक मेल कथा कें गम्भीर बनबैत अछि।
- ४३८. (B) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड** — ‘स्त्री-पुरुष असमानता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि असमानताक पर्दाफाश आधुनिक कथा-दृष्टिक भाग अछि।
- ४३९. (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति** — ‘भीतरी आवाज’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे भीतरी आवाज कथा कें केवल बाहरी घटना नहि रहय दैत अछि।
- ४४०. (B) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ** — ‘देह-संवेदना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा देह-संवेदनाकें गहिर सामाजिक सन्दर्भमे राखैत अछि।
- ४४१. (B) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज** — परीक्षा-दृष्टिसँ स्त्री-अनुभव कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा स्त्रीकें केवल सजावट नहि, जटिल अनुभवक केन्द्र बनबैत अछि।
- ४४२. (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण** — परीक्षा-दृष्टिसँ देहक प्रश्न कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। देह राजकमलक कथा मे सत्ता, अभाव आ आत्म-अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।
- ४४३. (B) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास** — परीक्षा-दृष्टिसँ दाम्पत्य तनाव कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। दाम्पत्य कथा मे निजी जीवनक भीतर सामाजिक ढाँचा देखाइत अछि।
- ४४४. (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव** — परीक्षा-दृष्टिसँ प्रेमक विडम्बना कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा प्रेमकें सजावटी सुखांतमे सीमित नहि करैत अछि।
- ४४५. (C) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ स्त्री-स्वायत्तता कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि स्वायत्तताक माग सामाजिक संघर्षक कारण बनैत अछि।
- ४४६. (D) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका** — परीक्षा-दृष्टिसँ पुरुष-दृष्टि कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा पुरुष-दृष्टिक सीमाकें उघारि सकैत अछि।
- ४४७. (A) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट** — परीक्षा-दृष्टिसँ नैतिक दमन कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई दुहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक महत्वपूर्ण प्रश्न अछि।
- ४४८. (C) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध** — परीक्षा-दृष्टिसँ देह-बाजार कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा देह-बाजारक पाछाँक आर्थिक-सामाजिक कारण खोजैत अछि।
- ४४९. (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी** — परीक्षा-दृष्टिसँ अन्तरंगता कें सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अन्तरंगता कथाक मनोवैज्ञानिक परत उजागर करैत अछि।

- ४५०. (B) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट** — परीक्षा-दृष्टिसे अपमान के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अपमान कथा मे प्रतिरोध वा टूटनक बीज बनैत अछि।
- ४५१. (D) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम** — परीक्षा-दृष्टिसे विवाह-संस्था के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा विवाहक भीतरक असमानता आ मौन तनाव देखबैत अछि।
- ४५२. (C) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा** — परीक्षा-दृष्टिसे मातृत्व के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। मातृत्व कथामे करुणा, बोझ आ पहचानक जटिल रूप ले सकैत अछि।
- ४५३. (C) व्यक्ति अपन चाहके मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति** — परीक्षा-दृष्टिसे इच्छाक अधिकार के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। इच्छा के अपराध मानबाक सामाजिक प्रवृत्ति कथा में सवाल बनैत अछि।
- ४५४. (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव** — परीक्षा-दृष्टिसे स्त्रीक मौन के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। मौन स्त्री-पात्रक अशक्तता आ भीतरक प्रतिरोध दुनू कहि सकैत अछि।
- ४५५. (B) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब** — परीक्षा-दृष्टिसे शोषण के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा शोषणक नाजुक आ क्रूर रूप सभ देखबैत अछि।
- ४५६. (D) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय** — परीक्षा-दृष्टिसे सामाजिक लांछन के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। लांछन समाजक नैतिक पुलिसगिरीक रूप अछि।
- ४५७. (C) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना** — परीक्षा-दृष्टिसे करुणा आ आलोचना के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि दृष्टिक मेल कथा के गम्भीर बनबैत अछि।
- ४५८. (D) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड** — परीक्षा-दृष्टिसे स्त्री-पुरुष असमानता के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि असमानताक पर्दाफाश आधुनिक कथा-दृष्टिक भाग अछि।
- ४५९. (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति** — परीक्षा-दृष्टिसे भीतरी आवाज के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। भीतरी आवाज कथा के केवल बाहरी घटना नहि रहय दैत अछि।
- ४६०. (C) शरीरक अनुभवसे जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ** — परीक्षा-दृष्टिसे देह-संवेदना के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा देह-संवेदनाके गहिर सामाजिक सन्दर्भमे राखैत अछि।
- ४६१. (A) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा स्त्रीके केवल सजावट नहि, जटिल अनुभवक केन्द्र बनबैत अछि।
- ४६२. (B) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता के नियंत्रण** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। देह राजकमलक कथा मे सत्ता, अभाव आ आत्म-अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।
- ४६३. (C) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। दाम्पत्य कथा मे निजी जीवनक भीतर सामाजिक ढाँचा देखाइत अछि।
- ४६४. (C) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासे घेरायल अनुभव** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा प्रेमके सजावटी सुखांतमे सीमित नहि करैत अछि।
- ४६५. (C) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि स्वायत्तताक माग सामाजिक संघर्षक कारण बनैत अछि।
- ४६६. (D) स्त्रीके देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा पुरुष-दृष्टिक सीमाके उघारि सकैत अछि।
- ४६७. (B) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई दुहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक महत्वपूर्ण प्रश्न अछि।
- ४६८. (B) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता के जटिल सम्बन्ध** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा देह-बाजारक पाछाँक आर्थिक-सामाजिक कारण खोजैत अछि।
- ४६९. (D) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अन्तरंगता कथाक मनोवैज्ञानिक परत उजागर करैत अछि।

- ४७०. (A) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अपमान कथा मे प्रतिरोध वा टूटनक बीज बनैत अछि।
- ४७१. (A) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा विवाहक भीतरक असमानता आ मौन तनाव देखबैत अछि।
- ४७२. (D) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। मातृत्व कथामे करुणा, बोझ आ पहचानक जटिल रूप ले सकैत अछि।
- ४७३. (D) व्यक्ति अपन चाहकें मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। इच्छा कें अपराध मानबाक सामाजिक प्रवृत्ति कथा में सवाल बनैत अछि।
- ४७४. (B) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। मौन स्त्री-पात्रक अशक्तता आ भीतरक प्रतिरोध दुनू कहि सकैत अछि।
- ४७५. (D) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा शोषणक नाजुक आ क्रूर रूप सभ देखबैत अछि।
- ४७६. (D) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। लांछन समाजक नैतिक पुलिसगिरीक रूप अछि।
- ४७७. (B) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि दू दृष्टिक मेल कथा कें गम्भीर बनबैत अछि।
- ४७८. (A) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि असमानताक पर्दाफाश आधुनिक कथा-दृष्टिक भाग अछि।
- ४७९. (C) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। भीतरी आवाज कथा कें केवल बाहरी घटना नहि रहय दैत अछि।
- ४८०. (D) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा देह-संवेदनाकें गहिर सामाजिक सन्दर्भमे राखैत अछि।
- ४८१. (C) समाजक नियम बीच स्त्रीक इच्छा, पीड़ा आ आवाज** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा स्त्रीकें केवल सजावट नहि, जटिल अनुभवक केन्द्र बनबैत अछि।
- ४८२. (D) देह पर समाज, बाजार आ नैतिकता केर नियंत्रण** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। देह राजकमलक कथा मे सत्ता, अभाव आ आत्म-अधिकारक प्रश्न बनैत अछि।
- ४८३. (B) पति-पत्नी सम्बन्धमे प्रेम, अधिकार, दूरी आ अविश्वास** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। दाम्पत्य कथा मे निजी जीवनक भीतर सामाजिक ढाँचा देखाइत अछि।
- ४८४. (D) प्रेम आदर्श नहि, टूटन आ असमानतासँ घेरायल अनुभव** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा प्रेमकें सजावटी सुखांतमे सीमित नहि करैत अछि।
- ४८५. (A) स्त्री अपन निर्णय, इच्छा आ आत्म-सम्मान चाहैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि स्वायत्तताक माग सामाजिक संघर्षक कारण बनैत अछि।
- ४८६. (B) स्त्रीकें देखबाक समाजक पुरुष-केंद्रित तरीका** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा पुरुष-दृष्टिक सीमाकें उघारि सकैत अछि।
- ४८७. (D) स्त्री पर कठोर नैतिक नियम, पुरुष पर छूट** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई दुहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक महत्वपूर्ण प्रश्न अछि।
- ४८८. (D) अर्थ, आवश्यकता आ यौनिकता केर जटिल सम्बन्ध** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा देह-बाजारक पाछाँक आर्थिक-सामाजिक कारण खोजैत अछि।
- ४८९. (C) निकट सम्बन्धक भीतरक भय, चाह आ दूरी** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अन्तरंगता कथाक मनोवैज्ञानिक परत उजागर करैत अछि।

४९०. (D) स्त्री वा उपेक्षित पात्रक गरिमा पर चोट — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अपमान कथा मे प्रतिरोध वा टूटनक बीज बनैत अछि।
४९१. (C) समाज द्वारा स्वीकृत सम्बन्धक नियम — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा विवाहक भीतरक असमानता आ मौन तनाव देखबैत अछि।
४९२. (B) माँक अनुभव, जिम्मेदारी आ समाजक अपेक्षा — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। मातृत्व कथामे करुणा, बोझ आ पहचानक जटिल रूप ले सकैत अछि।
४९३. (B) व्यक्ति अपन चाहकेँ मान्यता दिये, एहि प्रश्नक प्रस्तुति — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। इच्छा केँ अपराध मानबाक सामाजिक प्रवृत्ति कथा में सवाल बनैत अछि।
४९४. (A) न बाजल गेल बातक भीतर दबल अनुभव — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। मौन स्त्री-पात्रक अशक्तता आ भीतरक प्रतिरोध दुनू कहि सकैत अछि।
४९५. (A) शरीर, श्रम, भावना वा गरीबीक लाभ उठायब — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा शोषणक नाजुक आ क्रूर रूप सभ देखबैत अछि।
४९६. (B) स्त्रीक व्यवहार पर समाजक कठोर निर्णय — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। लांछन समाजक नैतिक पुलिसगिरीक रूप अछि।
४९७. (A) स्त्री-पात्र प्रति संवेदना संग समाजक आलोचना — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि दृष्टिक मेल कथा केँ गम्भीर बनबैत अछि।
४९८. (C) नियम, अवसर आ इच्छा पर अलग-अलग मापदण्ड — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि असमानताक पर्दाफाश आधुनिक कथा-दृष्टिक भाग अछि।
४९९. (D) स्त्री-पात्रक मनोभावक सूक्ष्म प्रस्तुति — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। भीतरी आवाज कथा केँ केवल बाहरी घटना नहि रहय दैत अछि।
५००. (C) शरीरक अनुभवसँ जुड़ल सामाजिक आ मानसिक अर्थ — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा देह-संवेदनाकेँ गहिर सामाजिक सन्दर्भमे राखैत अछि।
५०१. (B) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग — राजकमलक कथा मध्यवर्गक आत्म-संकटकेँ तीव्र रूपेँ देखबैत अछि।
५०२. (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग — कथा मे निम्नवर्गक उपस्थिति व्यवस्था के कठोर सच खोलैत अछि।
५०३. (B) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव — अर्थाभाव मनुष्यक निर्णयकेँ बदलि दैत अछि।
५०४. (D) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह — उपभोगक दबाव आधुनिक समाजक खोखलापन उजागर करैत अछि।
५०५. (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल — राजकमलक कथा नवधनाढ्य वर्गक असंतुलित व्यवहार पर कटाक्ष करैत अछि।
५०६. (D) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण — ई सामाजिक पृष्ठभूमि आधुनिक कथा मे भ्रष्टाचारक संकेत बनि सकैत अछि।
५०७. (B) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण — कथा समाजक नैतिक गिरावटकेँ निजी जीवनसँ जोड़ैत अछि।
५०८. (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र — शहर राजकमलक कथामे आकर्षण आ संकट दुनू अछि।
५०९. (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल — गाम केवल रोमानी ठाम नहि, संघर्ष आ सामाजिक बन्धनक क्षेत्र अछि।
५१०. (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश — कस्बा आधुनिक बदलावक बीच अटकल समाजक प्रतीक बनि सकैत अछि।
५११. (D) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवाला व्यवस्था — कथा मे जाति प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ शक्ति-संबंध बनबैत अछि।
५१२. (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण — पितृसत्ता परिवार, विवाह आ देह-नियमनमे सक्रिय रहैत अछि।
५१३. (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार — राजकमल आधुनिक कथामे लोक-संस्कारक पृष्ठभूमि सेहो राखैत छथि।
५१४. (C) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी — वर्ग-अन्तर कथाक संघर्षक सामाजिक धरातल दैत अछि।
५१५. (D) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न — अर्थनीतिक असुरक्षा पात्रकेँ भीतर सँ अस्थिर करैत अछि।
५१६. (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता — कथा समाजक सूक्ष्म सत्ता-संबंध उजागर करैत अछि।

५१७. (D) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब — किनाराक अनुभव आधुनिक कथा केँ मानवीय गहिराइ दैत अछि।
५१८. (A) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब — संक्रमण कालमे पात्र असुरक्षित आ प्रश्नाकुल बनैत अछि।
५१९. (C) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ — परिवेश कथा मे पात्रक मनःस्थिति आ समाजक चेहरा बतबैत अछि।
५२०. (D) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न — राजकमलक कथामे समाज-आलोचना संवेदना आ व्यंग्य दुनू रूपेँ अबैत अछि।
५२१. (C) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग — ‘मध्यवर्ग’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा मध्यवर्गक आत्म-संकटकेँ तीव्र रूपेँ देखबैत अछि।
५२२. (D) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग — ‘निम्नवर्ग’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा मे निम्नवर्गक उपस्थिति व्यवस्था के कठोर सच खोलैत अछि।
५२३. (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव — ‘अर्थाभाव’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अर्थाभाव मनुष्यक निर्णयकेँ बदलि दैत अछि।
५२४. (C) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह — ‘उपभोग-लालसा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे उपभोगक दबाव आधुनिक समाजक खोखलापन उजागर करैत अछि।
५२५. (B) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल — ‘नवधनाढ्य मानसिकता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा नवधनाढ्य वर्गक असंतुलित व्यवहार पर कटाक्ष करैत अछि।
५२६. (D) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण — ‘परमिट-राज’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई सामाजिक पृष्ठभूमि आधुनिक कथा मे भ्रष्टाचारक संकेत बनि सकैत अछि।
५२७. (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण — ‘भ्रष्टाचार’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा समाजक नैतिक गिरावटकेँ निजी जीवनसँ जोड़ैत अछि।
५२८. (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र — ‘शहर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे शहर राजकमलक कथामे आकर्षण आ संकट दुनू अछि।
५२९. (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल — ‘गाम’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे गाम केवल रोमानी ठाम नहि, संघर्ष आ सामाजिक बन्धनक क्षेत्रो अछि।
५३०. (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश — ‘कस्बा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कस्बा आधुनिक बदलावक बीच अटकल समाजक प्रतीक बनि सकैत अछि।
५३१. (B) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था — ‘जाति-संरचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा मे जाति प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ शक्ति-संबंध बनबैत अछि।
५३२. (D) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण — ‘पितृसत्ता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे पितृसत्ता परिवार, विवाह आ देह-नियमनमे सक्रिय रहैत अछि।
५३३. (B) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार — ‘लोक-संस्कार’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल आधुनिक कथामे लोक-संस्कारक पृष्ठभूमि सेहो राखैत छथि।
५३४. (B) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी — ‘वर्ग-अन्तर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे वर्ग-अन्तर कथाक संघर्षक सामाजिक धरातल दैत अछि।
५३५. (A) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न — ‘रोजगार-संकट’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अर्थनीतिक असुरक्षा पात्रकेँ भीतर सँ अस्थिर करैत अछि।
५३६. (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता — ‘सत्ता-संबंध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा समाजक सूक्ष्म सत्ता-संबंध उजागर करैत अछि।
५३७. (D) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब — ‘सामाजिक अपदस्थता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे किनाराक अनुभव आधुनिक कथा केँ मानवीय गहिराइ दैत अछि।
५३८. (C) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब — ‘सांस्कृतिक संक्रमण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे संक्रमण कालमे पात्र असुरक्षित आ प्रश्नाकुल बनैत अछि।
५३९. (B) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ — ‘परिवेश-संकेत’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे परिवेश कथा मे पात्रक मनःस्थिति आ समाजक चेहरा बतबैत अछि।

- ५४०. (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न** — ‘समाज-आलोचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथामे समाज-आलोचना संवेदना आ व्यंग्य दुनू रूपेँ अबैत अछि।
- ५४१. (C) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग** — परीक्षा-दृष्टिसँ मध्यवर्ग केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा मध्यवर्गक आत्म-संकटकेँ तीव्र रूपेँ देखबैत अछि।
- ५४२. (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग** — परीक्षा-दृष्टिसँ निम्नवर्ग केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा मे निम्नवर्गक उपस्थिति व्यवस्था के कठोर सच खोलैत अछि।
- ५४३. (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव** — परीक्षा-दृष्टिसँ अर्थाभाव केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अर्थाभाव मनुष्यक निर्णयकेँ बदलि दैत अछि।
- ५४४. (A) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह** — परीक्षा-दृष्टिसँ उपभोग-लालसा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। उपभोगक दबाव आधुनिक समाजक खोखलापन उजागर करैत अछि।
- ५४५. (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल** — परीक्षा-दृष्टिसँ नवधनाढ्य मानसिकता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा नवधनाढ्य वर्गक असंतुलित व्यवहार पर कटाक्ष करैत अछि।
- ५४६. (C) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण** — परीक्षा-दृष्टिसँ परमिट-राज केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई सामाजिक पृष्ठभूमि आधुनिक कथा मे भ्रष्टाचारक संकेत बनि सकैत अछि।
- ५४७. (B) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण** — परीक्षा-दृष्टिसँ भ्रष्टाचार केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा समाजक नैतिक गिरावटकेँ निजी जीवनसँ जोड़ैत अछि।
- ५४८. (D) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र** — परीक्षा-दृष्टिसँ शहर केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। शहर राजकमलक कथामे आकर्षण आ संकट दुनू अछि।
- ५४९. (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल** — परीक्षा-दृष्टिसँ गाम केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। गाम केवल रोमानी ठाम नहि, संघर्ष आ सामाजिक बन्धनक क्षेत्रो अछि।
- ५५०. (C) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश** — परीक्षा-दृष्टिसँ कस्बा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कस्बा आधुनिक बदलावक बीच अटकल समाजक प्रतीक बनि सकैत अछि।
- ५५१. (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था** — परीक्षा-दृष्टिसँ जाति-संरचना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा मे जाति प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ शक्ति-संबंध बनबैत अछि।
- ५५२. (D) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण** — परीक्षा-दृष्टिसँ पितृसत्ता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। पितृसत्ता परिवार, विवाह आ देह-नियमनमे सक्रिय रहैत अछि।
- ५५३. (D) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार** — परीक्षा-दृष्टिसँ लोक-संस्कार केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल आधुनिक कथामे लोक-संस्कारक पृष्ठभूमि सेहो राखैत छथि।
- ५५४. (C) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी** — परीक्षा-दृष्टिसँ वर्ग-अन्तर केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। वर्ग-अन्तर कथाक संघर्षक सामाजिक धरातल दैत अछि।
- ५५५. (A) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न** — परीक्षा-दृष्टिसँ रोजगार-संकट केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अर्थनीतिक असुरक्षा पात्रकेँ भीतर सँ अस्थिर करैत अछि।
- ५५६. (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता** — परीक्षा-दृष्टिसँ सत्ता-संबंध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा समाजक सूक्ष्म सत्ता-संबंध उजागर करैत अछि।
- ५५७. (C) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब** — परीक्षा-दृष्टिसँ सामाजिक अपदस्थता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। किनाराक अनुभव आधुनिक कथा केँ मानवीय गहिराई दैत अछि।
- ५५८. (C) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब** — परीक्षा-दृष्टिसँ सांस्कृतिक संक्रमण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। संक्रमण कालमे पात्र असुरक्षित आ प्रश्नाकुल बनैत अछि।
- ५५९. (C) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ** — परीक्षा-दृष्टिसँ परिवेश-संकेत केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। परिवेश कथा मे पात्रक मनःस्थिति आ समाजक चेहरा बतबैत अछि।

५६०. (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न — परीक्षा-दृष्टिसे समाज-आलोचना के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथामे समाज-आलोचना संवेदना आ व्यंग्य दुनू रूपेँ अबैत अछि।
५६१. (B) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फैसल वर्ग — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा मध्यवर्गक आत्म-संकटकेँ तीव्र रूपेँ देखबैत अछि।
५६२. (D) अभाव, श्रम आ उपेक्षासेँ घेरायल समाज-भाग — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा मे निम्नवर्गक उपस्थिति व्यवस्था के कठोर सच खोलैत अछि।
५६३. (B) पैसाक कमी सेँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अर्थाभाव मनुष्यक निर्णयकेँ बदलि दैत अछि।
५६४. (C) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। उपभोगक दबाव आधुनिक समाजक खोखलापन उजागर करैत अछि।
५६५. (C) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा नवधनाढ्य वर्गक असंतुलित व्यवहार पर कटाक्ष करैत अछि।
५६६. (A) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई सामाजिक पृष्ठभूमि आधुनिक कथा मे भ्रष्टाचारक संकेत बनि सकैत अछि।
५६७. (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा समाजक नैतिक गिरावटकेँ निजी जीवनसेँ जोड़ैत अछि।
५६८. (C) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। शहर राजकमलक कथामे आकर्षण आ संकट दुनू अछि।
५६९. (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। गाम केवल रोमानी ठाम नहि, संघर्ष आ सामाजिक बन्धनक क्षेत्रो अछि।
५७०. (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कस्बा आधुनिक बदलावक बीच अटकल समाजक प्रतीक बनि सकैत अछि।
५७१. (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा मे जाति प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ शक्ति-संबंध बनबैत अछि।
५७२. (A) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। पितृसत्ता परिवार, विवाह आ देह-नियमनमे सक्रिय रहैत अछि।
५७३. (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल आधुनिक कथामे लोक-संस्कारक पृष्ठभूमि सेहो राखैत छथि।
५७४. (C) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। वर्ग-अन्तर कथाक संघर्षक सामाजिक धरातल दैत अछि।
५७५. (C) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अर्थनीतिक असुरक्षा पात्रकेँ भीतर सेँ अस्थिर करैत अछि।
५७६. (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा समाजक सूक्ष्म सत्ता-संबंध उजागर करैत अछि।
५७७. (D) केन्द्रसेँ किनार पर धकेलल जाएब — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। किनाराक अनुभव आधुनिक कथा केँ मानवीय गहिराई दैत अछि।
५७८. (A) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। संक्रमण कालमे पात्र असुरक्षित आ प्रश्नाकुल बनैत अछि।
५७९. (A) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ — एहि संकेतसेँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। परिवेश कथा मे पात्रक मनःस्थिति आ समाजक चेहरा बतबैत अछि।

- ५८०. (B) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथामे समाज-आलोचना संवेदना आ व्यंग्य दुनू रूपेँ अबैत अछि।
- ५८१. (C) मर्यादा, अभाव, आकांक्षा आ ढोंग बीच फँसल वर्ग** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा मध्यवर्गक आत्म-संकटकेँ तीव्र रूपेँ देखबैत अछि।
- ५८२. (C) अभाव, श्रम आ उपेक्षासँ घेरायल समाज-भाग** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा मे निम्नवर्गक उपस्थिति व्यवस्था के कठोर सच खोलैत अछि।
- ५८३. (D) पैसाक कमी सँ सम्बन्ध आ नैतिकता पर दबाव** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अर्थाभाव मनुष्यक निर्णयकेँ बदलि दैत अछि।
- ५८४. (B) वस्तु, सुविधा आ दिखावाक चाह** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। उपभोगक दबाव आधुनिक समाजक खोखलापन उजागर करैत अछि।
- ५८५. (D) नव पैसा, पुरान नैतिकता आ असंयमक मेल** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा नवधनाढ्य वर्गक असंतुलित व्यवहार पर कटाक्ष करैत अछि।
- ५८६. (A) व्यवस्था, दलाली आ भ्रष्ट लाभक वातावरण** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई सामाजिक पृष्ठभूमि आधुनिक कथा मे भ्रष्टाचारक संकेत बनि सकैत अछि।
- ५८७. (A) सार्वजनिक मूल्यक निजी लाभमे रूपान्तरण** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा समाजक नैतिक गिरावटकेँ निजी जीवनसँ जोड़ैत अछि।
- ५८८. (B) भीड़, अवसर, अकेलापन आ बाजारक केन्द्र** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। शहर राजकमलक कथामे आकर्षण आ संकट दुनू अछि।
- ५८९. (A) स्मृति, परम्परा, गरीबी आ सम्बन्धक धरातल** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। गाम केवल रोमानी ठाम नहि, संघर्ष आ सामाजिक बन्धनक क्षेत्रो अछि।
- ५९०. (D) गाम आ शहर बीचक संक्रमणशील परिवेश** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कस्बा आधुनिक बदलावक बीच अटकल समाजक प्रतीक बनि सकैत अछि।
- ५९१. (A) सामाजिक स्थान आ सम्बन्ध निर्धारण करयवला व्यवस्था** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा मे जाति प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ शक्ति-संबंध बनबैत अछि।
- ५९२. (B) पुरुष-केन्द्रित सामाजिक नियंत्रण** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। पितृसत्ता परिवार, विवाह आ देह-नियमनमे सक्रिय रहैत अछि।
- ५९३. (C) गाम-समाजक रीति, विश्वास आ भाषा-व्यवहार** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल आधुनिक कथामे लोक-संस्कारक पृष्ठभूमि सेहो राखैत छथि।
- ५९४. (B) धनी-गरीब, मालिक-सेवक वा उच्च-निम्नक दूरी** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। वर्ग-अन्तर कथाक संघर्षक सामाजिक धरातल दैत अछि।
- ५९५. (C) काम, बेरोजगारी आ आत्मसम्मानक प्रश्न** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अर्थनीतिक असुरक्षा पात्रकेँ भीतर सँ अस्थिर करैत अछि।
- ५९६. (D) ककरा निर्णयक अधिकार अछि आ ककरा चुप रहबाक बाध्यता** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा समाजक सूक्ष्म सत्ता-संबंध उजागर करैत अछि।
- ५९७. (A) केंद्रसँ किनार पर धकेलल जाएब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। किनाराक अनुभव आधुनिक कथा केँ मानवीय गहिराई दैत अछि।
- ५९८. (D) पुरान मूल्य टूटब आ नूतन मूल्य अस्पष्ट रहब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। संक्रमण कालमे पात्र असुरक्षित आ प्रश्नाकुल बनैत अछि।
- ५९९. (B) घर, सड़क, दफ्तर, बाजार वा कोठरीक प्रतीकात्मक अर्थ** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। परिवेश कथा मे पात्रक मनःस्थिति आ समाजक चेहरा बतबैत अछि।

६००. (C) कथा द्वारा व्यवस्था, पाखण्ड आ अन्याय पर प्रश्न — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथामे समाज-आलोचना संवेदना आ व्यंग्य दुनू रूपेँ अबैत अछि।
६०१. (D) कम शब्दमे तीखा प्रभाव — राजकमलक कथा-भाषा बेर-बेर संक्षिप्त, कटु आ मारक बनि जाइत अछि।
६०२. (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि — कवि-स्वभाव हुनक कथा-गद्यकेँ बिम्ब-समृद्ध बनबैत अछि।
६०३. (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ — प्रतीक कथाक अर्थ-क्षेत्र बढ़बैत अछि।
६०४. (A) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन — ई शिल्प पात्रक भीतरी जगतकेँ सीधे खोलैत अछि।
६०५. (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि — विखण्डन आधुनिक जीवनक बिखरावक अनुरूप शिल्प अछि।
६०६. (B) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन — व्यंग्य राजकमलक सामाजिक आलोचनाकेँ धार दैत अछि।
६०७. (A) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द — लोक-शब्द कथा केँ क्षेत्रीयता आ जीवंतता दैत अछि।
६०८. (A) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा — शहरक शब्द कथा मे आधुनिक वातावरण रचैत अछि।
६०९. (C) कथनक बीच रुकी गेल बात — मौन कहानीमे अनकहल पीड़ा आ तनाव भरि दैत अछि।
६१०. (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी — कटाक्ष पाठककेँ हँसी आ असुविधा दुनू देइत अछि।
६११. (A) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब — कथा मे वस्तु पात्रक जीवन-स्थिति आ समाजक अर्थ खोली सकैत अछि।
६१२. (D) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब — रूपक कथा केँ व्याख्यात्मक विस्तार दैत अछि।
६१३. (B) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली — सम्बोधन पाठक वा पात्र बीच निकटता आ तनाव बनबैत अछि।
६१४. (C) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब — संवादमे वर्ग, मनःस्थिति आ सम्बन्धक सच झलकैत अछि।
६१५. (A) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ — राजकमलक कथा पढ़बा लेल उपपाठ पकड़ब आवश्यक अछि।
६१६. (D) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव — एहि विरोधसँ कथा मे तीखा सौन्दर्य आ बेचैनी आबैत अछि।
६१७. (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि — कथावाचकक दूरी वा निकटता कथाक प्रभाव बदलैत अछि।
६१८. (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही — समयक लचक कथा केँ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
६१९. (D) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब — झटका पाठकक सुविधा तोड़ि कथा केँ यादगार बनबैत अछि।
६२०. (A) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता — राजकमलक महत्त्व केवल विषय नहि, कथनक ढंगमे सेहो अछि।
६२१. (A) कम शब्दमे तीखा प्रभाव — ‘संक्षिप्त वाक्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा-भाषा बेर-बेर संक्षिप्त, कटु आ मारक बनि जाइत अछि।
६२२. (C) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि — ‘काव्यात्मक बिम्ब’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कवि-स्वभाव हुनक कथा-गद्यकेँ बिम्ब-समृद्ध बनबैत अछि।
६२३. (A) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ — ‘प्रतीक’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे प्रतीक कथाक अर्थ-क्षेत्र बढ़बैत अछि।
६२४. (C) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन — ‘आन्तरिक एकालाप’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई शिल्प पात्रक भीतरी जगतकेँ सीधे खोलैत अछि।
६२५. (B) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि — ‘विखण्डित संरचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे विखण्डन आधुनिक जीवनक बिखरावक अनुरूप शिल्प अछि।
६२६. (B) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन — ‘व्यंग्यात्मक भाषा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे व्यंग्य राजकमलक सामाजिक आलोचनाकेँ धार दैत अछि।
६२७. (D) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द — ‘लोक-शब्द’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे लोक-शब्द कथा केँ क्षेत्रीयता आ जीवंतता दैत अछि।
६२८. (C) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा — ‘शहरी शब्द-संकेत’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे शहरक शब्द कथा मे आधुनिक वातावरण रचैत अछि।
६२९. (D) कथनक बीच रुकी गेल बात — ‘मौन-विराम’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे मौन कहानीमे अनकहल पीड़ा आ तनाव भरि दैत अछि।
६३०. (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी — ‘कटाक्ष’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कटाक्ष पाठककेँ हँसी आ असुविधा दुनू देइत अछि।

- ६३१. (D) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसेँ देखायब** — ‘वस्तु-चित्रण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा मे वस्तु पात्रक जीवन-स्थिति आ समाजक अर्थ खोलि सकैत अछि।
- ६३२. (B) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब** — ‘रूपक’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे रूपक कथा केँ व्याख्यात्मक विस्तार दैत अछि।
- ६३३. (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली** — ‘सम्बोधन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे सम्बोधन पाठक वा पात्र बीच निकटता आ तनाव बनबैत अछि।
- ६३४. (C) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब** — ‘संवाद’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे संवादमे वर्ग, मनःस्थिति आ सम्बन्धक सच झलकैत अछि।
- ६३५. (D) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ** — ‘उपपाठ’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा पढ़बा लेल उपपाठ पकड़ब आवश्यक अछि।
- ६३६. (B) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव** — ‘बिम्ब-विरोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि विरोधसेँ कथा मे तीखा सौन्दर्य आ बेचैनी आबैत अछि।
- ६३७. (B) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि** — ‘कथावाचक’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथावाचकक दूरी वा निकटता कथाक प्रभाव बदलैत अछि।
- ६३८. (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही** — ‘समय-प्रयोग’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे समयक लचक कथा केँ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
- ६३९. (C) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब** — ‘अन्तक झटका’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे झटका पाठकक सुविधा तोड़ि कथा केँ यादगार बनबैत अछि।
- ६४०. (A) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता** — ‘शिल्प-चेतना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक महत्त्व केवल विषय नहि, कथनक ढंगमे सेहो अछि।
- ६४१. (D) कम शब्दमे तीखा प्रभाव** — परीक्षा-दृष्टिसेँ संक्षिप्त वाक्य केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा-भाषा बेर-बेर संक्षिप्त, कटु आ मारक बनि जाइत अछि।
- ६४२. (A) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि** — परीक्षा-दृष्टिसेँ काव्यात्मक बिम्ब केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कवि-स्वभाव हुनक कथा-गद्यकेँ बिम्ब-समृद्ध बनबैत अछि।
- ६४३. (A) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ** — परीक्षा-दृष्टिसेँ प्रतीक केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। प्रतीक कथाक अर्थ-क्षेत्र बढ़बैत अछि।
- ६४४. (A) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन** — परीक्षा-दृष्टिसेँ आन्तरिक एकालाप केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई शिल्प पात्रक भीतरी जगतकेँ सीधे खोलैत अछि।
- ६४५. (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसेँ विखण्डित संरचना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। विखण्डन आधुनिक जीवनक बिखरावक अनुरूप शिल्प अछि।
- ६४६. (B) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन** — परीक्षा-दृष्टिसेँ व्यंग्यात्मक भाषा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। व्यंग्य राजकमलक सामाजिक आलोचनाकेँ धार दैत अछि।
- ६४७. (D) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द** — परीक्षा-दृष्टिसेँ लोक-शब्द केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। लोक-शब्द कथा केँ क्षेत्रीयता आ जीवंतता दैत अछि।
- ६४८. (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा** — परीक्षा-दृष्टिसेँ शहरी शब्द-संकेत केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। शहरक शब्द कथा मे आधुनिक वातावरण रचैत अछि।
- ६४९. (A) कथनक बीच रुकी गेल बात** — परीक्षा-दृष्टिसेँ मौन-विराम केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। मौन कहानीमे अनकहल पीड़ा आ तनाव भरि दैत अछि।
- ६५०. (B) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी** — परीक्षा-दृष्टिसेँ कटाक्ष केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कटाक्ष पाठककेँ हँसी आ असुविधा दुनू देइत अछि।
- ६५१. (C) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसेँ देखायब** — परीक्षा-दृष्टिसेँ वस्तु-चित्रण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा मे वस्तु पात्रक जीवन-स्थिति आ समाजक अर्थ खोलि सकैत अछि।
- ६५२. (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब** — परीक्षा-दृष्टिसेँ रूपक केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। रूपक कथा केँ व्याख्यात्मक विस्तार दैत अछि।
- ६५३. (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली** — परीक्षा-दृष्टिसेँ सम्बोधन केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। सम्बोधन पाठक वा पात्र बीच निकटता आ तनाव बनबैत अछि।

- ६५४. (D) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब** — परीक्षा-दृष्टिसे संवाद के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। संवादमे वर्ग, मनःस्थिति आ सम्बन्धक सच झलकैत अछि।
- ६५५. (B) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ** — परीक्षा-दृष्टिसे उपपाठ के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा पढ़बा लेल उपपाठ पकड़ब आवश्यक अछि।
- ६५६. (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव** — परीक्षा-दृष्टिसे बिम्ब-विरोध के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि विरोधसे कथा मे तीखा सौन्दर्य आ बेचैनी आबैत अछि।
- ६५७. (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि** — परीक्षा-दृष्टिसे कथावाचक के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथावाचकक दूरी वा निकटता कथाक प्रभाव बदलैत अछि।
- ६५८. (C) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही** — परीक्षा-दृष्टिसे समय-प्रयोग के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। समयक लचक कथा के मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
- ६५९. (A) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब** — परीक्षा-दृष्टिसे अन्तक झटका के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। झटका पाठकक सुविधा तोड़ि कथा के यादगार बनबैत अछि।
- ६६०. (C) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता** — परीक्षा-दृष्टिसे शिल्प-चेतना के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक महत्त्व केवल विषय नहि, कथनक ढंगमे सेहो अछि।
- ६६१. (A) कम शब्दमे तीखा प्रभाव** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा-भाषा बेर-बेर संक्षिप्त, कटु आ मारक बनि जाइत अछि।
- ६६२. (D) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कवि-स्वभाव हुनक कथा-गद्यके बिम्ब-समृद्ध बनबैत अछि।
- ६६३. (C) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। प्रतीक कथाक अर्थ-क्षेत्र बढ़बैत अछि।
- ६६४. (D) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई शिल्प पात्रक भीतरी जगतके सीधे खोलैत अछि।
- ६६५. (C) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। विखण्डन आधुनिक जीवनक बिखरावक अनुरूप शिल्प अछि।
- ६६६. (C) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। व्यंग्य राजकमलक सामाजिक आलोचनाके धार दैत अछि।
- ६६७. (A) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। लोक-शब्द कथा के क्षेत्रीयता आ जीवंतता दैत अछि।
- ६६८. (D) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। शहरक शब्द कथा मे आधुनिक वातावरण रचैत अछि।
- ६६९. (B) कथनक बीच रुकी गेल बात** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। मौन कहानीमे अनकहल पीड़ा आ तनाव भरि दैत अछि।
- ६७०. (A) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कटाक्ष पाठकके हँसी आ असुविधा दुनू देइत अछि।
- ६७१. (C) सामान्य वस्तुके अर्थपूर्ण ढंगसे देखायब** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा मे वस्तु पात्रक जीवन-स्थिति आ समाजक अर्थ खोलि सकैत अछि।
- ६७२. (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। रूपक कथा के व्याख्यात्मक विस्तार दैत अछि।
- ६७३. (C) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। सम्बोधन पाठक वा पात्र बीच निकटता आ तनाव बनबैत अछि।
- ६७४. (B) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब** — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। संवादमे वर्ग, मनःस्थिति आ सम्बन्धक सच झलकैत अछि।

- ६७५. (C) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा पढ़बा लेल उपपाठ पकड़ब आवश्यक अछि।
- ६७६. (A) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि विरोधसँ कथा मे तीखा सौन्दर्य आ बेचैनी आबैत अछि।
- ६७७. (A) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथावाचकक दूरी वा निकटता कथाक प्रभाव बदलैत अछि।
- ६७८. (B) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। समयक लचक कथा केँ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
- ६७९. (D) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। झटका पाठकक सुविधा तोड़ि कथा केँ यादगार बनबैत अछि।
- ६८०. (C) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक महत्त्व केवल विषय नहि, कथनक ढंगमे सेहो अछि।
- ६८१. (B) कम शब्दमे तीखा प्रभाव** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा-भाषा बेर-बेर संक्षिप्त, कटु आ मारक बनि जाइत अछि।
- ६८२. (B) गद्य मे चित्रात्मक आ भाव-सघन छवि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कवि-स्वभाव हुनक कथा-गद्यकेँ बिम्ब-समृद्ध बनबैत अछि।
- ६८३. (B) ठोस वस्तु द्वारा गहिर अमूर्त अर्थ** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। प्रतीक कथाक अर्थ-क्षेत्र बढ़बैत अछि।
- ६८४. (B) पात्रक मनमे चलैत स्वगत कथन** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई शिल्प पात्रक भीतरी जगतकेँ सीधे खोलैत अछि।
- ६८५. (D) कथा सीधा क्रम छोड़ि टुकड़ा-टुकड़ा अनुभव बनबैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। विखण्डन आधुनिक जीवनक बिखरावक अनुरूप शिल्प अछि।
- ६८६. (D) हँसैत-हँसैत तीख चोट करयवला कथन** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। व्यंग्य राजकमलक सामाजिक आलोचनाकेँ धार दैत अछि।
- ६८७. (C) मिथिला-समाजक बोलीक जीवित शब्द** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। लोक-शब्द कथा केँ क्षेत्रीयता आ जीवंतता दैत अछि।
- ६८८. (C) नव जीवन, दफ्तर, बाजार, उपभोग आ व्यवस्था-संबंधी भाषा** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। शहरक शब्द कथा मे आधुनिक वातावरण रचैत अछि।
- ६८९. (D) कथनक बीच रुकी गेल बात** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। मौन कहानीमे अनकहल पीड़ा आ तनाव भरि दैत अछि।
- ६९०. (A) नरम शब्दमे कठोर सामाजिक टिप्पणी** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कटाक्ष पाठककेँ हँसी आ असुविधा दुनू देइत अछि।
- ६९१. (B) सामान्य वस्तुकेँ अर्थपूर्ण ढंगसँ देखायब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा मे वस्तु पात्रक जीवन-स्थिति आ समाजक अर्थ खोलि सकैत अछि।
- ६९२. (A) एक वस्तु द्वारा दोसर गहिर अर्थ बुझायब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। रूपक कथा केँ व्याख्यात्मक विस्तार दैत अछि।
- ६९३. (A) कथा-भाषामे सीधे आवाज देबाक शैली** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। सम्बोधन पाठक वा पात्र बीच निकटता आ तनाव बनबैत अछि।
- ६९४. (D) पात्र-स्वर द्वारा कथा आगे बढ़ब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। संवादमे वर्ग, मनःस्थिति आ सम्बन्धक सच झलकैत अछि।
- ६९५. (D) उपरि कथनक नीचा छिपल अर्थ** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा पढ़बा लेल उपपाठ पकड़ब आवश्यक अछि।

६९६. (C) सुन्दर छवि संग कुरूप यथार्थक टकराव — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि विरोधसँ कथा मे तीखा सौन्दर्य आ बेचैनी आबैत अछि।
६९७. (D) कहानी कहनिहार स्वरक दृष्टि — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथावाचकक दूरी वा निकटता कथाक प्रभाव बदलैत अछि।
६९८. (D) वर्तमान, स्मृति आ अनुमानक आवाजाही — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। समयक लचक कथा कें मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
६९९. (D) अंतिम क्षणमे अर्थ बदलि जाएब — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। झटका पाठकक सुविधा तोड़ि कथा कें यादगार बनबैत अछि।
७००. (D) कथा कोना कहल गेल अछि, ताहि पर सजगता — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक महत्त्व केवल विषय नहि, कथनक ढंगमे सेहो अछि।
७०१. (B) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब — राजकमलक कथा स्थापित मूल्यक परीक्षा लैत अछि।
७०२. (A) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ — ई पाखण्ड हुनक कथा-व्यंग्यक प्रमुख लक्ष्य अछि।
७०३. (D) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण — कथा धर्माडम्बरक आड़मे छिपल सत्ता वा स्वार्थ पर प्रश्न उठा सकैत अछि।
७०४. (C) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम — दोहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक केन्द्रीय बिन्दु बनैत अछि।
७०५. (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार — राजकमल समाजक असुविधाजनक ढाँचा कें कथा मे खींचि अनैत छथि।
७०६. (D) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय — वर्गीय दृष्टि कथा कें व्यापक सामाजिक अर्थ दैत अछि।
७०७. (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा — एहि आलोचनासँ कथा मानवीय स्वतंत्रताक प्रश्न उठबैत अछि।
७०८. (A) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता — कथा रूढ़िक भीतर छिपल हिंसा देखबैत अछि।
७०९. (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल — आधुनिकता पर ई आलोचना राजकमलक कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि।
७१०. (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण — बाजारवाद कथा मे प्रेम, देह आ श्रम सब पर असर करैत अछि।
७११. (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि — राजकमलक कथा समाजक संग व्यक्ति कें सेहो प्रश्नांकित करैत अछि।
७१२. (B) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन — हुनक भाषा बहुत बेर पाठकक आराम तोड़ि दैत अछि।
७१३. (A) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा — करुण व्यंग्य पाठककें मात्र मनोरंजन नहि, आत्मचिन्तन दैत अछि।
७१४. (D) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल — कथा सत्ता कें निजी जीवनक भीतर खोजैत अछि।
७१५. (C) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह — छद्म आदर्श पर चोट राजकमलक आलोचनात्मक स्वर बनैत अछि।
७१६. (C) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि — अन्याय-बोध पाठकक नैतिक सजगता जगबैत अछि।
७१७. (C) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब — राजकमलक कथा पाठककें प्रश्न करय लेल बाध्य करैत अछि।
७१८. (D) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि — साहित्यक साहस एहि सत्यक सामना करबामे अछि।
७१९. (B) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन — राजकमलक विद्रोह मानव-संवेदनासँ खाली नहि अछि।
७२०. (A) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न — राजकमल आधुनिकता कें अंध समर्थन नहि, जाँच-पड़ताल करैत छथि।
७२१. (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब — ‘मूल्य-भंजन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा स्थापित मूल्यक परीक्षा लैत अछि।
७२२. (C) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ — ‘सामाजिक पाखण्ड’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई पाखण्ड हुनक कथा-व्यंग्यक प्रमुख लक्ष्य अछि।
७२३. (D) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण — ‘धर्माडम्बर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा धर्माडम्बरक आड़मे छिपल सत्ता वा स्वार्थ पर प्रश्न उठा सकैत अछि।
७२४. (B) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम — ‘नैतिक दोहरापन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे दोहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक केन्द्रीय बिन्दु बनैत अछि।

- ७२५. (A) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार** — ‘व्यवस्था-विरोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल समाजक असुविधाजनक ढाँचा केँ कथा मे खींचि अनैत छथि।
- ७२६. (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय** — ‘वर्ग-आलोचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे वर्गीय दृष्टि कथा केँ व्यापक सामाजिक अर्थ दैत अछि।
- ७२७. (A) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा** — ‘देह-नियंत्रणक आलोचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि आलोचनासँ कथा मानवीय स्वतंत्रताक प्रश्न उठबैत अछि।
- ७२८. (D) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता** — ‘सांस्कृतिक रूढ़ि’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा रूढ़िक भीतर छिपल हिंसा देखबैत अछि।
- ७२९. (B) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल** — ‘नागरिक विडम्बना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आधुनिकता पर ई आलोचना राजकमलक कथा-दृष्टिमे महत्वपूर्ण अछि।
- ७३०. (C) मानवीय संबंधक वस्तुकरण** — ‘बाजारवाद’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे बाजारवाद कथा मे प्रेम, देह आ श्रम सब पर असर करैत अछि।
- ७३१. (B) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि** — ‘आत्म-आलोचना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा समाजक संग व्यक्ति केँ सेहो प्रश्नांकित करैत अछि।
- ७३२. (A) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन** — ‘विद्रोही भाषा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हुनक भाषा बहुत बेर पाठकक आराम तोड़ि दैत अछि।
- ७३३. (D) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा** — ‘करुण व्यंग्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे करुण व्यंग्य पाठककेँ मात्र मनोरंजन नहि, आत्मचिन्तन दैत अछि।
- ७३४. (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल** — ‘सत्ता-व्यवस्था’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा सत्ता केँ निजी जीवनक भीतर खोजैत अछि।
- ७३५. (D) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह** — ‘छद्म आदर्श’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे छद्म आदर्श पर चोट राजकमलक आलोचनात्मक स्वर बनैत अछि।
- ७३६. (B) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि** — ‘अन्याय-बोध’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अन्याय-बोध पाठकक नैतिक सजगता जगबैत अछि।
- ७३७. (B) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब** — ‘सवाल करब’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा पाठककेँ प्रश्न करय लेल बाध्य करैत अछि।
- ७३८. (A) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि** — ‘असुविधाजनक सत्य’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे साहित्यक साहस एहि सत्यक सामना करबामे अछि।
- ७३९. (D) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन** — ‘रचनात्मक असहमति’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक विद्रोह मानव-संवेदनासँ खाली नहि अछि।
- ७४०. (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न** — ‘आलोचनात्मक आधुनिकता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल आधुनिकता केँ अंध समर्थन नहि, जाँचि-पड़ताल करैत छथि।
- ७४१. (D) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब** — परीक्षा-दृष्टिसँ मूल्य-भंजन केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा स्थापित मूल्यक परीक्षा लैत अछि।
- ७४२. (A) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ** — परीक्षा-दृष्टिसँ सामाजिक पाखण्ड केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई पाखण्ड हुनक कथा-व्यंग्यक प्रमुख लक्ष्य अछि।
- ७४३. (B) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण** — परीक्षा-दृष्टिसँ धर्माडम्बर केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा धर्माडम्बरक आड़मे छिपल सत्ता वा स्वार्थ पर प्रश्न उठा सकैत अछि।
- ७४४. (B) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम** — परीक्षा-दृष्टिसँ नैतिक दोहरापन केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। दोहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक केन्द्रीय बिन्दु बनैत अछि।
- ७४५. (A) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार** — परीक्षा-दृष्टिसँ व्यवस्था-विरोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल समाजक असुविधाजनक ढाँचा केँ कथा मे खींचि अनैत छथि।

- ७४६. (B) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय** — परीक्षा-दृष्टिसँ वर्ग-आलोचना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। वर्गीय दृष्टि कथा केँ व्यापक सामाजिक अर्थ दैत अछि।
- ७४७. (B) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा** — परीक्षा-दृष्टिसँ देह-नियंत्रणक आलोचना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि आलोचनासँ कथा मानवीय स्वतंत्रताक प्रश्न उठबैत अछि।
- ७४८. (B) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता** — परीक्षा-दृष्टिसँ सांस्कृतिक रूढ़ि केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा रूढ़िक भीतर छिपल हिंसा देखबैत अछि।
- ७४९. (D) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल** — परीक्षा-दृष्टिसँ नागरिक विडम्बना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आधुनिकता पर ई आलोचना राजकमलक कथा-दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि।
- ७५०. (A) मानवीय संबंधक वस्तुकरण** — परीक्षा-दृष्टिसँ बाजारवाद केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। बाजारवाद कथा मे प्रेम, देह आ श्रम सब पर असर करैत अछि।
- ७५१. (D) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ आत्म-आलोचना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा समाजक संग व्यक्ति केँ सेहो प्रश्नांकित करैत अछि।
- ७५२. (A) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन** — परीक्षा-दृष्टिसँ विद्रोही भाषा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हुनक भाषा बहुत बेर पाठकक आराम तोड़ि दैत अछि।
- ७५३. (C) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा** — परीक्षा-दृष्टिसँ करुण व्यंग्य केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। करुण व्यंग्य पाठककेँ मात्र मनोरंजन नहि, आत्मचिन्तन दैत अछि।
- ७५४. (A) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल** — परीक्षा-दृष्टिसँ सत्ता-व्यवस्था केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा सत्ता केँ निजी जीवनक भीतर खोजैत अछि।
- ७५५. (C) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह** — परीक्षा-दृष्टिसँ छद्म आदर्श केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। छद्म आदर्श पर चोट राजकमलक आलोचनात्मक स्वर बनैत अछि।
- ७५६. (D) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ अन्याय-बोध केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अन्याय-बोध पाठकक नैतिक सजगता जगबैत अछि।
- ७५७. (B) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब** — परीक्षा-दृष्टिसँ सवाल करब केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा पाठककेँ प्रश्न करय लेल बाध्य करैत अछि।
- ७५८. (A) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ असुविधाजनक सत्य केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। साहित्यक साहस एहि सत्यक सामना करबामे अछि।
- ७५९. (B) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन** — परीक्षा-दृष्टिसँ रचनात्मक असहमति केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक विद्रोह मानव-संवेदनासँ खाली नहि अछि।
- ७६०. (D) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न** — परीक्षा-दृष्टिसँ आलोचनात्मक आधुनिकता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल आधुनिकता केँ अंध समर्थन नहि, जाँचि-पड़ताल करैत छथि।
- ७६१. (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा स्थापित मूल्यक परीक्षा लैत अछि।
- ७६२. (A) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई पाखण्ड हुनक कथा-व्यंग्यक प्रमुख लक्ष्य अछि।
- ७६३. (B) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा धर्माडम्बरक आड़मे छिपल सत्ता वा स्वार्थ पर प्रश्न उठा सकैत अछि।
- ७६४. (A) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। दोहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक केन्द्रीय बिन्दु बनैत अछि।
- ७६५. (B) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल समाजक असुविधाजनक ढाँचा केँ कथा मे खींचि अनैत छथि।

- ७६६. (A) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। वर्गीय दृष्टि कथा केँ व्यापक सामाजिक अर्थ दैत अछि।
- ७६७. (B) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि आलोचनासँ कथा मानवीय स्वतंत्रताक प्रश्न उठबैत अछि।
- ७६८. (C) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा रूढ़िक भीतर छिपल हिंसा देखबैत अछि।
- ७६९. (A) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आधुनिकता पर ई आलोचना राजकमलक कथा-दृष्टिमे महत्वपूर्ण अछि।
- ७७०. (A) मानवीय संबंधक वस्तुकरण** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। बाजारवाद कथा मे प्रेम, देह आ श्रम सब पर असर करैत अछि।
- ७७१. (A) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराइत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा समाजक संग व्यक्ति केँ सेहो प्रश्नांकित करैत अछि।
- ७७२. (D) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हुनक भाषा बहुत बेर पाठकक आराम तोड़ि दैत अछि।
- ७७३. (B) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। करुण व्यंग्य पाठककेँ मात्र मनोरंजन नहि, आत्मचिन्तन दैत अछि।
- ७७४. (C) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा सत्ता केँ निजी जीवनक भीतर खोजैत अछि।
- ७७५. (B) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। छद्म आदर्श पर चोट राजकमलक आलोचनात्मक स्वर बनैत अछि।
- ७७६. (D) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अन्याय-बोध पाठकक नैतिक सजगता जगबैत अछि।
- ७७७. (A) तैयार मान्यताकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा पाठककेँ प्रश्न करय लेल बाध्य करैत अछि।
- ७७८. (B) जे बात कहब समाजकेँ कठिन लगैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। साहित्यक साहस एहि सत्यक सामना करबामे अछि।
- ७७९. (C) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक विद्रोह मानव-संवेदनासँ खाली नहि अछि।
- ७८०. (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल आधुनिकता केँ अंध समर्थन नहि, जाँचि-पड़ताल करैत छथि।
- ७८१. (A) झूठ नैतिकता आ पुरान खोखल नियमक टूटब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा स्थापित मूल्यक परीक्षा लैत अछि।
- ७८२. (C) बोलीमे आदर्श, कर्ममे स्वार्थ** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई पाखण्ड हुनक कथा-व्यंग्यक प्रमुख लक्ष्य अछि।
- ७८३. (B) धर्मक नाम पर दिखावा वा नियंत्रण** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा धर्माडम्बरक आड़मे छिपल सत्ता वा स्वार्थ पर प्रश्न उठा सकैत अछि।
- ७८४. (A) पुरुष आ स्त्री, गरीब आ अमीर लेल अलग नियम** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। दोहरापन आधुनिक कथा-आलोचनाक केन्द्रीय बिन्दु बनैत अछि।
- ७८५. (D) भ्रष्ट, असमान वा अमानवीय व्यवस्था पर प्रहार** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल समाजक असुविधाजनक ढाँचा केँ कथा मे खींचि अनैत छथि।

- ७८६. (D) धन आ शक्तिक आधार पर बनल अन्याय** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। वर्गीय दृष्टि कथा कें व्यापक सामाजिक अर्थ दैत अछि।
- ७८७. (C) समाज द्वारा इच्छा आ देह पर पहरा** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि आलोचनासँ कथा मानवीय स्वतंत्रताक प्रश्न उठबैत अछि।
- ७८८. (D) रीत बनि गेल अन्याय वा असमानता** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा रूढ़िक भीतर छिपल हिंसा देखबैत अछि।
- ७८९. (B) सभ्यता बढ़ल, मुदा मनुष्य बेसी अकेला भेल** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आधुनिकता पर ई आलोचना राजकमलक कथा-दृष्टिमे महत्वपूर्ण अछि।
- ७९०. (D) मानवीय संबंधक वस्तुकरण** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। बाजारवाद कथा मे प्रेम, देह आ श्रम सब पर असर करैत अछि।
- ७९१. (B) पात्र अपन कमजोरीसँ टकराईत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा समाजक संग व्यक्ति कें सेहो प्रश्नांकित करैत अछि।
- ७९२. (B) सुविधाजनक मिठास छोड़ि कड़ुआ सत्यक कथन** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हुनक भाषा बहुत बेर पाठकक आराम तोड़ि दैत अछि।
- ७९३. (D) हँसीक भीतर मनुष्यक पीड़ा** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। करुण व्यंग्य पाठककें मात्र मनोरंजन नहि, आत्मचिन्तन दैत अछि।
- ७९४. (D) कानून, धन, जाति वा लिंगसँ बनल अधिकार-जाल** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा सत्ता कें निजी जीवनक भीतर खोजैत अछि।
- ७९५. (A) ऊपर सँ उच्च विचार, भीतर सँ लाभक चाह** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। छद्म आदर्श पर चोट राजकमलक आलोचनात्मक स्वर बनैत अछि।
- ७९६. (B) कथा मे पात्रक पीड़ा व्यापक सामाजिक अन्यायसँ जुड़ैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अन्याय-बोध पाठकक नैतिक सजगता जगबैत अछि।
- ७९७. (A) तैयार मान्यताकें बिना जाँच स्वीकार नहि करब** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा पाठककें प्रश्न करय लेल बाध्य करैत अछि।
- ७९८. (A) जे बात कहब समाजकें कठिन लगैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। साहित्यक साहस एहि सत्यक सामना करबामे अछि।
- ७९९. (C) समाजसँ झगड़ा करैत, मुदा मनुष्यक पक्ष लैत लेखन** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक विद्रोह मानव-संवेदनासँ खाली नहि अछि।
- ८००. (C) नूतन समय स्वीकार, मुदा ओकर दोष पर प्रश्न** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल आधुनिकता कें अंध समर्थन नहि, जाँचि-पड़ताल करैत छथि।
- ८०१. (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा** — परीक्षा मे केवल जीवनी नहि, कथ्य-शिल्प आ कथा-सीमा लिखब आवश्यक अछि।
- ८०२. (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत** — छोट लेखक-सन्दर्भ उत्तरक भूमिका मजबूत करैत अछि।
- ८०३. (D) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु** — एहि सूत्रसभसँ पहिल दस कथाक सामूहिक पाठ सम्भव अछि।
- ८०४. (B) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब** — शिल्पक चर्चा उत्तरकें साधारण सारांशसँ ऊपर उठबैत अछि।
- ८०५. (C) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब** — राजकमल पात्रकें सपाट नायक-खलनायकमे नहि बाँधल जा सकैत।
- ८०६. (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान** — ई दृष्टि राजकमलक कथाकें समकालीन आलोचनासँ जोड़ैत अछि।
- ८०७. (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका** — समाजशास्त्रीय पाठ कथा कें व्यापक संदर्भ दैत अछि।
- ८०८. (D) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल** — एहि पाठ सँ राजकमलक आन्तरिक कथा-दृष्टि स्पष्ट होइत अछि।
- ८०९. (A) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा** — राजकमलक कथा नव संवेदनाक उग्र आ प्रयोगशील रूप देखबैत अछि।

८१०. (A) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द — भाषा-विश्लेषण उत्तरमे मौलिकता आनैत अछि।
८११. (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण — प्रश्नोत्तरमे केवल कथा कहि देब पर्याप्त नहि।
८१२. (D) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब — शीर्षक बहुत बेर कथाक व्याख्याक कुंजी होइत अछि।
८१३. (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपदाक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर — तुलना करैत काल हर लेखकक अलग कथाभूमि स्पष्ट करबाक चाही।
८१४. (C) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब — संतुलित उत्तर अंध प्रशंसा वा पूर्ण अस्वीकारसँ अलग होइत अछि।
८१५. (C) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब — गलत उद्धरणसँ नीक अछि साफ व्याख्या देब।
८१६. (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प — एहि सूत्रसँ परीक्षा तैयारी व्यवस्थित होइत अछि।
८१७. (C) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम — दीर्घ उत्तरमे संरचना स्पष्ट रहबाक चाही।
८१८. (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य — लघु उत्तरमे अनावश्यक विस्तारसँ बचब।
८१९. (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति — वस्तुनिष्ठ प्रश्न लेल आधारभूत तथ्य अलग सँ याद रखब उपयोगी अछि।
८२०. (C) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़ — समग्र दृष्टिसँ कृति कथा-विधाक नूतन संवेदना देखबैत अछि।
८२१. (D) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा — ‘कृति-केन्द्रित उत्तर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे परीक्षा मे केवल जीवनी नहि, कथ्य-शिल्प आ कथा-सीमा लिखब आवश्यक अछि।
८२२. (A) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत — ‘लेखक-सन्दर्भ’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे छोट लेखक-सन्दर्भ उत्तरक भूमिका मजबूत करैत अछि।
८२३. (D) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु — ‘कथ्य-सूत्र’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि सूत्रसभसँ पहिल दस कथाक सामूहिक पाठ सम्भव अछि।
८२४. (A) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब — ‘शिल्प-सूत्र’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे शिल्पक चर्चा उत्तरकें साधारण सारांशसँ ऊपर उठबैत अछि।
८२५. (A) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब — ‘पात्र-विश्लेषण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल पात्रकें सपाट नायक-खलनायकमे नहि बाँधल जा सकैत।
८२६. (A) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान — ‘स्त्री-दृष्टि’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई दृष्टि राजकमलक कथाकें समकालीन आलोचनासँ जोड़ैत अछि।
८२७. (B) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका — ‘समाजशास्त्रीय पाठ’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे समाजशास्त्रीय पाठ कथा कें व्यापक संदर्भ दैत अछि।
८२८. (C) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल — ‘मनोवैज्ञानिक पाठ’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि पाठ सँ राजकमलक आन्तरिक कथा-दृष्टि स्पष्ट होइत अछि।
८२९. (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा — ‘नवकथा-संवेदना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा नव संवेदनाक उग्र आ प्रयोगशील रूप देखबैत अछि।
८३०. (B) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द — ‘भाषिक विश्लेषण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे भाषा-विश्लेषण उत्तरमे मौलिकता आनैत अछि।
८३१. (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण — ‘सारांश सँ बचब’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे प्रश्नोत्तरमे केवल कथा कहि देब पर्याप्त नहि।
८३२. (A) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब — ‘शीर्षक-विश्लेषण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे शीर्षक बहुत बेर कथाक व्याख्याक कुंजी होइत अछि।
८३३. (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपदाक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर — ‘तुलना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे तुलना करैत काल हर लेखकक अलग कथाभूमि स्पष्ट करबाक चाही।
८३४. (C) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब — ‘आलोचनात्मक निष्कर्ष’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे संतुलित उत्तर अंध प्रशंसा वा पूर्ण अस्वीकारसँ अलग होइत अछि।
८३५. (A) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब — ‘उद्धरण-सावधानी’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे गलत उद्धरणसँ नीक अछि साफ व्याख्या देब।

८३६. (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प — ‘स्मरण-योजना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि सूत्रसँ परीक्षा तैयारी व्यवस्थित होइत अछि।
८३७. (B) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम — ‘दीर्घ उत्तर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे दीर्घ उत्तरमे संरचना स्पष्ट रहबाक चाही।
८३८. (C) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य — ‘लघु उत्तर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे लघु उत्तरमे अनावश्यक विस्तारसँ बचब।
८३९. (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति — ‘वस्तुनिष्ठ तैयारी’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे वस्तुनिष्ठ प्रश्न लेल आधारभूत तथ्य अलग सँ याद रखब उपयोगी अछि।
८४०. (B) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़ — ‘समग्र मूल्यांकन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे समग्र दृष्टिसँ कृति कथा-विधाक नूतन संवेदना देखबैत अछि।
८४१. (B) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा — परीक्षा-दृष्टिसँ कृति-केन्द्रित उत्तर केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। परीक्षा मे केवल जीवनी नहि, कथ्य-शिल्प आ कथा-सीमा लिखब आवश्यक अछि।
८४२. (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत — परीक्षा-दृष्टिसँ लेखक-सन्दर्भ केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। छोट लेखक-सन्दर्भ उत्तरक भूमिका मजबूत करैत अछि।
८४३. (B) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु — परीक्षा-दृष्टिसँ कथ्य-सूत्र केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि सूत्रसभसँ पहिल दस कथाक सामूहिक पाठ सम्भव अछि।
८४४. (D) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब — परीक्षा-दृष्टिसँ शिल्प-सूत्र केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। शिल्पक चर्चा उत्तरकेँ साधारण सारांशसँ ऊपर उठबैत अछि।
८४५. (C) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब — परीक्षा-दृष्टिसँ पात्र-विश्लेषण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल पात्रकेँ सपाट नायक-खलनायकमे नहि बाँधल जा सकैत।
८४६. (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान — परीक्षा-दृष्टिसँ स्त्री-दृष्टि केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई दृष्टि राजकमलक कथाकेँ समकालीन आलोचनासँ जोड़ैत अछि।
८४७. (B) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका — परीक्षा-दृष्टिसँ समाजशास्त्रीय पाठ केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। समाजशास्त्रीय पाठ कथा केँ व्यापक संदर्भ दैत अछि।
८४८. (B) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल — परीक्षा-दृष्टिसँ मनोवैज्ञानिक पाठ केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि पाठ सँ राजकमलक आन्तरिक कथा-दृष्टि स्पष्ट होइत अछि।
८४९. (D) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा — परीक्षा-दृष्टिसँ नवकथा-संवेदना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा नव संवेदनाक उग्र आ प्रयोगशील रूप देखबैत अछि।
८५०. (A) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द — परीक्षा-दृष्टिसँ भाषिक विश्लेषण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। भाषा-विश्लेषण उत्तरमे मौलिकता आनैत अछि।
८५१. (C) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण — परीक्षा-दृष्टिसँ सारांश सँ बचब केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। प्रश्नोत्तरमे केवल कथा कहि देब पर्याप्त नहि।
८५२. (B) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब — परीक्षा-दृष्टिसँ शीर्षक-विश्लेषण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। शीर्षक बहुत बेर कथाक व्याख्याक कुंजी होइत अछि।
८५३. (D) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर — परीक्षा-दृष्टिसँ तुलना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। तुलना करैत काल हर लेखकक अलग कथाभूमि स्पष्ट करबाक चाही।
८५४. (B) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब — परीक्षा-दृष्टिसँ आलोचनात्मक निष्कर्ष केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। संतुलित उत्तर अंध प्रशंसा वा पूर्ण अस्वीकारसँ अलग होइत अछि।
८५५. (B) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब — परीक्षा-दृष्टिसँ उद्धरण-सावधानी केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। गलत उद्धरणसँ नीक अछि साफ व्याख्या देब।
८५६. (C) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प — परीक्षा-दृष्टिसँ स्मरण-योजना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि सूत्रसँ परीक्षा तैयारी व्यवस्थित होइत अछि।

८५७. (D) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम — परीक्षा-दृष्टिसे दीर्घ उत्तर के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। दीर्घ उत्तरमे संरचना स्पष्ट रहबाक चाही।
८५८. (D) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य — परीक्षा-दृष्टिसे लघु उत्तर के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। लघु उत्तरमे अनावश्यक विस्तारसे बचब।
८५९. (C) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति — परीक्षा-दृष्टिसे वस्तुनिष्ठ तैयारी के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। वस्तुनिष्ठ प्रश्न लेल आधारभूत तथ्य अलग से याद रखब उपयोगी अछि।
८६०. (B) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़ — परीक्षा-दृष्टिसे समग्र मूल्यांकन के सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। समग्र दृष्टिसे कृति कथा-विधाक नूतन संवेदना देखबैत अछि।
८६१. (D) सामान्य लेखक-जीवनसे आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। परीक्षा मे केवल जीवनी नहि, कथ्य-शिल्प आ कथा-सीमा लिखब आवश्यक अछि।
८६२. (A) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। छोट लेखक-सन्दर्भ उत्तरक भूमिका मजबूत करैत अछि।
८६३. (A) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि सूत्रसभसे पहिल दस कथाक सामूहिक पाठ सम्भव अछि।
८६४. (B) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। शिल्पक चर्चा उत्तरकेँ साधारण सारांशसे ऊपर उठबैत अछि।
८६५. (A) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल पात्रकेँ सपाट नायक-खलनायकमे नहि बाँधल जा सकैत।
८६६. (C) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई दृष्टि राजकमलक कथाकेँ समकालीन आलोचनासे जोड़ैत अछि।
८६७. (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। समाजशास्त्रीय पाठ कथा केँ व्यापक संदर्भ दैत अछि।
८६८. (B) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि पाठ सेँ राजकमलक आन्तरिक कथा-दृष्टि स्पष्ट होइत अछि।
८६९. (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा नव संवेदनाक उग्र आ प्रयोगशील रूप देखबैत अछि।
८७०. (C) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। भाषा-विश्लेषण उत्तरमे मौलिकता आनैत अछि।
८७१. (A) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। प्रश्नोत्तरमे केवल कथा कहि देब पर्याप्त नहि।
८७२. (B) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। शीर्षक बहुत बेर कथाक व्याख्याक कुंजी होइत अछि।
८७३. (B) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सेँ भिन्न आधुनिक स्वर — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। तुलना करैत काल हर लेखकक अलग कथाभूमि स्पष्ट करबाक चाही।
८७४. (D) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। संतुलित उत्तर अंध प्रशंसा वा पूर्ण अस्वीकारसे अलग होइत अछि।
८७५. (A) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। गलत उद्धरणसेँ नीक अछि साफ व्याख्या देब।
८७६. (A) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प — एहि संकेतसे आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि सूत्रसे परीक्षा तैयारी व्यवस्थित होइत अछि।

८७७. (B) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। दीर्घ उत्तरमे संरचना स्पष्ट रहबाक चाही।
८७८. (A) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। लघु उत्तरमे अनावश्यक विस्तारसँ बचब।
८७९. (A) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। वस्तुनिष्ठ प्रश्न लेल आधारभूत तथ्य अलग सँ याद रखब उपयोगी अछि।
८८०. (C) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़ — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। समग्र दृष्टिसँ कृति कथा-विधाक नूतन संवेदना देखबैत अछि।
८८१. (A) सामान्य लेखक-जीवनसँ आगे बढ़ि निर्धारित कथापर चर्चा — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। परीक्षा मे केवल जीवनी नहि, कथ्य-शिल्प आ कथा-सीमा लिखब आवश्यक अछि।
८८२. (C) राजकमलक जीवन, भाषा-द्वैध आ आधुनिक स्वभावक संकेत — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। छोट लेखक-सन्दर्भ उत्तरक भूमिका मजबूत करैत अछि।
८८३. (A) अकेलापन, देह, वर्ग, विडम्बना, विद्रोह जेकाँ बिंदु — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि सूत्रसभसँ पहिल दस कथाक सामूहिक पाठ सम्भव अछि।
८८४. (B) मौन, प्रतीक, अन्तःसंवाद, खुला अन्त आ बिम्ब — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। शिल्पक चर्चा उत्तरकेँ साधारण सारांशसँ ऊपर उठबैत अछि।
८८५. (D) पात्रक मन, वर्ग, सम्बन्ध आ द्वन्द्व एक संग देखब — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल पात्रकेँ सपाट नायक-खलनायकमे नहि बाँधल जा सकैत।
८८६. (B) स्त्री-पात्रक अनुभव, दमन आ स्वायत्तता पर ध्यान — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई दृष्टि राजकमलक कथाकेँ समकालीन आलोचनासँ जोड़ैत अछि।
८८७. (D) कथा मे वर्ग, जाति, पितृसत्ता, बाजार आ शहरक भूमिका — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। समाजशास्त्रीय पाठ कथा केँ व्यापक संदर्भ दैत अछि।
८८८. (A) पात्रक ग्लानि, भय, इच्छा, अकेलापन आ आत्म-छल — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि पाठ सँ राजकमलक आन्तरिक कथा-दृष्टि स्पष्ट होइत अछि।
८८९. (C) आधुनिक मनुष्यक खण्डित अनुभव पर केन्द्रित कथा — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा नव संवेदनाक उग्र आ प्रयोगशील रूप देखबैत अछि।
८९०. (A) कथाभाषाक तीक्ष्णता, बिम्ब आ लोक-शब्द — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। भाषा-विश्लेषण उत्तरमे मौलिकता आनैत अछि।
८९१. (D) घटनाक क्रम नहि, अर्थक विवेचन महत्त्वपूर्ण — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। प्रश्नोत्तरमे केवल कथा कहि देब पर्याप्त नहि।
८९२. (B) कथाक शीर्षकमे छिपल प्रतीक वा व्यंग्य खोजब — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। शीर्षक बहुत बेर कथाक व्याख्याक कुंजी होइत अछि।
८९३. (A) हरिमोहन झाक हास्य वा मणिपद्मक लोकगाथा सँ भिन्न आधुनिक स्वर — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। तुलना करैत काल हर लेखकक अलग कथाभूमि स्पष्ट करबाक चाही।
८९४. (C) राजकमलक महत्त्व आ सीमा दुनू लिखब — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। संतुलित उत्तर अंध प्रशंसा वा पूर्ण अस्वीकारसँ अलग होइत अछि।
८९५. (C) ठीक स्मरण हो तखनहि पंक्ति देब — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। गलत उद्धरणसँ नीक अछि साफ व्याख्या देब।
८९६. (B) लेखक, प्रकाशक, कथा-सीमा, पाँच कथ्य, पाँच शिल्प — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि सूत्रसँ परीक्षा तैयारी व्यवस्थित होइत अछि।

८९७. (A) भूमिका, कथ्य, शिल्प, पात्र, निष्कर्षक क्रम — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। दीर्घ उत्तरमे संरचना स्पष्ट रहबाक चाही।
८९८. (B) सटीक तथ्य आ एक-दू व्याख्यात्मक वाक्य — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। लघु उत्तरमे अनावश्यक विस्तारसँ बचब।
८९९. (B) नाम, प्रकाशक, सीमा, विधा, प्रमुख प्रवृत्ति — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। वस्तुनिष्ठ प्रश्न लेल आधारभूत तथ्य अलग सँ याद रखब उपयोगी अछि।
९००. (A) राजकमलक कथा आधुनिक मैथिली गद्यक तीखा मोड़ — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। समग्र दृष्टिसँ कृति कथा-विधाक नूतन संवेदना देखबैत अछि।
९०१. (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत — दूरी पाठककें स्वयं अर्थ बनबयक अवसर दैत अछि।
९०२. (A) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू — राजकमलक पात्र मानवीय जटिलता संग उपस्थित होइत अछि।
९०३. (A) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब — आधुनिक कथा कठोर निर्णायक जगह जटिल स्थिति सामने रखैत अछि।
९०४. (C) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ — छोट घटना समाजक पैघ दरार खोलि सकैत अछि।
९०५. (C) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम — तनाव कथा कें जीवित आ स्मरणीय बनबैत अछि।
९०६. (C) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट — हिंसा केवल शारीरिक नहि, सामाजिक आ मानसिको होइत अछि।
९०७. (C) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि — आर्थिक दबाव कथा मे सम्बन्ध आ नैतिकता बदलि दैत अछि।
९०८. (A) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि — राजकमलक प्रेम-दृष्टि रोमानी सरलतासँ अलग अछि।
९०९. (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि — ई द्वन्द्व कथा कें मार्मिक बनबैत अछि।
९१०. (D) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव — राजकमल एहि टकरावकें आधुनिक कथा-ऊर्जा बनबैत छथि।
९११. (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि — अपूर्णता संवादकें यथार्थ आ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
९१२. (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो — कथा दोषकें केवल निजी कमजोरी नहि मानैत अछि।
९१३. (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना — राजकमलक कठोर यथार्थमे संवेदना पूरा मरैत नहि।
९१४. (B) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम — स्त्री-पात्रक असुरक्षा कथा कें सामाजिक आलोचनाक रूप दैत अछि।
९१५. (C) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि — कथा पुरुषक प्रभुत्वक संग ओकर विकृत आ अकेल पक्ष सेहो देखबैत अछि।
९१६. (D) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि — चुप्पी सेहो सामाजिक अपराधक हिस्सा बनि सकैत अछि।
९१७. (D) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय — स्मृति पात्रक मन आ कथाक अर्थ बदलि दैत अछि।
९१८. (C) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि — राजकमलक कथा निर्णायक क्षणक तीव्रता पकड़ैत अछि।
९१९. (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव — अन्तिम प्रभाव राजकमलक कथाक स्मरणीयता बढ़बैत अछि।
९२०. (B) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ — एहि स्वरकें पकड़लासँ आरम्भिक कथा-समूहक अध्ययन सार्थक होइत अछि।
९२१. (A) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत — ‘कथावाचकक दूरी’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे दूरी पाठककें स्वयं अर्थ बनबयक अवसर दैत अछि।
९२२. (C) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू — ‘अन्तर्विरोधी पात्र’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक पात्र मानवीय जटिलता संग उपस्थित होइत अछि।
९२३. (C) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब — ‘नैतिक अस्पष्टता’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आधुनिक कथा कठोर निर्णायक जगह जटिल स्थिति सामने रखैत अछि।
९२४. (C) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ — ‘दैनन्दिन घटना’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे छोट घटना समाजक पैघ दरार खोलि सकैत अछि।
९२५. (A) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम — ‘कथा-तनाव’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे तनाव कथा कें जीवित आ स्मरणीय बनबैत अछि।
९२६. (C) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट — ‘अदृश्य हिंसा’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे हिंसा केवल शारीरिक नहि, सामाजिक आ मानसिको होइत अछि।

- ९२७. (D) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि** — ‘अर्थ-संकट’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे आर्थिक दबाव कथा मे सम्बन्ध आ नैतिकता बदलि दैत अछि।
- ९२८. (B) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि** — ‘प्रेम-त्रासदी’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक प्रेम-दृष्टि रोमानी सरलतासँ अलग अछि।
- ९२९. (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि** — ‘मुक्ति आ बन्धन’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे ई द्वन्द्व कथा केँ मार्मिक बनबैत अछि।
- ९३०. (A) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव** — ‘व्यक्ति बनाम समाज’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमल एहि टकरावकेँ आधुनिक कथा-ऊर्जा बनबैत छथि।
- ९३१. (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि** — ‘अपूर्ण संवाद’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अपूर्णता संवादकेँ यथार्थ आ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
- ९३२. (B) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो** — ‘दोषी समाज’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा दोषकेँ केवल निजी कमजोरी नहि मानैत अछि।
- ९३३. (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना** — ‘आशा-किरण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कठोर यथार्थमे संवेदना पूरा मरैत नहि।
- ९३४. (D) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम** — ‘असुरक्षित स्त्री’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे स्त्री-पात्रक असुरक्षा कथा केँ सामाजिक आलोचनाक रूप दैत अछि।
- ९३५. (B) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि** — ‘बेचैन पुरुष’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे कथा पुरुषक प्रभुत्वक संग ओकर विकृत आ अकेल पक्ष सेहो देखबैत अछि।
- ९३६. (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि** — ‘निष्क्रिय दर्शक’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे चुप्पी सेहो सामाजिक अपराधक हिस्सा बनि सकैत अछि।
- ९३७. (C) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय** — ‘स्मृति आ वर्तमान’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे स्मृति पात्रक मन आ कथाक अर्थ बदलि दैत अछि।
- ९३८. (C) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि** — ‘निर्णायक क्षण’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे राजकमलक कथा निर्णायक क्षणक तीव्रता पकड़ैत अछि।
- ९३९. (B) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव** — ‘अन्तिम प्रभाव’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे अन्तिम प्रभाव राजकमलक कथाक स्मरणीयता बढ़बैत अछि।
- ९४०. (A) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ** — ‘पहिल दस कथाक समग्र स्वर’क प्रसंगमे मुख्य बात ई अछि जे एहि स्वरकेँ पकड़लासँ आरम्भिक कथा-समूहक अध्ययन सार्थक होइत अछि।
- ९४१. (C) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत** — परीक्षा-दृष्टिसँ कथावाचकक दूरी केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। दूरी पाठककेँ स्वयं अर्थ बनबयक अवसर दैत अछि।
- ९४२. (C) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू** — परीक्षा-दृष्टिसँ अन्तर्विरोधी पात्र केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक पात्र मानवीय जटिलता संग उपस्थित होइत अछि।
- ९४३. (B) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब** — परीक्षा-दृष्टिसँ नैतिक अस्पष्टता केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आधुनिक कथा कठोर निर्णायक जगह जटिल स्थिति सामने रखैत अछि।
- ९४४. (B) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ** — परीक्षा-दृष्टिसँ दैनन्दिन घटना केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। छोट घटना समाजक पैघ दरार खोलि सकैत अछि।
- ९४५. (C) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम** — परीक्षा-दृष्टिसँ कथा-तनाव केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। तनाव कथा केँ जीवित आ स्मरणीय बनबैत अछि।
- ९४६. (B) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट** — परीक्षा-दृष्टिसँ अदृश्य हिंसा केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। हिंसा केवल शारीरिक नहि, सामाजिक आ मानसिको होइत अछि।
- ९४७. (B) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ अर्थ-संकट केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। आर्थिक दबाव कथा मे सम्बन्ध आ नैतिकता बदलि दैत अछि।

- १४८. (D) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ प्रेम-त्रासदी केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक प्रेम-दृष्टि रोमानी सरलतासँ अलग अछि।
- १४९. (A) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ मुक्ति आ बन्धन केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। ई द्वन्द्व कथा केँ मार्मिक बनबैत अछि।
- १५०. (A) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव** — परीक्षा-दृष्टिसँ व्यक्ति बनाम समाज केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमल एहि टकरावकेँ आधुनिक कथा-ऊर्जा बनबैत छथि।
- १५१. (D) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ अपूर्ण संवाद केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अपूर्णता संवादकेँ यथार्थ आ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
- १५२. (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो** — परीक्षा-दृष्टिसँ दोषी समाज केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा दोषकेँ केवल निजी कमजोरी नहि मानैत अछि।
- १५३. (C) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना** — परीक्षा-दृष्टिसँ आशा-किरण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कठोर यथार्थमे संवेदना पूरा मरैत नहि।
- १५४. (C) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम** — परीक्षा-दृष्टिसँ असुरक्षित स्त्री केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। स्त्री-पात्रक असुरक्षा कथा केँ सामाजिक आलोचनाक रूप दैत अछि।
- १५५. (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ बेचैन पुरुष केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। कथा पुरुषक प्रभुत्वक संग ओकर विकृत आ अकेल पक्ष सेहो देखबैत अछि।
- १५६. (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ निष्क्रिय दर्शक केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। चुप्पी सेहो सामाजिक अपराधक हिस्सा बनि सकैत अछि।
- १५७. (A) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय** — परीक्षा-दृष्टिसँ स्मृति आ वर्तमान केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। स्मृति पात्रक मन आ कथाक अर्थ बदलि दैत अछि।
- १५८. (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि** — परीक्षा-दृष्टिसँ निर्णायक क्षण केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। राजकमलक कथा निर्णायक क्षणक तीव्रता पकड़ैत अछि।
- १५९. (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएला बेचैन भाव** — परीक्षा-दृष्टिसँ अन्तिम प्रभाव केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। अन्तिम प्रभाव राजकमलक कथाक स्मरणीयता बढ़बैत अछि।
- १६०. (B) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ** — परीक्षा-दृष्टिसँ पहिल दस कथाक समग्र स्वर केँ सतही तथ्य नहि, कथ्य-सन्दर्भमे बुझब चाही। एहि स्वरकेँ पकड़लासँ आरम्भिक कथा-समूहक अध्ययन सार्थक होइत अछि।
- १६१. (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। दूरी पाठककेँ स्वयं अर्थ बनबयक अवसर दैत अछि।
- १६२. (C) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक पात्र मानवीय जटिलता संग उपस्थित होइत अछि।
- १६३. (B) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आधुनिक कथा कठोर निर्णायक जगह जटिल स्थिति सामने रखैत अछि।
- १६४. (C) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। छोट घटना समाजक पैघ दरार खोलि सकैत अछि।
- १६५. (A) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। तनाव कथा केँ जीवित आ स्मरणीय बनबैत अछि।
- १६६. (A) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। हिंसा केवल शारीरिक नहि, सामाजिक आ मानसिको होइत अछि।
- १६७. (A) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। आर्थिक दबाव कथा मे सम्बन्ध आ नैतिकता बदलि दैत अछि।

- १६८. (A) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक प्रेम-दृष्टि रोमानी सरलतासँ अलग अछि।
- १६९. (C) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। ई द्वन्द्व कथा केँ मार्मिक बनबैत अछि।
- १७०. (A) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमल एहि टकरावकेँ आधुनिक कथा-ऊर्जा बनबैत छथि।
- १७१. (B) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अपूर्णता संवादकेँ यथार्थ आ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
- १७२. (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा दोषकेँ केवल निजी कमजोरी नहि मानैत अछि।
- १७३. (B) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कठोर यथार्थमे संवेदना पूरा मरैत नहि।
- १७४. (D) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। स्त्री-पात्रक असुरक्षा कथा केँ सामाजिक आलोचनाक रूप दैत अछि।
- १७५. (D) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। कथा पुरुषक प्रभुत्वक संग ओकर विकृत आ अकेल पक्ष सेहो देखबैत अछि।
- १७६. (A) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। चुप्पी सेहो सामाजिक अपराधक हिस्सा बनि सकैत अछि।
- १७७. (C) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। स्मृति पात्रक मन आ कथाक अर्थ बदलि दैत अछि।
- १७८. (D) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। राजकमलक कथा निर्णायक क्षणक तीव्रता पकड़ैत अछि।
- १७९. (C) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। अन्तिम प्रभाव राजकमलक कथाक स्मरणीयता बढ़बैत अछि।
- १८०. (D) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ** — एहि संकेतसँ आरम्भिक कथा-समूहक आधुनिक स्वर खुलैत अछि। एहि स्वरकेँ पकड़लासँ आरम्भिक कथा-समूहक अध्ययन सार्थक होइत अछि।
- १८१. (D) कथा कहनिहार सब बातमे खुलि कऽ फैसला नहि दैत** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। दूरी पाठककेँ स्वयं अर्थ बनबयक अवसर दैत अछि।
- १८२. (A) एकहि पात्रमे करुणा आ दोष दुनू** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक पात्र मानवीय जटिलता संग उपस्थित होइत अछि।
- १८३. (B) सही-गलतक सीमा सरल नहि रहब** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आधुनिक कथा कठोर निर्णायक जगह जटिल स्थिति सामने रखैत अछि।
- १८४. (D) साधारण प्रसंग सँ असाधारण अर्थ** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। छोट घटना समाजक पैघ दरार खोलि सकैत अछि।
- १८५. (D) इच्छा, भय, अभाव आ समाजक दबावक संगम** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। तनाव कथा केँ जीवित आ स्मरणीय बनबैत अछि।
- १८६. (B) बिना मार-काटो अपमान, चुप्पी वा नियंत्रणक चोट** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। हिंसा केवल शारीरिक नहि, सामाजिक आ मानसिको होइत अछि।
- १८७. (A) रोजी-रोटीक प्रश्न मनुष्यक आत्मा धरि असर करैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकेँ पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। आर्थिक दबाव कथा मे सम्बन्ध आ नैतिकता बदलि दैत अछि।

- १८८. (C) प्रेम समाज, देह, वर्ग आ भयक बीच घायल होइत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक प्रेम-दृष्टि रोमानी सरलतासँ अलग अछि।
- १८९. (D) पात्र बाहर निकलय चाहैत अछि मुदा जकड़न बचल रहैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। ई द्वन्द्व कथा कें मार्मिक बनबैत अछि।
- १९०. (C) निजी चाह आ सामूहिक नियमक टकराव** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमल एहि टकरावकें आधुनिक कथा-ऊर्जा बनबैत छथि।
- १९१. (A) पात्र सभ किछु कहि नहि पबैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अपूर्णता संवादकें यथार्थ आ मनोवैज्ञानिक बनबैत अछि।
- १९२. (D) व्यक्ति दोषी अछि, मुदा ओकरा बनयबामे समाजक भूमिका सेहो** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा दोषकें केवल निजी कमजोरी नहि मानैत अछि।
- १९३. (D) अंधकारक बीचो मनुष्यता बचबाक सम्भावना** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कठोर यथार्थमे संवेदना पूरा मरैत नहि।
- १९४. (B) घर, समाज आ बाजार तीनू ठाम जोखिम** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। स्त्री-पात्रक असुरक्षा कथा कें सामाजिक आलोचनाक रूप दैत अछि।
- १९५. (A) पुरुष पात्रो सामाजिक दबाव, इच्छा आ विफलतासँ टूटैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। कथा पुरुषक प्रभुत्वक संग ओकर विकृत आ अकेल पक्ष सेहो देखबैत अछि।
- १९६. (C) अन्याय देखैत लोक चुप रहैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। चुप्पी सेहो सामाजिक अपराधक हिस्सा बनि सकैत अछि।
- १९७. (D) बीतल समय वर्तमान कथ्यक भीतर सक्रिय** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। स्मृति पात्रक मन आ कथाक अर्थ बदलि दैत अछि।
- १९८. (A) छोट चुनाव पात्रक पूरा जीवन अर्थवान करैत अछि** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। राजकमलक कथा निर्णायक क्षणक तीव्रता पकड़ैत अछि।
- १९९. (A) कथा खत्म भेलाक बाद रहि जाएवला बेचैन भाव** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। अन्तिम प्रभाव राजकमलक कथाक स्मरणीयता बढ़बैत अछि।
- १०००. (C) आधुनिक मनुष्यक टूटन, विद्रोह, देह-समाज आ यथार्थ** — सही कथन ओहि अर्थकें पकड़ैत अछि जे कृति-पाठमे उपयोगी अछि। एहि स्वरकें पकड़लासँ आरम्भिक कथा-समूहक अध्ययन सार्थक होइत अछि।

अध्याय ३ : मैथिली सर्वनाम आ क्रिया क्विज | Videha QUIZ

0

१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “राम विद्यालय गेल। ओ पढ़ैत अछि।”
(A) ओ
(B) गेल
(C) पढ़ैत
(D) विद्यालय
२. “सीता” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?
(A) सर्वनाम
(B) क्रिया
(C) विशेषण
(D) अव्यय
३. “हमर” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?
(A) सर्वनाम
(B) संज्ञा
(C) क्रिया
(D) समुच्चयबोधक
४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्हू।
(A) हमरा
(B) पोथी
(C) बाहर
(D) दुआर
५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?
(A) संज्ञाक दोहराव घटायब
(B) केवल रंग बतायब
(C) केवल ध्वनि बनायब
(D) गिनती करायब
६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?
(A) घर
(B) हम
(C) ओ
(D) कियो
७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?
(A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
(B) क्रियाक जोड़ी
(C) विशेषणक जोड़ी
(D) संख्या-वाचक जोड़ी
८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?
(A) तीनू सर्वनाम अछि
(B) तीनू क्रिया अछि
(C) तीनू विशेषण अछि
(D) तीनू अव्यय अछि

९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

१०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

११. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “सीता पोथी आनलनि। ओ पढ़ि रहल छथि।”

- (A) ओ
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

१२. “पोथी” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

१३. “जे” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

१४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्हू।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

१५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

१६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

१७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

१८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

१९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

२०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

२१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “बालक खेलैत छल। ओ थाकि गेल।”

- (A) ओ
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

२२. “सीता” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

२३. “से” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

२४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्ह।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

२५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

२६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

२७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

२८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

२९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

३०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

३१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “गुरुजी एलाह। ओ पढ़ौलनि।”

- (A) ओ
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

३२. “पोथी” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

३३. “हमर” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपे की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

३४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्ह।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

३५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

३६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

३७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

३८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

३९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

४०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

४१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “हम पोथी पढ़ैत छी।”

- (A) हम
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

४२. “सीता” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

४३. “जे” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

४४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्ह।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

४५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

४६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

४७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

४८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

४९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

५०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

५१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “अहाँ गाम जाइ छी।”

- (A) अहाँ
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

५२. “पोथी” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

५३. “से” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

५४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्हू।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

५५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

५६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

५७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

५८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

५९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

६०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

६१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “ई कलम नीक अछि।”

- (A) ई
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

६२. “सीता” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

६३. “हमर” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

६४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्ह।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

६५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

६६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

६७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

६८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

६९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

७०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

७१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “ओ गाछ आमक अछि।”

- (A) ओ
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

७२. “पोथी” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

७३. “जे” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपे की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

७४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्ह।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

७५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

७६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

७७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

७८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

७९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

८०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

८१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “कियो दुआर पर ठाढ़ अछि।”

- (A) कियो
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

८२. “सीता” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

८३. “से” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

८४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्हू।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

८५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

८६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

८७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

८८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

८९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

९०. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

९१. एहि वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि? “के एतय आयल?”

- (A) के
- (B) गेल
- (C) पढ़ैत
- (D) विद्यालय

९२. “पोथी” जकाँ संज्ञाक ठाम पर जे शब्द प्रयोग होइत अछि, ओकरा की कहल जाइत अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) क्रिया
- (C) विशेषण
- (D) अव्यय

९३. “हमर” शब्द व्याकरणमे मुख्य रूपेँ की अछि?

- (A) सर्वनाम
- (B) संज्ञा
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चयबोधक

९४. वाक्य “हमरा जल चाही।” मे सर्वनाम चिन्हू।

- (A) हमरा
- (B) पोथी
- (C) बाहर
- (D) दुआर

९५. सर्वनामक मुख्य काज की अछि?

- (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- (B) केवल रंग बतायब
- (C) केवल ध्वनि बनायब
- (D) गिनती करायब

९६. कोन शब्द सर्वनाम नहि अछि?

- (A) घर
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) कियो

९७. “जकर आएत, तकर देखत” मे “जकर” आ “तकर” कोन प्रकारक शब्दक जोड़ी अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- (B) क्रियाक जोड़ी
- (C) विशेषणक जोड़ी
- (D) संख्या-वाचक जोड़ी

९८. “हम, अहाँ, ओ” एहि तीनू शब्दमे समानता की अछि?

- (A) तीनू सर्वनाम अछि
- (B) तीनू क्रिया अछि
- (C) तीनू विशेषण अछि
- (D) तीनू अव्यय अछि

९९. संज्ञा आ सर्वनामक सम्बन्ध केहन अछि?

- (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- (B) संज्ञा सदिखन क्रिया होइत अछि
- (C) सर्वनाम केवल संख्या होइत अछि
- (D) दुनू एके अर्थक क्रिया अछि

१००. “ओ किसान खेत जोतैत अछि।” एहि वाक्यमे “ओ” ककरा सूचित करैत अछि?

- (A) किसानकेँ
- (B) खेतकेँ
- (C) जोतबाकेँ
- (D) अछि केँ

1

१०१. “हम” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) उत्तम पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१०२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१०३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१०४. “अहाँ पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१०५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१०६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१०७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१०८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१०९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

११०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१११. “ओ” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) अन्य पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

११२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

११३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

११४. “हमसभ पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

११५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

११६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

११७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

११८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

११९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१२०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१२१. “तूँ” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) मध्यम पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१२२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१२३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१२४. “ओ लोकनि पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१२५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१२६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१२७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१२८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१२९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१३०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१३१. “हम” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) उत्तम पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१३२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१३३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१३४. “अहाँ पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१३५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१३६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१३७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१३८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१३९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१४०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१४१. “ओ” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) अन्य पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१४२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१४३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१४४. “हमसभ पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१४५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१४६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१४७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१४८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१४९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१५०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१५१. “तूँ” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) मध्यम पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१५२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१५३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१५४. “ओ लोकनि पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१५५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१५६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१५७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१५८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१५९. “ओ आबि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१६०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१६१. “हम” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) उत्तम पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१६२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१६३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१६४. “अहाँ पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१६५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१६६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१६७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१६८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१६९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१७०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१७१. “ओ” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) अन्य पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१७२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१७३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१७४. “हमसभ पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१७५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१७६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१७७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१७८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१७९. “ओ आबि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१८०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१८१. “तूँ” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) मध्यम पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१८२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१८३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१८४. “ओ लोकनि पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१८५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१८६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१८७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१८८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१८९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

१९०. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

१९१. “हम” कोन पुरुषक सर्वनाम अछि?

- (A) उत्तम पुरुष
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (D) प्रश्नवाचक सर्वनाम

१९२. सम्मान सहित सम्बोधन लेल उपयुक्त सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) तूँ
- (C) कियो
- (D) ई

१९३. “हमसभ” मे “सभ” जोड़लासँ की भाव बढ़ैत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भूतकाल
- (D) क्रिया

१९४. “अहाँ पढ़ैत अछि” मे यदि आदर बढ़ेबाक हो, त क्रिया-सूचक रूपमे कोन प्रवृत्ति चाही?

- (A) आदर-सूचक क्रियारूप
- (B) नकार हटायब
- (C) संज्ञा हटायब
- (D) विशेषण जोड़ब

१९५. “तूँ”क आदरसूचक विकल्प कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) हम
- (C) ओ
- (D) किछु

१९६. “ओ लोकनि” कोन भाव व्यक्त करैत अछि?

- (A) बहुवचन वा आदर
- (B) सामान्य नकार
- (C) भविष्य काल
- (D) केवल प्रश्न

१९७. “हमरा” शब्द “हम”क कोन रूप अछि?

- (A) कारक/ओरछायल रूप
- (B) विशेषण
- (C) क्रिया
- (D) समुच्चय

१९८. “अहाँ कतय जाइ छी?” वाक्यमे सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँ
- (B) कतय
- (C) जाइ
- (D) छी

१९९. “ओ आवि रहल छथि” मे “ओ”क संग “छथि” किएक आयल?

- (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
- (B) वाक्य नकारात्मक अछि
- (C) वस्तु निर्जीव अछि
- (D) संख्या एक अछि

२००. “हम” आ “अहाँ” मे भेद की अछि?

- (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
- (B) दुनू वस्तुक नाम
- (C) दुनू भूतकाल
- (D) दुनू नकार

२०१. “हम” सर्वनामक सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) हमर
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२०२. निजवाचक सर्वनामक नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२०३. वाक्य “अहाँ घर सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँ
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२०४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२०५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२०६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२०७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२०८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२०९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुके रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२१०. “निज” शब्दके प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२११. “अहाँ” सर्वनामके सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२१२. निजवाचक सर्वनामके नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२१३. वाक्य “ई पात सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) एकर
- (B) ई
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२१४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२१५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२१६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२१७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२१८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२१९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुक रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२२०. “निज” शब्दक प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२२१. “ई” सर्वनामक सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) एकर
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२२२. निजवाचक सर्वनामक नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२२३. वाक्य “ओ लोकनि काज सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) हिनक
- (B) ओ लोकनि
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२२४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२२५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२२६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२२७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२२८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२२९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुक रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२३०. “निज” शब्दक प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२३१. “ओ लोकनि” सर्वनामक सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) हिनक
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२३२. निजवाचक सर्वनामक नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२३३. वाक्य “हम पोथी सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) हमर
- (B) हम
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२३४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२३५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२३६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२३७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२३८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२३९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुक रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२४०. “निज” शब्दक प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२४१. “हम” सर्वनामक सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) हमर
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२४२. निजवाचक सर्वनामक नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२४३. वाक्य “अहाँ घर सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँ
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२४४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२४५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२४६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२४७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२४८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२४९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुके रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२५०. “निज” शब्दके प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२५१. “अहाँ” सर्वनामके सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२५२. निजवाचक सर्वनामके नीके उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२५३. वाक्य “ई पात सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) एकर
- (B) ई
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२५४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”के अर्थ की अछि?

- (A) निजके
- (B) परके
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२५५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामके
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँके
- (D) हमर

२५६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरके, “अपन” निजके
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२५७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२५८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२५९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुक रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२६०. “निज” शब्दक प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२६१. “ई” सर्वनामक सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) एकर
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२६२. निजवाचक सर्वनामक नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२६३. वाक्य “ओ लोकनि काज सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) हिनक
- (B) ओ लोकनि
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२६४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२६५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२६६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२६७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२६८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२६९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तु रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२७०. “निज” शब्दक प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२७१. “ओ लोकनि” सर्वनामक सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) हिनक
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२७२. निजवाचक सर्वनामक नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२७३. वाक्य “हम पोथी सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) हमर
- (B) हम
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२७४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२७५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२७६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२७७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२७८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२७९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुक रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२८०. “निज” शब्दक प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२८१. “हम” सर्वनामक सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) हमर
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२८२. निजवाचक सर्वनामक नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२८३. वाक्य “अहाँ घर सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँ
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२८४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२८५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२८६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२८७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२८८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२८९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुके रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

२९०. “निज” शब्दके प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

२९१. “अहाँ” सर्वनामके सम्बन्धसूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) कियो
- (C) के
- (D) नहि

२९२. निजवाचक सर्वनामके नीक उदाहरण कोन अछि?

- (A) अपन
- (B) के
- (C) कियो
- (D) ओतय

२९३. वाक्य “ई पात सँ प्रेम करैत अछि।” मे सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम कोन अछि?

- (A) एकर
- (B) ई
- (C) प्रेम
- (D) करैत अछि

२९४. “अपन पोथी अपने राखू।” एहिमे “अपन”क अर्थ की अछि?

- (A) निजक
- (B) परक
- (C) अनजान
- (D) केवल प्रश्न

२९५. “राम अपन घर गेल” मे “अपन” ककर घर बतबैत अछि?

- (A) रामक
- (B) ककरो अज्ञात
- (C) अहाँक
- (D) हमर

२९६. “ओकर” आ “अपन” मे मुख्य भेद की अछि?

- (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
- (B) दुनू प्रश्नवाचक
- (C) दुनू क्रिया
- (D) दुनू नकार

२९७. “अहाँक” शब्द की देखबैत अछि?

- (A) सम्बन्ध/अधिकार
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) आज्ञा

२९८. “हमर”क बहुवचन/समूह भावमे कोन रूप सहज अछि?

- (A) हमरसभक
- (B) के
- (C) किछु
- (D) ओहि

२९९. “अपने” शब्द कोन प्रसंगमे आदर वा जोर देबैत अछि?

- (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
- (B) केवल वस्तुक रंग
- (C) भूतकाल
- (D) नकार

३००. “निज” शब्दक प्रयोग कोन भावमे होइत अछि?

- (A) स्वयं/अपन
- (B) दूर स्थान
- (C) प्रश्न
- (D) नकार

3

३०१. “कियो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३०२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३०३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३०४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करू: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३०५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३०६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३०७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३०८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३०९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३१०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३११. “ककरो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३१२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३१३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३१४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करू: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३१५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३१६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३१७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३१८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३१९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३२०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३२१. “कियो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३२२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३२३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३२४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करू: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३२५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३२६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३२७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३२८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३२९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३३०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३३१. “ककरो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३३२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३३३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३३४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करू: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३३५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३३६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३३७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३३८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३३९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३४०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३४१. “कियो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३४२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३४३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३४४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करु: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३४५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३४६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३४७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३४८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३४९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३५०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३५१. “ककरो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३५२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३५३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३५४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करू: “जतय मेहनत करत, ____ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३५५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३५६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३५७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३५८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३५९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३६०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३६१. “कियो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३६२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३६३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३६४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करु: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३६५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३६६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३६७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३६८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३६९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३७०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३७१. “ककरो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३७२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३७३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३७४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करू: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३७५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३७६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३७७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३७८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३७९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३८०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३८१. “कियो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३८२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३८३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३८४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करु: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३८५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३८६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३८७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३८८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३८९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

३९०. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

३९१. “ककरो” कोन प्रकारक सर्वनाम अछि?

- (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (B) निजवाचक सर्वनाम
- (C) आदरसूचक सर्वनाम
- (D) क्रिया

३९२. व्यक्ति सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम उपयुक्त अछि?

- (A) के
- (B) की
- (C) किछु
- (D) अपन

३९३. वस्तु वा बात सम्बन्धी प्रश्न लेल कोन सर्वनाम सामान्य अछि?

- (A) की
- (B) के
- (C) हम
- (D) अहाँ

३९४. सम्बन्धसूचक जोड़ी पूरा करू: “जतय मेहनत करत, ___ फल पाओत।”

- (A) ततय
- (B) कियो
- (C) हम
- (D) किछु

३९५. “ककर पोथी अछि?” मे “ककर” की पूछैत अछि?

- (A) अधिकार/सम्बन्ध
- (B) काल
- (C) नकार
- (D) क्रियाक गति

३९६. “कोन गाछ आमक अछि?” मे “कोन”क काज की अछि?

- (A) चयन/पहिचान पूछब
- (B) काज बतायब
- (C) नकार करब
- (D) आज्ञा देब

३९७. “कियो आयल छल” मे “कियो”क भाव की अछि?

- (A) व्यक्ति निश्चित नहि
- (B) व्यक्ति स्पष्ट नाम सहित
- (C) वाक्य आज्ञा अछि
- (D) वाक्य पूर्ण निषेध अछि

३९८. “किछु खाउ” मे “किछु” की सूचित करैत अछि?

- (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
- (B) निश्चित व्यक्तिक नाम
- (C) समय
- (D) स्थान

३९९. “जे पढ़त, से बुझत” मे “जे”क भूमिका की अछि?

- (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
- (B) नकार
- (C) सहायक क्रिया
- (D) विशेषण

४००. “ताहि” प्रायः कोन शब्दक उत्तर-रूप अछि?

- (A) जाहि
- (B) के
- (C) कियो
- (D) अपन

४०१. “हम”क “कैं” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा कैं
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४०२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा कैं
- (C) तोहर
- (D) के

४०३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकैं
- (C) नहि
- (D) किछु

४०४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४०५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४०६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्त्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४०७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा कैं पोथी दिअ।
- (B) तोहर कैं पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४०८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४०९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४१०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४११. “हम”क “कै” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा कै
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४१२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा कै
- (C) तोहर
- (D) के

४१३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकै
- (C) नहि
- (D) किछु

४१४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४१५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४१६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४१७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
- (B) तोहर केँ पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४१८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४१९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४२०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४२१. “हम”क “केँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा केँ
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४२२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा केँ
- (C) तोहर
- (D) के

४२३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकेँ
- (C) नहि
- (D) किछु

४२४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४२५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४२६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४२७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
- (B) तोहर केँ पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४२८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४२९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४३०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४३१. “हम”क “केँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा केँ
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४३२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा केँ
- (C) तोहर
- (D) के

४३३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकेँ
- (C) नहि
- (D) किछु

४३४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४३५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४३६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४३७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
- (B) तोहर केँ पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४३८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४३९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४४०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४४१. “हम”क “कैं” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा कैं
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४४२. “तूँ”क “सैं” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सैं
- (B) तोरा कैं
- (C) तोहर
- (D) के

४४३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकैं
- (C) नहि
- (D) किछु

४४४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४४५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४४६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्त्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४४७. सही प्रयोग चिन्हू।

- (A) तोरा कैं पोथी दिअ।
- (B) तोहर कैं पोथी दिअ।
- (C) तूँ सैंक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४४८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४४९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४५०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४५१. “हम”क “कै” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा कै
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४५२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा कै
- (C) तोहर
- (D) के

४५३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकै
- (C) नहि
- (D) किछु

४५४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४५५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४५६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४५७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
- (B) तोहर केँ पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४५८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४५९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४६०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४६१. “हम”क “केँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा केँ
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४६२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा केँ
- (C) तोहर
- (D) के

४६३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकेँ
- (C) नहि
- (D) किछु

४६४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४६५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४६६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४६७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
- (B) तोहर केँ पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४६८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४६९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४७०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४७१. “हम”क “केँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा केँ
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४७२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा केँ
- (C) तोहर
- (D) के

४७३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकेँ
- (C) नहि
- (D) किछु

४७४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४७५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४७६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४७७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
- (B) तोहर केँ पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४७८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४७९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४८०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४८१. “हम”क “कैं” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा कैं
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४८२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा कैं
- (C) तोहर
- (D) के

४८३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकैं
- (C) नहि
- (D) किछु

४८४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४८५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४८६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्त्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४८७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा कैं पोथी दिअ।
- (B) तोहर कैं पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४८८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४८९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

४९०. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

४९१. “हम”क “कै” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) हमरा कै
- (B) हमर
- (C) हम
- (D) कियो

४९२. “तूँ”क “सँ” संग उचित रूप कोन अछि?

- (A) तोरा सँ
- (B) तोरा कै
- (C) तोहर
- (D) के

४९३. “अहाँ”क सम्बन्ध-सूचक रूप कोन अछि?

- (A) अहाँक
- (B) अहाँकै
- (C) नहि
- (D) किछु

४९४. आदर देखयबाक लेल कोन जोड़ी नीक अछि?

- (A) अहाँ — छी
- (B) तूँ — अछि
- (C) हम — छथि
- (D) ओ — छी

४९५. “ओ लोकनि” मे “लोकनि”क काज की अछि?

- (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
- (B) नकार सूचित करब
- (C) वस्तुक रंग बतायब
- (D) भूतकाल बनायब

४९६. “हमरा लेल जल आनू।” मे “हमरा लेल” की बतबैत अछि?

- (A) लाभार्थी/जकरा लेल
- (B) कर्ता
- (C) रंग
- (D) काल

४९७. सही प्रयोग चिन्ह।

- (A) तोरा के पोथी दिअ।
- (B) तोहर के पोथी दिअ।
- (C) तूँ सँक पोथी
- (D) के पोथी छी।

४९८. “एकरा” कोन सर्वनामक ओरछायल रूप अछि?

- (A) ई
- (B) ओ
- (C) हम
- (D) अहाँ

४९९. “ओकरा” कोन सर्वनामक कारक रूप अछि?

- (A) ओ
- (B) ई
- (C) हम
- (D) के

५००. “सभ” जोड़लासँ सर्वनाममे प्रायः कोन अर्थ होइत अछि?

- (A) बहुवचन
- (B) नकार
- (C) भविष्य
- (D) कर्मवाच्य

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

- १. (A) ओ
- २. (A) सर्वनाम
- ३. (A) सर्वनाम
- ४. (A) हमरा
- ५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- ६. (A) घर
- ७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
- ८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
- ९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
- १०. (A) किसानकेँ
- ११. (A) ओ
- १२. (A) सर्वनाम
- १३. (A) सर्वनाम
- १४. (A) हमरा
- १५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
- १६. (A) घर
- १७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी

१८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
१९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
२०. (A) किसानकेँ
२१. (A) ओ
२२. (A) सर्वनाम
२३. (A) सर्वनाम
२४. (A) हमरा
२५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
२६. (A) घर
२७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
२८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
२९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
३०. (A) किसानकेँ
३१. (A) ओ
३२. (A) सर्वनाम
३३. (A) सर्वनाम
३४. (A) हमरा
३५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
३६. (A) घर
३७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
३८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
३९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
४०. (A) किसानकेँ
४१. (A) हम
४२. (A) सर्वनाम
४३. (A) सर्वनाम
४४. (A) हमरा
४५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
४६. (A) घर
४७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
४८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
४९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
५०. (A) किसानकेँ
५१. (A) अहाँ
५२. (A) सर्वनाम
५३. (A) सर्वनाम

५४. (A) हमरा
५५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
५६. (A) घर
५७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
५८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
५९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
६०. (A) किसानकेँ
६१. (A) ई
६२. (A) सर्वनाम
६३. (A) सर्वनाम
६४. (A) हमरा
६५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
६६. (A) घर
६७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
६८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
६९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
७०. (A) किसानकेँ
७१. (A) ओ
७२. (A) सर्वनाम
७३. (A) सर्वनाम
७४. (A) हमरा
७५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
७६. (A) घर
७७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
७८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
७९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
८०. (A) किसानकेँ
८१. (A) कियो
८२. (A) सर्वनाम
८३. (A) सर्वनाम
८४. (A) हमरा
८५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
८६. (A) घर
८७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
८८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
८९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि

९०. (A) किसानकें
९१. (A) के
९२. (A) सर्वनाम
९३. (A) सर्वनाम
९४. (A) हमरा
९५. (A) संज्ञाक दोहराव घटायब
९६. (A) घर
९७. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनामक जोड़ी
९८. (A) तीनू सर्वनाम अछि
९९. (A) सर्वनाम संज्ञाक ठाम पर आबि सकैत अछि
१००. (A) किसानकें
१०१. (A) उत्तम पुरुष
१०२. (A) अहाँ
१०३. (A) बहुवचन
१०४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१०५. (A) अहाँ
१०६. (A) बहुवचन वा आदर
१०७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१०८. (A) अहाँ
१०९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
११०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१११. (A) अन्य पुरुष
११२. (A) अहाँ
११३. (A) बहुवचन
११४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
११५. (A) अहाँ
११६. (A) बहुवचन वा आदर
११७. (A) कारक/ओरछायल रूप
११८. (A) अहाँ
११९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१२०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१२१. (A) मध्यम पुरुष
१२२. (A) अहाँ
१२३. (A) बहुवचन
१२४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१२५. (A) अहाँ

१२६. (A) बहुवचन वा आदर
१२७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१२८. (A) अहाँ
१२९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१३०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१३१. (A) उत्तम पुरुष
१३२. (A) अहाँ
१३३. (A) बहुवचन
१३४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१३५. (A) अहाँ
१३६. (A) बहुवचन वा आदर
१३७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१३८. (A) अहाँ
१३९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१४०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१४१. (A) अन्य पुरुष
१४२. (A) अहाँ
१४३. (A) बहुवचन
१४४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१४५. (A) अहाँ
१४६. (A) बहुवचन वा आदर
१४७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१४८. (A) अहाँ
१४९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१५०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१५१. (A) मध्यम पुरुष
१५२. (A) अहाँ
१५३. (A) बहुवचन
१५४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१५५. (A) अहाँ
१५६. (A) बहुवचन वा आदर
१५७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१५८. (A) अहाँ
१५९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१६०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१६१. (A) उत्तम पुरुष

१६२. (A) अहाँ
१६३. (A) बहुवचन
१६४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१६५. (A) अहाँ
१६६. (A) बहुवचन वा आदर
१६७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१६८. (A) अहाँ
१६९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१७०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१७१. (A) अन्य पुरुष
१७२. (A) अहाँ
१७३. (A) बहुवचन
१७४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१७५. (A) अहाँ
१७६. (A) बहुवचन वा आदर
१७७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१७८. (A) अहाँ
१७९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१८०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१८१. (A) मध्यम पुरुष
१८२. (A) अहाँ
१८३. (A) बहुवचन
१८४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१८५. (A) अहाँ
१८६. (A) बहुवचन वा आदर
१८७. (A) कारक/ओरछायल रूप
१८८. (A) अहाँ
१८९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
१९०. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
१९१. (A) उत्तम पुरुष
१९२. (A) अहाँ
१९३. (A) बहुवचन
१९४. (A) आदर-सूचक क्रियारूप
१९५. (A) अहाँ
१९६. (A) बहुवचन वा आदर
१९७. (A) कारक/ओरछायल रूप

१९८. (A) अहाँ
१९९. (A) आदर-सूचक प्रयोग लेल
२००. (A) “हम” बोलयवला, “अहाँ” सम्बोधित व्यक्ति
२०१. (A) हमर
२०२. (A) अपन
२०३. (A) अहाँक
२०४. (A) निजक
२०५. (A) रामक
२०६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२०७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२०८. (A) हमरसभक
२०९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२१०. (A) स्वयं/अपन
२११. (A) अहाँक
२१२. (A) अपन
२१३. (A) एकर
२१४. (A) निजक
२१५. (A) रामक
२१६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२१७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२१८. (A) हमरसभक
२१९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२२०. (A) स्वयं/अपन
२२१. (A) एकर
२२२. (A) अपन
२२३. (A) हिनक
२२४. (A) निजक
२२५. (A) रामक
२२६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२२७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२२८. (A) हमरसभक
२२९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२३०. (A) स्वयं/अपन
२३१. (A) हिनक
२३२. (A) अपन
२३३. (A) हमर

२३४. (A) निजक
२३५. (A) रामक
२३६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२३७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२३८. (A) हमरसभक
२३९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२४०. (A) स्वयं/अपन
२४१. (A) हमर
२४२. (A) अपन
२४३. (A) अहाँक
२४४. (A) निजक
२४५. (A) रामक
२४६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२४७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२४८. (A) हमरसभक
२४९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२५०. (A) स्वयं/अपन
२५१. (A) अहाँक
२५२. (A) अपन
२५३. (A) एकर
२५४. (A) निजक
२५५. (A) रामक
२५६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२५७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२५८. (A) हमरसभक
२५९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२६०. (A) स्वयं/अपन
२६१. (A) एकर
२६२. (A) अपन
२६३. (A) हिनक
२६४. (A) निजक
२६५. (A) रामक
२६६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२६७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२६८. (A) हमरसभक
२६९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर

२७०. (A) स्वयं/अपन
२७१. (A) हिनक
२७२. (A) अपन
२७३. (A) हमर
२७४. (A) निजक
२७५. (A) रामक
२७६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२७७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२७८. (A) हमरसभक
२७९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२८०. (A) स्वयं/अपन
२८१. (A) हमर
२८२. (A) अपन
२८३. (A) अहाँक
२८४. (A) निजक
२८५. (A) रामक
२८६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२८७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२८८. (A) हमरसभक
२८९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
२९०. (A) स्वयं/अपन
२९१. (A) अहाँक
२९२. (A) अपन
२९३. (A) एकर
२९४. (A) निजक
२९५. (A) रामक
२९६. (A) “ओकर” दोसरक, “अपन” निजक
२९७. (A) सम्बन्ध/अधिकार
२९८. (A) हमरसभक
२९९. (A) व्यक्ति स्वयं पर जोर
३००. (A) स्वयं/अपन
३०१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३०२. (A) के
३०३. (A) की
३०४. (A) ततय
३०५. (A) अधिकार/सम्बन्ध

३०६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३०७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३०८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३०९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३१०. (A) जाहि
३११. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३१२. (A) के
३१३. (A) की
३१४. (A) ततय
३१५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३१६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३१७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३१८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३१९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३२०. (A) जाहि
३२१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३२२. (A) के
३२३. (A) की
३२४. (A) ततय
३२५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३२६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३२७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३२८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३२९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३३०. (A) जाहि
३३१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३३२. (A) के
३३३. (A) की
३३४. (A) ततय
३३५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३३६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३३७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३३८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३३९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३४०. (A) जाहि
३४१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

३४२. (A) के
३४३. (A) की
३४४. (A) ततय
३४५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३४६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३४७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३४८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३४९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३५०. (A) जाहि
३५१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३५२. (A) के
३५३. (A) की
३५४. (A) ततय
३५५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३५६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३५७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३५८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३५९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३६०. (A) जाहि
३६१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३६२. (A) के
३६३. (A) की
३६४. (A) ततय
३६५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३६६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३६७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३६८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३६९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३७०. (A) जाहि
३७१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३७२. (A) के
३७३. (A) की
३७४. (A) ततय
३७५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३७६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३७७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि

३७८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३७९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३८०. (A) जाहि
३८१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३८२. (A) के
३८३. (A) की
३८४. (A) ततय
३८५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३८६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३८७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३८८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३८९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
३९०. (A) जाहि
३९१. (A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
३९२. (A) के
३९३. (A) की
३९४. (A) ततय
३९५. (A) अधिकार/सम्बन्ध
३९६. (A) चयन/पहिचान पूछब
३९७. (A) व्यक्ति निश्चित नहि
३९८. (A) अनिश्चित वस्तु/मात्रा
३९९. (A) सम्बन्धसूचक सर्वनाम
४००. (A) जाहि
४०१. (A) हमरा केँ
४०२. (A) तोरा सँ
४०३. (A) अहाँक
४०४. (A) अहाँ — छी
४०५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४०६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४०७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४०८. (A) ई
४०९. (A) ओ
४१०. (A) बहुवचन
४११. (A) हमरा केँ
४१२. (A) तोरा सँ
४१३. (A) अहाँक

४१४. (A) अहाँ — छी
४१५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४१६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४१७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४१८. (A) ई
४१९. (A) ओ
४२०. (A) बहुवचन
४२१. (A) हमरा केँ
४२२. (A) तोरा सँ
४२३. (A) अहाँक
४२४. (A) अहाँ — छी
४२५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४२६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४२७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४२८. (A) ई
४२९. (A) ओ
४३०. (A) बहुवचन
४३१. (A) हमरा केँ
४३२. (A) तोरा सँ
४३३. (A) अहाँक
४३४. (A) अहाँ — छी
४३५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४३६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४३७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४३८. (A) ई
४३९. (A) ओ
४४०. (A) बहुवचन
४४१. (A) हमरा केँ
४४२. (A) तोरा सँ
४४३. (A) अहाँक
४४४. (A) अहाँ — छी
४४५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४४६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४४७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४४८. (A) ई
४४९. (A) ओ

४५०. (A) बहुवचन
४५१. (A) हमरा केँ
४५२. (A) तोरा सँ
४५३. (A) अहाँक
४५४. (A) अहाँ — छी
४५५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४५६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४५७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४५८. (A) ई
४५९. (A) ओ
४६०. (A) बहुवचन
४६१. (A) हमरा केँ
४६२. (A) तोरा सँ
४६३. (A) अहाँक
४६४. (A) अहाँ — छी
४६५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४६६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४६७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४६८. (A) ई
४६९. (A) ओ
४७०. (A) बहुवचन
४७१. (A) हमरा केँ
४७२. (A) तोरा सँ
४७३. (A) अहाँक
४७४. (A) अहाँ — छी
४७५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब
४७६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल
४७७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।
४७८. (A) ई
४७९. (A) ओ
४८०. (A) बहुवचन
४८१. (A) हमरा केँ
४८२. (A) तोरा सँ
४८३. (A) अहाँक
४८४. (A) अहाँ — छी
४८५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब

४८६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल

४८७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।

४८८. (A) ई

४८९. (A) ओ

४९०. (A) बहुवचन

४९१. (A) हमरा केँ

४९२. (A) तोरा सँ

४९३. (A) अहाँक

४९४. (A) अहाँ — छी

४९५. (A) आदर/बहुवचन सूचित करब

४९६. (A) लाभार्थी/जकरा लेल

४९७. (A) तोरा केँ पोथी दिअ।

४९८. (A) ई

४९९. (A) ओ

५००. (A) बहुवचन